# राजस्थानी कहाणी सग्रह

( जागती जोत कहाणी अङ्क )

सम्पादक

श्री रामेश्वरदयाल श्रीमाली

प्रकाशक

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

# प्रकाशकीय—

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम रो प्रमुख उद्देश्य राजस्थानी मे नव-साहित्य सरजना न उत्साहित करणो है अर ई री सम्पूर्ति म हर साल नई नई पुस्तकां प्रकाशित करी जाय है। ई क्रम म सगम री तरफ सू विविध विधावा में कई महत्वपूर्ण पुस्तका प्रकाशित हुय चुकी है।

प्रस्तुत पुस्तक 'राजस्थानी कहाणी सग्रह' आपरै ढग री एक नई चीज है। राजस्थानी मे पुराणो वात साहित्य तो प्रचुर मात्रा मे प्राप्त है ही पण आधुनिक कहाणी रा क्रम भी म द कोनी। आज अनेक मानीता लेखक साहित्य रै ई अग री श्रीवृद्धि मे सलग्न है अर वा री साधना सू वतमान राजस्थानी कहाणी, भारत री दूजी भाषावा री कहाणी सू टक्कर लेय सक है।

'राजस्थानी कहाणी-सग्रह' मे नया अर पुराणा सगळा ही लेखका री चुनिन्दा रचनावा शामिल करणै रो सुन्दर प्रयास है अर इण भात ओ प्रकाशन सही अथ मे राजस्थानी भाषा रो प्रतिनिधि कहाणी-सग्रह कैयो जा सक है। साथै ही आ भी घण हरख री बात है कै ई सग्रह मे कई उदीयमान लेखक भी शामिल करया गया है।

आशा है, राजस्थानी साहित्य जगत मे इ प्रकाशन रो स्वागत हुसी।

धनञ्जय शर्मा
सहायक सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य सगम,
बीकानेर (राजस्थान)

सम्पादकीय—

## आज री कहाणी  एक सिंधूराग री धुन में

चोखी कहाणी रै बाबत औ आखर कैवणा घणो दोरो काम है कहाणी पढ़ र औ कैवणो तो घणो सोरो है'क किसी कहाणी चोखी है अर किसी चोखी कोनी, पण एक कहाणी क्यूं चोखी है, अर दूसरी क्यूं चोखी कोनी औ बतावणा टेढो काम है। बीजा बाता छोड ई देवा तो कहाणी काई है, इण री ई काई म मान जिसी एक परिभाखा कोनी।

कदई किणी एक भाव र क एक घटना रै सादै इकरगे चितराम रो नाम कहाणी गिणीजता, पण आ बात ई घणा रै मना मे पची कोनी। कारण ज्यू ज्यू कळ म बाधेपो होयो, मिनख सहरा मे रैवण लागा, उणा री निमळाइ नीठगी, सादगी खतम होयगी, कथनी अर करणी मे फरक आवण लागो, जद कहाणी मे एक रग'क एक भाव रैणो दोरो होया अर कहाणी रा भाव अर रग बधग्या वा निरीई आटदार हो र गुळगाठ जिसी पडगी इसी गुळगांठ, जिणरी एक ई गाठ मे ना ना जात रा, ना ना भांत रा, नाऴना रगा रा डोरा रवै। म्हारी दीठ मे इण सदी मे इसी ज गुळगांठ पडघोड मन री हालत रो नाम कहाणी बाजै।

लेखक रो म तस घणो कूळो अर सावचेत होवै। मिनख र साथ बीतण वाळो चोखी'क भूंडी किसी ई छोटी सू छोटी घटना जिण न साधारण मिनख देख ई कानी, अर देख ई लेवै तो साधारण मिनख र मन माथ जिणरो कोई असर को पड नी लेखक री सावचेत दीठ अर कूळो मन एक दम पकड लव। इसी पकडीजण वाळी घटना रो रगड मन रै कूळाव माथै टीस उपाव। इणीज टीस रा आधार बतावता थका जको लेखक जितरी बत्ती ईमानदारी बरत, जितरी बेरहमी सू टीस रा कारण बतावै बो इज पाठका र मन माथ ऊडो असर नाख अर एक उत्तम कहाणी रो जळम होव।

किणा जमानै मे कहाणी फकत् मन बिलमावण रो साधन इज गिणीजती ही। मन बिलमावण सारू औ जरूरी हो क उणमें रहस रोमाञ्च हुव। जिण नै पढ र काळजा री धडक बधै, रूगटा ऊभा होवै। मन बिलमावण सारू औ ई जरूरी हो क हरेक कहाणी म भूंडै री हार होवै भलै री जीत होव। कारण, सगळा ई मिनख किणी

न किणी मायना म धावा धाप न भला समभ अर हरेक भल री जात न क्षाव री जीत मान। इसी मन बिलभावणा कहाणा ठेट्इ मिनख न खुद न आपरी निजू पिछाण सू आघो राख्यो इसी कहाणिया मिनख न भोळप म घाल'र उणने राज री, समाज री अर भाग री भरोसो देरायो। तुगाया र व्रत कथावा र फळ ज्यू-ज्यू उणा रा दिन घर आया, भगवान सकल रा ई दिन घर आणजो' बखाणवा वाळी कहाणिया थोथे आदस, थोथी भावुकता अर त्याग कानी वळी, इण सू कहाणी खुद थोथी बण र रगी, अर इणरी पूछ ई फकत् मूढ मिनखा रे मन बिलभावणा तक रई। इसी आब हुवा मे साधारण मिनख री जोत दलितां र उद्धार, समाज र सुधार अर लोक मगल री बात कहाणी वाजती रई अर पाठक सतनारायण री कथा बाचं ज्यू भगति भाव सू इसी कहाणिया ई बाचता गया।

कहाणी जिसी विधा जिण मे मिनख आपर मन री गुबार सैं सू ज्यादा काढ सक, अर आपरै पीड री सही ठौड न खुल'र बता सक, मन माळिया बिणण री हु मे घणा दिना तक किया र सकती ही ? जल्दी सी ई नवा लिखारा कहाणी नै इण भागवती बधणा सू मुगत कराय वी। पण कहाणी र जको नवी साकळा लागी, व इधकी कोमी ही। कहाणी प्रतिक्रियावादी लबक रे हाथ लागी। इण लबका र कथा कारा कहाणी र मिदर म नैतिकता र ठिकाणे वासना री पूतळी थरपी। भागवती कारका सू ठीक ऊधा-पुर री होड मे पाप री जीत नीत री ठौड अनीत री जीत, मिनख र ऊच उठणे र सपना री ठौड नीच पडण रा चितराम माडणा सरू होया। कला अभि यकित अर भोग्योड जथारथ र नाम माथ लेखका इसी इसी बाता गढणी सुरू की क साहित साहित नीं हो र तोता मना री किस्सो बणग्यो। रूप री ठौड अपरूप पुनीजण लागो। इमा कहाणीकार काइ ठा किसो समाज देखता हा अर किसो समाज बणावणो चावता हा क अनीत र चितरामा रे अतिरेक री मण्डन अर भडवा वाळ ज्यू भोग रो बखाण इणा री कला रो कंद्र बणग्यो।

जो निगर्स दिना लगती ई आ इज हालत रवती तो कहाणी साहित र दायर सू बार नामर जावती पण धणा दिना तक आ हालत का रइ नी अर पाठक जल्दी ई रागी कथाकारा रे मसा री लिरवाडा इसी भोगी कहाणिया सू उकताय गया। माग ई लेखक ई समभण लागग्या'क स्त्री पुरसा र सम्ब धा र नाग चितरामा मे रमाय र कहाणी रै नाम माथै मिनखा न घणा दिन तक बगू का बणाया जा सकै नी।

असल में मिनख रै मरम अर विवेक न सबदित नी कर सक वा साहित साहित किया हो सक ? कारण रचना रो सवाद ई विवेक अर मरम र सवेदन री इसी स्थिति मे है जिण म कह्योडी हरेक बात मिनख न आपर अनुभो री बात लाग, आपर बार मे कह्योडी बात लागी इसी बात लाग जको उण र सारू अजाणी कोनी अभोगी कोनी अण सूघो गन्ध एकर भली आकरखित कर पण

उणरी म्राकरखण घणी जरू को रव नी, इण सारू कहाणी म निजता री ग ध हावणी जरूरी है। चोखी कहाणी री एक इज परिभाखा हो सक क एक'र पढ्या पछ वा म्राखी ऊमर भूलीज कोनी अर इसी कहाणी निज अनुभो नै घणो सवेदन सू लिखा निजता रै ग ध वाळा कहाणी ज हो सक।

इसी भावना जागी जद म्राज री कहाणी जलम लियो। म्राज री कहाणी मानवा चेतना रै पीड री हद लग जाय पूगी। म्राज रो लेखक ममता विहूणो हो र पात्रा नै देख अर उणा रै सामाजिक उलझाव, खुद री क परिवार री म्राकळ बाकळ हालत अर राजनीति री विसगत न जिण मे म्राज रा मानखा रव, भोग है, ग्यरै म्रक्खरा मे कँवे। इण वास्तै म्राज री कहाणी फकत कहाणी'ज कोनी, कहाणी र साग म्राज रे मिनखा हालाता अर जमार री खरी खरी ख्यात ई है। अ याव, अन्धविसवास अर सासण रै मुकाबला में एक इस जुद्ध री ख्यात, जिण न लेखक खुदाखुद लड भोग रह्यो है। इण राज-रोज रै महाभारत री ख्यात लिखण सारू म्राज रो लेखक सचेत हो र जमानै रै तीखै अर चिढ्योडै चैर री सिनाखत कर है—एक निधुराग रा धुन म।

—रामेश्वरदयाल श्रीमाली

सम्पादक

△

# विगत


| क्र. | रचना | | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| १ | सम्पादकीय | — | सम्पादक | — |
| २ | बिसनू री मां | — | डॉ० शान्ता भानावत | १ |
| ३ | उडतो धूड | — | श्री प्रेमचन्द्र गोस्वामी | ७ |
| ४ | सिणगारी | — | श्री नरसिंह राजपुरोहित | १२ |
| ५ | ब्यानण म मंघेरो | — | डॉ० मनोहर शर्मा | १७ |
| ६ | बाळू री भाकार | — | श्री धनराज चौधरी | २१ |
| ७ | चिलत | — | श्री मूलचन्द प्राणेश | २७ |
| ८ | पीड री सिवांत | — | श्री मोहनसिंह | ३२ |
| ९ | गुजारो | — | श्री मीठालाल खत्री | ३६ |
| १० | इयाही | — | श्री करणीदान बारहठ | ४१ |
| ११ | चार बिनी कहाणियां | — | श्री उदयवीर शर्मा | ४६ |
| १२ | ओसाण | — | श्री बिश्वम्भर प्रसाद शर्मा | ४८ |
| १३ | भीड भर सपना | — | श्री बिनोद सोमाणी 'हंस' | ४९ |
| १४ | ओळखाण | — | श्री मुरलीधर शर्मा 'विमल' | ५२ |
| १५ | भोर कदे ना होय | — | श्री रामनिवास शर्मा | ६३ |
| १६ | एक इंच हंसी | — | श्री रामनिवास शर्मा मयंक | ६६ |
| १७ | कोट | — | श्री सांवर दइया | ६८ |
| १८ | भोळाराम री फारगती | — | श्री मंजु नरसिंह शेखावत | ७४ |
| १९ | बुधवार | — | श्री मुबारक खान आजाद | ७८ |
| २० | अेक अणमळभी डोर | — | श्री अमोलकचन्द जांगिड | ८३ |
| २१ | ईजतदार | — | श्री रामेश्वरदयाल श्रीमाली | ८६ |

# किसनूं री मा

किसनू री मा तिबारी मे बैठी बठी रटयों कातरी ही वींरो मन आज अणजाण खुसी सू भरयोड़ो हो अर सरीर मे पण उमाव हो। वा मदरे मदरे स्वर मे गाय री ही—

रैंटयो तो है रग रगीलो हाँ रग रगीलो
ताणियाँ है लाल गुलाल गांधीजी दरसण दे गया।

वींरो गीत हाल पूरो कोनी हुयो हो के उणीज वगत घीसू हाथां माय एक अखबार री पानो लेयर आयो अर किसनू री माँ सू केवण लाग्यो—देखो माभासा! आज इ अखबार में किसनू दादा रो नाम छपियो है अर सागै फोटू भी।

किसनू री मा घीसू रै हाथ सू अखबार लेय'र फोटू देखण लागी। बेटा रो मुळकतो मूडो देख एक र तो माँ री छाती भरीजगी वींरो कठ रु धग्यो अर आंख्या मांय सू टप टप आंसू पड़वा लागा।

माभासा न गळगळा देख घीसू बोलियो—माभासा! आ तो खुसी री बात है कै आपण किसनू दादा री समाज सेवा अर प्रेरणादायी साहित्य सिरजणा सू प्रभावित हुय'र समाज उणारो अभिनदन करयो जिण सू वांरो फोटू अखबार में छपियो है। इण खुसी री बात माय था इतरी काची क्यू लाय'रया हो।

घीसू र मूडे सू समाज सेवा अर पोथिया लिखण री बात सुण माभासा उणसू केवण लाग्या—बेटा! लिखण-पढण री आदत तो वींरी टाबरपण सू इज ही। अठै गाव र इस्कूल मे पढतो हो जण ई लगोलग दो-दो चार चार घडी ताई बैठो बठो लिखबो पढबो करतो। इण काम मे वो इतरो रम जावतो क वीन नी खावा री सुध रैवती अर नीं पीवा री। लेख लिखवा अर भाषण देवण री होड मे वो घणाई इनाम जीतिया हा।

किसनू दादा र घणा इनाम जीतण री खुसी घीसू आपर मन म दाब र नी राख सक्यो। बीनै जोरा सू हसी आयगी। मूडा माडो हाथ लगा र उत्सुकता सू

सू पोलू पूछण लागो—आभासा ! था दादे नै इसी किसरी घुटकी दीवी जिसू दादो इतरो हुंसियार निकळ्यो ?

पोलू री हुसी रो ठहाको सुण साम्हैं ऊभा मोती काका पण बठै आयग्या। उणानैं आवता देख किसनू री मां ओढणा रो पल्लो साबळ करियो अर पोलू रै हाथां में लियै अखबार कानी देखण लागी ।

मोती काका रै साम्है अखबार करतां पोलू कह्यो—देखो काका, किसन दादे रो फोटू । आज हमका जिसी काई आपणा गाबा जिसी खबर मिली है । देखो, बांचो, दादा रो सावजनिक अभिनन्दन हुयो है ।

फोटू में जवान किसनू रो चेहरो देख मोती काका रै आंख्यां साम्है बालक किसनू री भोळी सकल आयगी । वै केवण लाग्या—पोलू ! किसनू टाबरपण सूं मेहनती हो, पाटी-बरतो लेय बा नित हमेस वेगोसोक इस्कूल पोंच जावतो । छुट्टी र दिन पण घरै बीरो मन नी लागतो । गुरूजी एक सबद बतावता तो दूजो बो अनेह याद कर लेवतो सांची बात है पूत रा पग पालणे इ दीसै ।

पोलू सूं बात करता-करता मोती काका किसनू री मां कानी मूंडो कर'र पूछण लाग्या—बहू आभासा ! किसनू रा बापू जद देवलोक हुया तद किसनू काई आठेक बरसां रो हुवैला ।

किसनू री मां बेटा री उमर रो हिसाब आंगळियां पर लगायो अर कयो हां सात बरसां में कोई दो तीन महिना कम हुसी । रामूडो जद पांच बरसां रो हो अर गोमती कोई डेढेक बरस री ही ।

बात रा सिलसिला आगे बधावता किसनू री मां केवण लागी—म्हूं किसनू रा बापू न कवती ही क ई बेटे ताई तू थो थपडो लाम्यो, ई खातर म्हूं नथो कुरतो सीऊ ली । आपा ईनै तू था तू था गाभा पहरा र इस्कूल पढवा मोकळा लां तो वै कंवता नीं किसनू री मां म्हूं ईन पढवा नी भेजू ला । अवार ओ छोटो है । पढवा में दिमाग लगाणो पडला तो कठई माडो पड जावैला । अग पढ न करना काई ? व तो नित हमेस कवता हा— पणभणिया घोड चढ अर भणिया मांगै भीख ।'

'भणिया मांग भीख' सबद सुण पोमू खिलखिलार हस पडियो अर पूछण लागो—आभासा ! दादा सा पढाई री कीमत नै नीं जाणता काई ? आज अगर वे जीवता तो भणिया पढिया छोरा न घर सूं बार काढ देवता काई ?

कनै धरियोडी टोपली में पडी पूणिया न सावळ करता भामासा बोलिया—अरे घीसू घर सू बारै तो काई काढता, पुराणा लोग हा पढ़ाई री कीमत वानै मालूम नीं ही। व मानता क पढबा-लिखबा सू टाबर बिगड जाव मां बाप रो केणो नी मानै। लाज सरम खू टिया मेल देवे। खुल्ले मु ड परण। जातपात नै भूल जावै। श्रोछी जात रा लोगां सू बेवार राखै।

भामासा री सगळी बाता सुण मोतो काका नै तो की अचभो नी लागो पण घीसू रै तो जाण करट लागग्यो। वो केबा लाग्यो—भामासा! पढाई करण सू कदै टाबर बिगडिया कर? भण्यो-लिख्यो टाबर तो माइता रो केणो बतो मान उणारी सवा चाकरी करणो आपणो फरज समझै। भणत सू विनय प्रेम, अनुसासण जिसा गुणा रो आपेई विकास हुव। परदा करणो अर जातपॉत रो भेदभाव राखणो चोखो कोनी।

घीसू कैवतो जायर्यो हो—आज वदास किसनू दादा जात पात रो भेदभाव राखता अर पिछडी जात ऊ ची उठावण खातर प्रेरणा देण आली कवितावा, कहाणिया, लेख आदि नी लिखता तो आज वारो नाम कूण जाणतो? अर ज किसनू दादा री पत्नी घू घट काढती अर पणी-पढ़ी नी हुवती तो बारी गिरस्ती री गाड़ी किया चालती? कींकर समाज सुधार रै काम में वै आग बढता?

मोती काका पागडी रो बारै निकल्योडो पल्लो पाछो मांय खोसता कयो—अरे भला मिनख। थू थारै भामासा नै काई उपदेस देयरयो है। विधाता पाँच मिनखां नैं भांग आ एक लुगाई घडी हैं। थू हाल ओछी बुद्धि रो नानो टाबर है। थनै किणी बात री ठा कोनी। देख सुण थार किसनू दादा री पढ़ाई खातर इणन आपण परिवार अर समाज दोनूं सू लडणो पडियो है। कुटु ब कबीला रा लोग कैवता—थाणै कनै नीं पीसो है अर नी इब कमावा आळो। टाबर री पढाई छुडा'र इन छोटे मोटे धन्धेसर लगाओ। दो पीसा कमार लावेसा तो थारा रामूडियेरो अर गोमती रो खरचो सोरो चालेला। समाज रा लोग कवता—खाबापीबा री कमी हुवण सू टाबर नै बारै सर रै कालेज मे पढण खातर भेज री है किसा भाटा जिसा हिरदा री मा है। बिना बाप रै बटे न परदेस म कुण सहारो देवेला। भण पढ र किसनू किसो तीर मारेला कठारो राज करला?

मोती काका सू आप बीत्या काना सुणिया सबद सुण किसनू री मां रो सोयो पुरुसारथ जाग गयो। बा सिधण री भात गरजती बोली—बेटा घीसू! किसनू नै पढाबा खातर म्है घणा पापड बल्या। लाग कवता—किसनू कालिज म पढ'र काई राज करला। तो म्ह पडूत्तर देवती—थाणी बोली फिर अर म्हारो किसनू राज करबा लायक बण। किसनू इसो लायक बणला तो म्हारो मिनख जमारो सुधर जायला।

किसनू री मा कवती म्हाय री छो-बेटा ! म्हू कुटुम्बकबीला ने समझावती-म्हार कन छोरा मैं पढ़बा खातर पीसा कोनी तो थां लोगां रै साम्हे पीसा खातर हाथ नी पसारूला । म्हूं मेनत मजूरी कर'र इणरो खरचो पूर पटकूला । पण थे सगलां मसला मत बोलो । म्हारै दाभिया पर लूण मत लगाओ ।

भाभासा री भोज भरी वाणी सुण धीसू रो हिवडो मू बी उमग सू भरग्यो । वो मनई मन सोचण लाग्यो-साचाणी नारी अबळा कोनी सबळा है । सामाजिक कुरीतियां सू लडण खातर इणमें मिनख सू बत्ती ताकत है । इणा विचारां र साग धीसू भाभासा सू पूछण लागो-क्यू भाभासा ! जियान किसनू दाद न पढाबा मे थान समाज अर परिवार सू लडणो पडियो उणीज भात थाणें जीवन मे और भी घणकरी मुसीबतां आई हुवला ।

अटेरण मायं कूकडा रा सूत लपेटता भाभासा बोलिया-अरे धीसू आ जिन्दगी तो कांटा री गल है । उण काटा न फूल समझ र चालण मे इज मिनखजमारा रो सार है ।

इतरो कवता-कवता भाभासा रै साम्हे उणारी जिन्दगी रा लारला दिन सिनमा री रील दाई एक एक आरया आडा आवा लाग्या । धीसू ! म्हू ३० बरस री भरी जवानी में बेवा हुयगी ही । बी दुख री घडी में म्हारी गोद मे छोटा मोटा तीन टाबर हा । घर में पीसा कोडी नीं हा । रैवण नै झूपडो तो हो पण खावा खातर नाज रो कमी अर पैरवा खातर गाभा री घणी तगी ही ।

टाबरा रै पालण पोसण अर पढबा लिखाबा खातर म्हैं घणी मनत मजूरी करी । आखो आखो दन सूत कातियो, रात-रात भर मोल रो पीसणो पीसीयो । झाभर क छाणा गोबर न जावती । घणाई खेत खोदिया, मक्किया छोलिया मरचा तोडी ।

किसनू पढ़बा में चोखो हो । जद वो गांव रै इस्कूल रो पढाई पूरी कर र कालेज री भणत पढ़बा गयो तद सरकार सू बीन हर महिन वजीफो मिलतो हो । ई कारण उणरै पढाई मायं म्हन घणो पीसो खरच नीं करनो पडियो हो पण पर बद कदै वोंरी परीक्षा फीस खातर पीसा म्हन मोकळणाई पडता । म्है पीसा न फालतू कठै खरच नी करिया और ता और कद कद तो म्हू किसनू नै राजी खुसी रो कागद भी नीं दे सकती कार्ण आखो दन रैंट्या कातती जद कठइ तीन पीसा कमावती ।

अर धीसू ! काई कवू जद गिरस्ती रा भार म्हारै अेकली रै कांधे पडग्यो तो कदै म्हन घणी अमूज आवती । कू रो मायं पाणी भरबा जावती तो जीव इसो करतो

जाण इणमें कूद जाऊ अर जिनगाणी र दुखां सू छुटकारा पाऊ । पण इसो काम करण रो अंतरमन साख नीं देवता । म्हार काना मे कोई कवतो आतमहत्या करणी सबसू मोटी कायरता है, पाप है। आंख्या साम्है किसनू रामू अर गोमती री भोळी मिकला आवा लागती । अर म्हू बवडा उठार बेगीसीक घरा आय जावती ।

मोती काका किसनू री मां र दुखा सू वाकब हा । उणरी बाता सुण वांरी आख्या री कोरा म पाणी आयग्यो । आरगा पू छता व बाल्या–हा जद थ किसनू र बाप रो नुगतो नीं करियो ता लोग थन कितरी ओछी बाता सुणाइ ।

नुगता रो बात सुणता, किसनू री मा री बाली मे तजी आयगी वा कवण लागी-करती कठाऊ घर मे तो दो सो रीपिया रो जुगाड इ नी हो । मिनख आय आय नै कंवता पीसो नी हुव तो करजा करल झूपडो गेण मन द । जीमण मे बत्ती रसोइ नीं बणवावै तो लापसी पूडी कर ल । पण नुगतो करणो जरूरी है। औ नीं करैला तो बापडी मरियोडी आतमा नै साति अर गति ना मळला । व मसाणा री बानी मे लोटती रवेला ।

किसनू री मा हाथ रो झालो देवता बाली–म्है तो जीम रै स्वाद रा लोभी मिनखा नै ना द र क दिया क म्हार कनै नुगता खातर पीसा कोनी । म्हू म्हार धहैरा रै मकान न गणे मल र दर दर री भिखारण नी बणू ली । घर रो झूपडो आधी भूख कटाव । म्हारा खरो बोलणो लोगां न खोटो लागो । म्हन घणा ताना मारिया पण म्है तो एक री मी सुणी । नू वो बात नौ दिन री अर पछै सगला ठडा पडग्या ।

माभासा री बाता सुण धीसू र मन मे नू वी चतना आयगी । वो बोलियो माभासा ! थें तो लुगाई नी मरद हो । समाज री बुराइयां सू लडण खातर थांमें मिनख सू बत्ती ताकत है ।

इतरा मे मोती काका बोलया–अरे ! किसनू रो सगपण हुयो हा जद भी तो लोगां दाता हेठ आंगळी द दीवी ही ।

किसनू री मां र गभीर चेहर पर मुळक आयगी वा मदरी सी मुळक र बोली–जद किसनू सगळी नै डायचा खातर ना दे दीवी ही अर रीपिया नारेळ सू टीका रो दस्तूर हुयो तो लोग देखताई रेयग्या ।

पण किसनू री मा पू भी तो निरलोभण लुगाई है थें भी तो सगैजो नै कयो हो कै म्हनै धन दोलत नीं, आछी सुलछणी कन्या चावै ।

आबात मोती काका कैयर्‌या हा के इतरा में ताळी पीटतो बेगोसीक घीसू बोलियो–अरै भाभासा ! जद किसनू दादो परण र आयो अर बीनणी न बधाय र मांय नैं लर्‌या हा तो कितरा मिनख अर लुगाइयां एकठा, हुयग्या हा । बी बगत म्हन तो हुस्यो लागर्‌यो हो जाणें कोई खेल तमासो आयो हुव ।

भाभासा रो मुळकतो मूंडो फेरू गम्भीर हुयग्यो । बै बोलिया–बेटा ! आपणै गांव मे खुल्लै मूंडै योइज पलो ब्याव हो । गांव रा लोगां नैं उघाड़ मूंड बीनणी देखबा रो घणो चाव हो ।

घीसू नैं घणो देर ताई भाभासा र घर जाण उणरी मां उण न बुलावण खातर आई । जा'र वा भाभासा र पगा लागी । देखे तो घीसू भाभासा सू वातां करण मे मगन है अर बीं रै कन एक अखबार पड़ियो है । वा अखबार देखण लागी । उणरी निजर कसनू रा फोटू पर पडी फोटू देख'र बी बांचियो–समाज सेवा अर प्रेरणाशील साहित्य सिरजणा खातर किसनू रो सावजनिक अभिनन्दन ।

बी पाडोसण कमली री मां, रामू री काकी गगा री भुआ अर दादी नैं हेलो मारियो अर वा नैं बुलार फोटू देखावता कयो–आपण किसनू बाबू अवै ऊंचो आदमी बणग्यो है । सै जणियां किसनू रा मुळकता मूंडा न देख घणी राजी हुई अर कैवण लागी—औ सब पुन परताप भाभासा रैं मैनत, पुरसारथ अर जीवट रो इज है ।

# उडती धूड

आला अफसरां ने ई बात री चिन्ता घणीं कोनी ही क जिण गाव रा दोरो मन्त्रीजी कर रह्या है, बठ बारी आवभगत किया बणसी, बाकी ई बात रो बानैं घणो इचरज हो रह्यो हो कै आखिर मन्त्रीजी जतरण जिसा छोटा सा गाव रो दोरो करणो क्यू कर तय करचो ? पण अब ई बात रो ठा पाडण रो तरीको भी कोनी हो। क्यू क मन्त्रीजी अबार अबार ई तो ई विभाग नैं सम्हाळियो हो सो कोई मूं डै लागेडो मुलाजिम हो भी कोनी जको ई बात री सुरबाळ (गुप्त सूचना) ल्या देतो। खर जी अब तो त्यारी करवा रो टेम सामनैं आयग्यो हो सा अब तो दो ही उपाय हा कै कै तो खुद आला अफसर अर नींचला मुलाजिम खुद जैतरण मे आवभगत री त्यारी करैं या फेर बठ रा विकास अधिकारीजी रैं माथ सारो बोझ म्हेल दैं। आखिर सोच विचार'र आ ई तय करी क बी० डी० ओ० न ही पूरी हिदायत दे दी जाय। क्यू कै सामनैं दो दिन रो टेम ई तो हो जीमैं त्यारी करणो कोई हसी ठट्ठा रो काम तो हो कोनी। ले-दे'र अफसराई सू काम लियो गयो अर मन्त्रीजी रा दौरा रै विषय में एक तार विकास अधिकारी जी कै नांव ठोक दियो अर आ हिदायत दे दी कै जैतरण नै एक आदर्श गाँव र रूप में पेश करणो है अर धूम धाम सू मन्त्रीजी री आवभगत करणी है। आ खुल्ली छूट भी दे दी गई कै रुपिया पीसा री चिन्ता मत करज्यो। बस मन्त्रीजी नैं आ लागै क जैतरण कतरो खुसहाल अर बढ्यो चढ्यो गाव है।

विकास अधिकारीजी दफतर माय बैठ्या ऊंघ रह्या हा, तार पढ र बांनैं चेतो हुयो। झटपट सैं मातहतां नैं बुला'र कमरा में एकठा कर लिया अर बोल्या— ऊंचला दफ्तर सू तार आयो है क परस्यू मन्त्रीजी जैतरण गांव रा दौरा सारू पधार रह्या है। नुवां मन्त्री मण्डल में आया पछै बांरो ओ सै सू पहलड़ो दोरो है अर बो भी जैतरण जिसा छोटा सा गाव मे। सो देखल्यो। एक दिन रैं मांय-मांय आपां नैं सारी

त्यारी करणी है। यो बिभाग री मान मरजाद रो सवाल है। मानें या" होसी कै लारली बार जद जूना मन्त्रीजी वसरा गाव म श्राया हा तद आपा रात दिन एक कर'र गाव रो रग रूप निखार दियो हो सो मनैं आ श्रासा है क थियां ई अबक सूं एक जुग हो'र जैतरण री काया पलट करण अर मन्त्रीजी री श्रावभगत करण सारू श्राप लोग तन मन सूं हाथ बटाग्रोला।

स जणा विकास अधिकारी री बात ध्यावस सूं सुणीं। एक बाबू मन गाढो कर र पूछ्यो—पण स्साब जद तो श्रापा कन श्रणाप सणाप दाम खरच करण रा श्राडर हा सो रातू रात सारी त्यारी हागी। मन्त्रीजी भी घणा राजी होकर श्रोठा गया। थोडो क श्रठी उठीन दख र धीर सा बोल्यो—श्रर स्साब जद तो श्रापण सदक पल्ला थपू क पूण पावलो पड्यो हो।

विकास अधिकारीजी बोल्या—खरच री चिन्ता मत करो, श्रापा न खूब खरच करण रो हुकुम है। बस एक ई बात रो ध्यान राखणो है क परसूं दिन ऊग तांई मन्त्रीजी री श्रावभगत री सारी त्यारी हो जाय।

ई र बाद मन्त्रीजी रै दोरै रै दो घटा र परोग्राम री बात चीत हुई। ई इलाका रा विकास अधिकारीजी श्रापरा दरजा रा श्रोर अफसरा हूं ज्यादा समझदार अर काम रा करणिया गिण्या जाता हा। सा बानैं आपरी योग्यता रो पूरा नमूनो दखो हो। व भोत सोच समझ र प्लान बठा कर मान मनवार अर आवभगत री त्यारी चालू करी। न्यारा न्यारा गांवां में लागेडा श्रापरा मातहता न तुरत श्रापरा दफ्तर मे बुला लिया जको मौसू पण खरा'क तो दफ्तर मे ई माजूद हा। खेती रो विकास दरसावण खातर रातू रात एक दिखावटी खेत बणावण री योजना बणाई। श्रठी उठी रा गावा रा खाता पीता कास्तकारां नैं मन्त्रीजी सूं मिलाणा हा। पढाई लिखाई रो परचार दिखावण सारू एक प्रदसणी भी दिखावणी ही। गाव रा टाबरा सूं राष्ट्र गीत गवाणो, एक श्रादस इसकूल रो निर्माण करणो अर बीं र खातर पढणियां छोरा एकठा करणा। ई तर सूं सो क्यूं बणावटी अर दिखावटी अर बो भी बस एक दिन अर एक रात मे त्यार करणो।

विकास अधिकारीजी नै श्रा सारी बातां रो घणो अनुभव हो। अर फेर मन सारू दाम खरच करण री छूट सो बै अबक भी कमर कस र त्यार होगा।

न्यारा न्यारा श्रादमियां नै न्यारा न्यारा काम सूप दिया। सब न दाम खरच करण री छूट हो। जतरण र नजदीक हाळा शहर कानी कोई श्राठ जीप दौड पडी अर दूजी ई गाडियां न्यारा न्यारा गांवां कानी।

गाव र कनै ई जीत्या ग्रहीर री जमीन पर एक बणावटी खेत त्यार करघो गयो। टेक्टर सूं जमीन नै पोली करी अर च्यारू मेर बाड लगायदी। आस पास रा खेता में बाजरा रा सिट्टा लागोडा पौधा मगा र फसल र रूप मे खडा कर दिया। खेत मे, सरकार सूं मिल्योड रासायनिक खाद री बोरघा धरवा दी अर अठी उठी नै नुवा नुवा ग्रोजार पाती पटक दिया।

भीख कुम्हार ग्रबार ई पक्को मकान बणायो हो सो बीन एक सो को नोट दियो अर बी रा मकान मे गाव री ग्रादस इसकूल बणाई। दस मजूरां नै लगा'र गाव रा कूपा री टूट फूट सुधरवायो अर च्यारू मेर चौपडो बधवा दियो। कबूतरा खातर चुग्गो घर गाया खातर घास रो ठाण अर टाबरा खातर खेलवा रा मैदान बणायो गयो। पचायत घर मे एक सिक्छा री उन्नति रो प्रदसणी लगाई। गांधीजी, नेहरूजी अर डा० राजेन्द्रप्रसादजी री बडी बडी फोटूग्रा काच मे मढार टगवा दी। सिक्छा री प्रगति रा ग्राकडा ग्राफ अर चाट बणा र लगाया गया। आडै पाड रा समझदार लोगा नै भाडो दे र टेम पर बुला लिया। मन्त्रीजी री ग्रावभगत सारू एक सामियानो ताण र मच ई बणाय दियो।

मन्त्रीजी रा पधारबाळा दिन ऊग ताई तो जतरण री काया पलट होगी। वरसा सूं जिण गाव कानी कोई ध्यान कोनी दियो हो, वो ग्राज यूं लाग रह्यो हो जाण जादू सूं नयो गाव बसाय दियो होव। अब ग्रा बात दूजी ही क सरकारी खजानां सूं हो रह्यो ग्रो खरचो ग्रापरी हद न भी छेक ग्यो हो।

दिनगे ग्राठ बज्या ताईं जतरण गाव मे जिला ग्रोफिस अर सचिवालय रा ग्रफसर पूगग्या। सब लोग विकास ग्रधिकारी री मेहनत री तारीफ कर रह्या हा। एक दो जणा तो बा नै सिफारिश करण री बात ई कही। विकास ग्रधिकारीजी फून्या फूल्या डोल रह्या हा।

ठीक दस बज्या मन्त्रीजी री कार ग्राई। ब कार सूं उतर र खडघा होया नो सोळ, सिणगार करघोडी सात लुगाया वारी ग्रारती उतारी। फेर मन्त्रीजी मच पर ग्राया ता टाबरा मिल र राष्ट्र-गीत गाया। बठीन शहर सूं बोलायोडा फाटू ग्राफर दनादन फाटू खीच रया हा।

गाव रा बडा कास्तकारां री जाण पिछाण मन्त्रीजी सूं करायी गयी। मन्त्रीजी देख्यो क सामन री सीटा पर भाषण सुणण खातर सब कास्तकार बट्या है। मन्त्रीजी वानै देख र घणा राजी होव पड्या। बडा जोस खरोस सूं व किसानां खातर जोरदार बाता कही। बा न देश रा गांवा महतादार बताया अर गावा नै भारत री ग्रातमा बतायी जका री उन्नति सूं हुई देस री साची उन्नति हो सक।

आपण र पछ्छ एक धन्यवाद प्रस्ताव हुयो अर मन्त्रीजी न, राज्य रा काळ पड़्या इलाका खातर एक हजार रुपियां री थली गांव रै तरफ सू भेंट करी गयी। फेर वां न गांव री पाठशाळा, खेलण रो मैदान अर पचायती घर में मागोड़ा प्रदसणी दिखाई। मन्त्रीजी घणा राजी हुया। फर जीत्या अहीर वाळो खेत दिखायो जठै बाजरा री जोरदार फसल लाग री ही। साग्यो बै मन्त्रीजी राजी हो रह्या हैं।

मन्त्रीजी रो जीमण रो परबन्ध जतरण में ई हो सो जीमता वखत मन्त्रीजी सै ई अफसरां री बडाई करी अर विकास अधिकारी जी री खास तौर सू तारीफ करी। बी टेम बै आ भी कह्यो कै आज देस रा हरेक गांव नै आदस गाव बणावा री जरूरत है।

मन्त्रीजी रो दौरो खतम हुयो। जैतरण का लोगां रो धन्यवाद कर र व कार मे बैठग्या। पांच-सात और कारां अर जीपां साथ ही। मन्त्रीजी री कार चालताई वै भी सब चाल पड़ी।

जैतरण गाव सू कोई मान आठ कोस दूर आ र थाण चुक मन्त्रीजी री कार रुकगी। मन्त्रीजी उतर'र विकास अधिकारी री जीप कन आया। विकास अधिकारी जीप सू उतर र हाथ जोड़ र खड्यो होयो। मन्त्रीजी गम्भीर आवाज म बोल्या— आप मेर साथ आओ।

विकास अधिकारी री हालत पतळी होयगी। पण जिया किया हिम्मत कर र मन्त्रीजी र लारे लारै हो लियो। कोई पांवडा दसेक परै जायर मन्त्रीजी बोल्या— बी० डी० ओ० स्साब! थ भोत झूठा अर मक्कार आदमी हो। शायद थे आ समझ लिया क म्हो दिखावटी आदस गाव बणा र थे मने बेवकूफ बणा दियो। पण याद राखज्यो क आ बणावटी काम जद्या'र थे म्हन ई नीं सारा देस न धोखो द रह्या हो। जाणो हो धोखा रो ओर सिलसिलो एक रै बाद एक छोटा सू छोटा मुलाजिम नै कामचोर अर भ्रिष्ट बणाव। साल भर पडया पड्यां ऊघणो अर टेम पड्या सरकारी खजानो लूट'र आपरा अफसरां न राजी करणा'ळो काम घणा खराब अर खतरनाक होवे।

विकास अधिकारीजी तो इयां होयग्या जाण तो आकाश सू हाथ छूटग्या, सिर नीचो करधा खड्या रह्या। मन्त्रीजी क रह्या हा—आप जिसा धोखा-धडी करणिया आदमी औ सबज बाग दिखा'र देश री जड़ां काटरघा है। जो म्हूं चाहता तो बी टेम ई थांरी रचेडी बी माया नगरी रो पर्दो फास कर देवतो। पण मैं थान एक मौको ओर देवणो चाऊ हू। जरा सोचो आप ई यू धोखा-धडी रो व्यापार करोगा तो देस री आवण वाळी पीढी रो काई हाल होसी? थोडा रुक कर फेर बोल्या—जाओ थे पाठशाळा

रा झूठा बोड उतरवाओ, बाजरा री दिखावटी फसल नै ठौड़ै ठिकाण लगवाओ। फेरूं ईसो नीच काम मत करजो।

विकास अधिकारीजी रै समझ नीं पड़ री ही कै काईं करै। मन्त्रीजी रा पगां में लोट'र माफी मांग कै आपरा करेड़ा करतबां रो पछतावो ले'र मोठा चल्या जाय। वै माटी री मूरत बण्या खड़्या रह्या। जद ई वानैं कारां री इस्टार्ट होण री आवाज सुणी। वानैं जियां चेत होयो। मन्त्रीजी अर अफसरां री कारां चाल पड़ी ही। विकास अधिकारीजी देखता रह्या कारां रा फिरता पहियां अर उड़ती धूड़...।

□

# सिणगारी

सिणगारी आज मूड में ही। सड़क र स बीच ऊभी होयनैं आपरो मत्र जोर जोर सू बोलण लागी—

लाकड थू बड    तडाक तू बड

साक धिना धिन    फेमिन वक

मस्टरू ऽऽऽल ! हा हा हा ! ही ही ही !

मत्र बोल्यां पछ जोर जोर सू हसण री उणरी आदत ही। वा इतरी जोर सू हसती के मारग धवता रा पग मत ई थम जावता। छोरा उणर च्यारू मेर घेरो घाल देवता। वा हसती जावती अर छोरा ताळिया बजाय बजाय नैं कंवता जावता— ए सिणगारी लाकड थू बड ! ए सिणगारी तडाक तू बड ! अर वा हसती हसती दोलडी वळ जावती। लटिया बिखर जावता, फाटोडा पूर आघा जाय पडता आंख्यां सू पाणी झरण लागतो अर वा बेहाल हो जावती।

आज ई जसवतसराय रै आग मो सागई नाटक चालतौ हो के साम्हली दुकान वाळो सेठ डडो लेय न आयो।

—क्यू बापडी ग ली न तग करो रे हराम खोरा ! छोरा डडो देखनैं एकर तो भागग्या पण अळगा जाय नैं फेरू हाका करण लागा—ए सिणगारी लाकड थू बड ! ए सिणगारी तडाक तू बड !

डडा र डर सू वा ई आपरी घर बखरी सावट न बिजळी रा थांभा र नीच बठगी चुपचाप ! हमेसा र ज्यू थोडीक ताळ मे जीवण रा जूना चित्राम उणरी आख्या आगै फिरण लागा। लाकड थू बड ! हा हा लाकड थू बड तो एक गाव रो नाम है। जठ उणरो घर है खेत है, बकरिया गाडरा रो लाठो एवड है डोकरी

बाप कवे—सिणगारी म्हारी एकाएक भागवती बेटी, बेटा पातर ई वत्ती। इणरी मा बैठी होती तो कितरी राजी होती इण न देख दस न। म्हू जीवता थकां इणरा पीळा हाथ कराय दू तो मरयो ई मुकोतर जाऊ।

दख बेटा एकली एवड लयन वाकड म जाव पण ध्यान राखज जीव जिनावर रो, ग्याभणी बकरिया रो।

दुकान वाळो सेठ पोतारा धधा मे लागग्यो तो छोरा पाछा भेळा होवण लागा। एक अण जळेबी रो टुकडो उणर कटोरा म नाखन कह्यो— ए सिणगारी वो हाजरीवाळो गीत तो सुणा! हा हा सुणाय दे सिणगारी एकर तो! सगळा एक साथै इज कवण लागा।

कटोरा सू जळेबी रो दुकडो उठाय न उण मू डा में भाल लियो।

—सिणगारी आज भूखी है। ए
गुलाब! थारी दुकान सू की खावण
न तो लावनी डोफा!

अर भूरा कदोई रो छोकरो गुलबो दोडनै बाप र छांनै खासी भली वासी पुडिया अर वीं मिठाई उठाय लायो।

वा नीची धू ण घाल्या हुजा हुज खावण लागी। छोरा ऊभा ऊभा देखता रह्या। खाया पछ वा किसना बा र ढावा कानी पाणी पीवण न गई। किसना बा रो ढावो सिणगारी रो कायम डेरो। उणरा गूदड अर कटोरो ढावा रै लार इज पड्यो रवतो। दिन रा लटिया विखरियां अर पूर ऊचायां अठी उठी फिरती रैवती। मो कई बरसां रो नेम हो! ढावा सू उणनै रोटी मिळ जावती अर इणरै एवज में वा ढावा रा ऐंठवाडा बासण मांज देवती। जसवत सराय र आगला दूजा ढावा वाळा इ कई वार मौको पड्यां उण सू ठीकर मजाय लेवता। वा इ मूड मे होती तो मांज नाखती नीं तो तडाक तू बड करनै अगूठो बताय देवती।

किसन बा उणन पाणी पावतां कह्यौ—दिनू ग ई कठै रोवती फिर है नकटी रांड? रोटी खावणी हावै तो ठीकर लेयनै मरै क्यू नी, पछ बासण मांजणा है। वा पाणी उछाळ न जीभ काढती वाली—लाकड यू बड तडाक तू बड लै ल लै लै!

किसनो बा गरज्या—नकटी छिनाल रांड लिपछिया करै अर ऐंठवाडो उछाळ मू डौ भाग दू ला!

छोरा नैं मजौ श्रायग्यो । वैं हाल मजमो लगायां ऊभा हा । वा श्रायनैं बठी तो व ई घेरो बणाय न बैठग्या । व कवण लाग्या–ले सिणगारी श्रब सुणाय दे वो हाजरी वाळो गीत !

सिणगारी गाल र हाथ लगाय न गावण लागी—
बाबूजी म्हारी हाजरी भराय दो कागद म !
धापूडी ई मरगी नैं टीपूडी ई मरगी
सिणगारी गवाळा म रयगी श्रो बाबूजी
म्हारी हाजरी भराय दो कागद मे !

हाजरी वाळो गीत उण फेमिन कॅप म सीख्यो हो उणनैं याद श्रायो । एक दो तीन लगती लान तीन दुकाळ ! मह री छांट ई नी । बकरियां गाडरां सगळी मरगी । एवड सफा व्हैग्यो घर म खावण नैं दाणा ई नी मरती वखत डोकर री श्राख्या डब डब ही वा पेट भराई खातर फेमिन कॅप म पूगी सुपरवाईजर बाघसिह री गॅग नबर पतीस नामो मडग्यो–सिणगारी बेटी मूळा री साकिन लाखड घूबड परणी के क्वारी ? क्वारी र वरी क्वारी श्रकन क्वारी ! उमर ? उमर तो याद कोनी । सुपरवाईजर मुळक्यो-बीस वरस लिखदू ? वा सरम सू दोलडी व्हैगी । सरीखी सांइणी लारे लागगी —
ठालो भूला रो मरीग ता देखो, जाण सांच ढळयो !
श्रर रूप जाण श्राभ री श्रपसरा ।
चाल तो जाण जमी धरकै ।'
धीर ए सिणगारी धीरै ! कठई बाघसिह री निजर नीं लाग जावे ।

पा पा करती एक मोटर उणर श्राग होय न निकळगी । वा ई पूर खाघ करनैं बहीर होगी । ढाबा वाळ किसन बा जार सू हाको कियो—

कठीन मर है ए नकटी राड ! श्रायन बामण मांजन, नीं ता श्राज टुकडा नीं मिळ ला ।

उण कीं गिनरत नी करी अर नीची धूण घाल्या सरदारपुरा कांनी रवानै हुगी । साम्ही बठ्यो किताबा री दुकान वाळो मडकल पढत हसण लाग्यो ।

एक दिन फेमिन कॅप मे बाघसिह इ उणन इणीज भात धमकी देवता कह्यौ हो–देख सिणगारी मानजा नी तो पछ पछतावला । भूखा मरती मर जावला ।

वा पग रा अगूठा सू जमी कुचरण लागी ही । थारी सगळी साथणिया टीपूडा धापूडी श्रर मेथकी बारी बारी सू म्हारो कवणो मानगी है । तो थू इसो काई श्राभै रा श्रपसरा है जा इतरो करडाण राखे ।

बाघसिह उणरो पुणचो पकड लियो हो अर उणों खाच न कनपडा मे जर-काइ ही एक थाप-भप्पीड करतोडी । आवया आडी अवारी आयगी होला । नसो जरूर उतरग्यो होवेला । दूज दिन इज मस्टरोल मे सू उणरो नाम कटग्यो हो ।

उण दिन वा एक खेजडो र बाथ घाल नै थाप न रोइ ही   बापू ! बापू ! म्हन एकली छोडन कठी गया र बापू ?   थारी लाडेसर घीवड रनां वना मे एकला रोव र बापू !

चालता चालता उणरी आख्या में पाणी आयग्यो ।

महात्मा गाधी अस्पताळ र आग एक डाकरो नीचो धूण घाल्या बैठो हो । वा उणर नडी जायन बोली – बापू ! बापू ! डोकर चू घी आख्या मिचमिचाय न माथो ऊचो कियो । वा दो पावडा लारै मिरकगी । बापू र तो मोटी मोटी आंख्या ही प्याला जिसी । ओ तो कोई दूजो इज है । बापू तो कदेई मरग्या ।

वा जालोरी गट र आग पट्रोल पम्प रै कन ऊभी होयगी । अठा ताइ उणरी रमणी ही । इण सू आगै वा पांवडो इ नी धरती । राज अठ आयनै ऊभी हो जावती अर रोज पेट्रोल पम्प वाळो उणनै धुरकार नै काढ न्वतो । आज वो की काम मे लाग्योडो हो सो वा घणी ताळ उठ ऊभी रही । निजरी आगै सू निरी मोटरा तागा, स्कूटर, साई-किला अर पंदल आवता-जावता रह्या अर वा आख्यां फाड्या देखती री ।

थाडीक ताळ में उणन चोपासणी रोड कानी सू एक लुगाई आवती निजर आई । ऊजळा गाभा मे फूटरी फररी गोरी निछोर । छाती सू चेप नै एक नैनो टाबर तेड्या । कवळो कवळो गोळ मटोळ रबड रा बबला होव जिसो । ज्यू ज्यू वा लुगाई नैडी आवण लागी वा उणनै खरी मीट सू देखण लागी । लुगाई स्यात डरण लागगी ही । वा माथो नीचो किया उणर आग कर निकळ जावणो चावती । पण वा ठीक उणरै सांम्ही पुगी के सिणगारी उणं रै हाथ सु टाबर खोस नैं ले लियो । लुगाई जार जोर सू कूकण लागी अर उण तेतीसा मनाया । लोग बाग भेळा होया अर बात समझ मे आई आई जितरै तो वा ठेट अस्पताळ साम्ही पुगगी । दो एक मोटयार उणर लार दौडया । आग सिणगारी टाबर नै छाती सू चेप्या अर लार मोटयार । मिनख तमामो देखण लागा । सेधट आ रेस जसवत सराय र आग जायन पूरी हुई । टाबर री मा धुर हाल कुरळावती लारै री लारै दोडी आई । सिणगारी टाबर न छाती रै काठो चेप राख्यो हो सो टाबर इ जोर सू चीचाड कर हो । लोगा नीठ उणर हाथां सू टाबर न छुडायो । मारो रसाळी न' रा छाका सागै च्यारू मेर सू उणरै माथै मार बडण

लागी। डोकरा किसना बा न दया आयगी। उणा बीच मे पडन नीठ उणनै छुडाई–छोड दो र बापडी नैं गली है अभ्यागत है। आ करेई करेई मन मत बाता कर जिण सू जाण पडै के आ काई इज्जतदार अर भला घर री टाबर है। पण पच्चीसा दुकाळ म घर म सगळा मिनख मर खूटा अर आ निराधार बण न भूखा मरती पागल हायगी। दो बरस प ली न जाण किण हरामखोर बापडी इण अभ्यागत गली साग घूड खायली जिण सू इणर पेट मडग्यो अर टाबर होय नैं चालतो रह्यो। उण दिन सू आ नैना टाबर खातर टूटी पड।

भीड मे कोई बोल्यौ–इण गैली साग धूड किसनै बा इज खाड़ी। अब धरम री धजा बण्या फिर।

भीड होळ हाळ बिखरगी।

# च्यानणै में अंधेरो

दाखी भूवा कलकत्तै मे सेठा री रसोई मे एकली बठी बाबू री उडीक म ही। नेड सी उण रो बेटो रामूडो एक बोरी पर बुखार मे चादरो ओढया सूत्यो हो। कदे-कदे बाबू घणो देर लगायर आफिस सू आवता अर आया पाछ और भी देर लगायर जीमता। इतर दाखा नै रसोई मे ई रवणो पडतो अर बाबू न गरमा गरम फलका जिमाया पछ ही उण रो घरे जावणो हुवतो। जे घणी देर हुय जावती तो साथै गुवाळो भी रखोप खातर भेज दियो जावतो।

ऊपर सू नो बज चुक्या हा पण आज तो बाबू आया ही कोनी। गरमी री मौसम अर रसोई री तपस्या। पण दाखा रसोई कीकर छोड सक ? चुल्हे मे मदी मदी आंच जागै ही अर साग पात रा डोंगिया गरम राखण सारू खीरां रै नेडै सी पड्या हा।

दाखा रो ध्यान आपरै बीत्योडै दिना कानी गयो, जद रामूडै रो बाप कायम हो अर गांव म खेत र महारै मू घर रो गाडो मज मे चाल हो। दाखा भाकरख जागर चाकी फोवती, गाय दूहती कूव सू पाणी ल्यावती अर रोटी पोवती। पछ भातो लेयर खेत जावती। घर धणी खेती री मौसम मे रुखाळी खातर बठै ही सूवतो। घर धिराणी सारै दिन खेत मे काम करती अर सिझ्या हुया पैली सिर पर घास री भरोटी लेयर गाय बाछी तथा टाबरां साथै पाछी घरे आवती। घरे पूगर बा रोटियां रै लागती अर टाबरा न जपायर घणी देर पाछै सूवती।

उण दिना सिर पर इतरो घणो काम हो, मिनट री भी फुरसत नीं ही पण फेर भी दाखा रो चित चन म हो, मन मे उमग ही। काया म हांगो भी हो। पण अब तो ये तीनू ई चीजां नी रैयी। न मन म कोई उमग ही अर न डील में बो बळ हो

रयो। फेर भी दाखा न गाडी धिकावणी ही इँ मातर वा घेग छोडर भाळी भोसा परदेस मे बठी ही। कठ तो गाव री लम्बी चोडी गुवाडी अर कठै कलकत्ते री छोटी सी कोटडी। कोटडी म रवणो भर भर सेठां री रसोई सू आप रो अर रामूडै गे पट पाळणो अब तो बस इतरी सी ही दाखा री दुनिया ही।

दाखां रै बडी बेटी ही, जिकी उणरै बाप र हाथा सू ही घर-बार री करी जा चुकी ही। लार दो छोटा टाबर हा—एक स्यामू डो भर दूजो रामूडो। छोरा रो बाप तीन दिन री ताप सू अचाणचक पग पसार लिया तो दाखां री दुनिया मे च्यारू मेर अधेरो ई अधेरो हुयगो। पण करै तो कांई? मरे रै लार मरयो नीं जा सकै अर किणी भात लारला न खडे-पगां करणो ही पडै।

अब स्यामू डै भर रामू डे रो सारो भार दाखा पर ही आ पडयो। एक दस बरस रो भर दूजो-सात बरस रो। ये टाबर कर भी कांई सकै? धणी बिना खेत पायदाछै भी आपर गलै लागया।

बाकी तो बस सूनी सी गुवाडी भर उण म दोनू टाबरा साथ उणा री मा कई दिन तो बिचारी मा किणी भात गुवाडी मे काढया पण आखर पेट रीतो रैवण री हालत आ बणी, जद गुवाडी छोडर दाखां आपरै पीहर आयगी—कबूतर नै तो कूवो ही सूझै।

पीहर म भी अब कांई पडयो हो? अठै भी पुराणा दिन बीत चुक्या हा अर नई बसती बस चुकी ही। मा बाप र राज मे दाखा रो घणो लाड हो पण अब तो अठ भावजा रो राज थापित हुयगो। दोनू भाई तो बिचारा दिसावर री नाकरी मे बळद दाई खटै हा अर आये महीनै टाबरा खातब घरा खरचो भेज हा। इसी हालत म दाखा अर उण र छोरां नै अब अठै ठोड कठ? थोड दिना मे ही दाखां देख लीनी क अठै निरभाव नी हुय सकै भर कोई दूजो ही उपाय करणो पडसी।

बास म मुरारका री हवेली ही। सजोग सू दाखां री मायनी उण घर री बेटी सुगनाबाई आपरै पीहर आई तो दाखा आपरो हिरदो उण रै आग खोल्यो। सुगनाबाई आपरी सायनी–सहेली री दीन–दसा देखर चिंता करी। पण वा तो बाणिये री बेटी ही। आखर दाखां खातर गलो काढयो। दाखा रा दिन गाव मे गुजरया हा। ई कारण न तो उण ने गीत मेहदी आव हा अर न टाको टेबो। तीन च्यार महीना वा आपरी भावजा री सेवा मे झाडो–मदी रसोई करणी जरूर सीख चुकी ही। इ कारण सुगना आप री मावसी र मकान पर रसोई करण खातर दाखा नै कलकत्ते भिजवाय दीनी। आखर डूबतै नै एक सहारो तो मिल्यो।

कोई दिन सुगनां री मावसी कलकत्ते मे बड सेठां री घरधिराणी ही । पण वै दिन बीत चुकया हा अर अब तो मावसी र बेटे री तीजी लाडी रो उण घर मे पूरा राज हो । बाबू र लाडी तीजी ही पण टाबर एक भी नी हो । बस, पहलो लुगाई री एक बेटी ही जिकी थापरै घर-बार री हुय चुकी ही ।

अभागियो कठ भी जावो पण विपदा लारो नी छोड । काळी माता र खेड मे किणी भांत दादा नै सरण मिली तो बारा महीनां बाद ही स्यामूडो भी गाप र बाप र मारग चल्यो गयो । लुगाई री जात विचारी दादा कोई दवा दारू नी करवा सकी अर छाती पर सिल मेलर भी सास लेवणो पड्यो ।

( २ )

आज तो बाबू मकान आवण मे घणी बार लगाई । रामू डो जाग्यो अर पाणी माग्यो । दादा निवाये पाणी साथ गोळी लेवण खातर कयो पण बटो नीं माग्यो तो नी ही माग्यो । रसोई म दूध गरम हुवतो । दादा टोपिये माय सू अधपाव लेडो दूध गिलास म लियो अर चीणी मिलायर बेटे न पीवण खातर पकडाय दियो ।

मा री या बात बेटै मान लीनी अर बोरी पर बैठर दूध पीवण लाग्यो तो रसोई र बार की खुडको मो हुयो । दादा नै ध्यान हो क बहूजी इसै बगत रसोई कानी न आ पूगै पण बा फिकर म ही । ई कारण बारै जायर बारचो देखै बिना ही बेटै नै दूध को गिलास पकडाय दियो ।

बहूजी रो सुभाव नाम-मारथोडो हो । भूखै घर री छोरी सेठाणी रो पद पायर बाफरगी । ताळी भी उणी रै हाथ मे ही । पछै हुकम तो उणी रो चालतो । बाबू न तो का बोलता और न ल्होडी लाडी री बात ही गेरता । बहूजी सगळ नौकरा रै नाका मे नाथ घाल राखी ही । गुवाळा अर मुनीम तो कई बरळ चुकया हा । बस, दादा ही किणी भांत बे सौ मे धिकै ही ।

बहूजी टेम-बेटेम चुपचाप रसोई कानी भी अचाणचक सभाळ लेवण खातर आवता अर ल्हुकर निर्णं करता क दादा के करै है, के खावै पीवै है ?

दादा नै बहम हुयो क बहुजी ल्हुकर रामूडै नै दूध पीवतां देख चुकया है । बा वेगी सी बारचै मे जायर देख्यो तो बठै कोई भी कानी हो । फेर भी दादा रो धडको नीं मिट्यो अर बा बहूजी रै ओळमै री सम्भावना सू भयभीत हुयगी ।

रामूडा दूध पीयर पाछो बोरी पर चादरो ओढर सूयगो । दादा दूध रो गिलास भली भांत धोयर न्यारो मेल दियो अर बाबू री उडीक मे चुपचाप बैठगी । न कोई बतळावणियो अर न कोई सुख दुख रो पूछणियो । सेठां री रसोई में विचारी बामणी माई बेटे नै लियां एकली बैठी ही । उण री आख्यां में आंसू आमगा पण बठै

आसु पू छणियो कुण हो ? बिचारी आप ही आपरा आंसू पू छया अर वतमान नें छोडर भूतकाल री याद कर लागी–जे आज दिन रामूडे रो बाप कायम हुवतो तो उण री या दशा नी हुवती। पण अर तो आखर काई कर ? दूजो कोई गैलो भी तो नी हो।

( ३ )

आखर बाबू री मोटर मकान मा पूगी अर बाबू कमरे म आयगा। आज बाबू अ फिस पाछै कारखानें नें भी सम्भाळयो अर मजदूरा रा कई भांत रा झगट सळटाया। ई कारण कोई साढे दस बजे आप मकान पूग सक्या।

दाखां आपरी त्यारी मे लागी। गुवाळो आयर थाळी लगावण खातर कयो। साग सगळा त्यार हा तो फलका पोवण मे कांई देर लाग ? दाखा चूल्है री आच जरा तेज करी अर खीरा काढया। बा वेगी सी दो फलका पोयर थाली सजाई अर गुवाळ न पकडाय दोनी।

आज दाखां पूरो ध्यान राख्यो कै फलक र खीरं रो एक भी दाग नी लागै साग तो बा सदा ही बाबू री रुचि मुताबिक बणावती। साथ ही ई बात रो भी पूरो ध्यान हो कै थाळी साथ नमक री कचोळी भेजणी न भूल।

गुवाळो एक दो फेरा फलका खातर ओर करया अर बाबू जीम लिया। अब बहूजी री थाळी सजाई गई यू तो बहूजी सारै दिन कई–न–कई लेवता ई रवता पण आपरो यो पक्को नियम हो कै थाळी पर तो आप बाबू र जीम्यां पाछै ई बैठता। बहूजी भी जीम चुक्या जद दाखा आपरी अर गुवाळै री थाळी लगाई। गुवाळो आपरी थाळी लेयर बारच मे चाल्यो गयो पण दाखा बठ रसोई मे ही बेट क न बैठर पेट नें भाडो देवण लागी। आज उण न नाज म कोइ सुवाद नी आयो। बा मोकळै साग साथै गासियो लियो पण फेर भी काई सुवाद नी हो। एक तो मान्दो बेटो अर दूसरो कटकसा मालकण रो भय।

दाखा रोटी खायर रामूडे न जगायो अर घरा जावण खातर त्यार हुई। रामूडे रै तेज बुखार ही पण फेर भी घरा जावणो हो। चादरो ओढर छोरो मा री आंगळी पकडी, इतर म ही गुवाळो आयर बाबू रै हुकम सू ई महीन र बीस दिनां रो तनखा रा बीस रुपिया दाखा न देयर बोल्यो—भूवाजी बाबू काल सू अठ आवण री आपन मनाही करी है।

दाखा र माथै मे सुन वापरगी। बा धूजत हाथां सू रुपियां लिया अर बेटै री आंगळी पकडर पढियां उतरगी।

आज गुवाळो भी उण न घरां पूगावण खातर साथ नीं गयो। बिचारी बामणी जिंदगी र भार साथै मांदै बेटै नें पीठ पर लिया बिजळी सू चमचमाते चादणें में भी कलकत्तै री सडक पर एकली आपरी कोटडी कानी घोर अधेरै म चाल्या जावै ही।

# बाळू रो आकार

जम्हाई लेती ऊध सू सेंठी भरचोडी, ऊटगाडी घमती घसती खसकगी। आगळियो तोडती हरख आप सू ई वेयो—ऐडी तो कोई बात कोनी, लारली रात सदाई जेडी ही। एक हाथ म बोबो पकडिया गुलाब सूतो है। भवरिया रा खरोटा हाल ही ठेरिया है वेई हाथ ऊपर कर न वा आपरा मौंर ताणबा लागी। आधी रात गया वायगे वाजियौ नै उण र पछ गिणती रा टपक्योडा टीपो रो असर देखीजे। पाडला भाटका नै ढाकरी जाळी मे ऊन्दरो कूदबा लागो बणती सरकौ नजर गूदडा माथै फिरबा लागी हरखूडी, हरखी हरख, भवरियो नै गुलाब नाम बदळिया नै टाबर जलमिया। उण गीली गून्डी माथ हाथ फरियो—गुलाबिये मूतरियो दीस एक उबाई लै वा अठी-उठी देयती री। ऊघ मे कमलिया भकबा लागा तो उण छाती माथा सू हाथ हवळे हगाय न एक कानी कियो—सपनो दख है। हवळै हसबा वास्त उणरा होठ अलघा हुया।

सामलो दपतर एकलो उण रै आखं गाम सू बडो है। तावडो तपता ई रेल पेल सरू। परकोटा ती लागोडा थान मात लादियो बीडियोडी है पछ तीन चार मोटरां हाल सकै जितरो चौडो पक्को रास्तो फेर लादिया बीडियोडी नै उणती धक्क हवेलिया री लेंण, एक एक टीबा सू होड करती, पण एक दाणो सरकतो नी, उणो र माथै रा खावा बदळना नी—जरई ता भडकती र। ऊन्दरो अलूमीन रा तासळा मे उछळिया हरख री आगळिया गुलाब रा केसा सू रमवा लागी। लाई रै गूमडिया होयग्या है, खाज ऊठती होवैला। नखा न चुभण सू बचावती वा आगळिया री पौरा घसबा लागी अर सहर रो हवा पाणी सफा गयो बीतो है। खायाडो ठहर तो ई नीं। बरस दो बरसा म ई सगळी आतडिया ढीली पडगी। खाता ई वार आबा वास्तै ऊधम करबा लाग। अलिया पर खाय गया न कीडा वाळ। काई भपूरिया बच्या है, वई भड जासी नै पछ थो कपाळ—वा हसण लागी उजास ऐडो इज होवै?

भरती रेत माय देखां तो कई रूप नजर आव। ओट सू धकळो नजर आव। आयूणां तावडा म हरखूनी देख री है। गू दी री चामडी जेडी एकवडी देही माथा सू कडप लागोडी चूनडी रपटती जावै। भली बात है बाई कणो चावै पण मंजा रो भो ई कोई ढग! धवक धवर्वे बणती पगां री छापा माथै चालता वेळा देख क धणी काख सू पोतियो काढ न माथा माथै बांध लियो है। मन्दर री धजा देखीजण लागी है। पल्लो खोल नै पाछो घू घटो काढ़ियो। रस्तो पकडो आवतां ई धणी र हाथ री लाकडी म जड्योडी घू घरा री बातो रै बीच म एकाधी ठठोळी सुणीजण लागी-हरखूडी माथो भटवयो सार तिसकी ओढणी रा पल्लो माथ खोस्यो—नी रे काली, ऊंची ऊंची न भपकी आई देखी जे।

कोई भणजाण भणहोणी बहू हुव आ बात नीं। सदा र ज्यू हो। तळाव है ना नाडो है। धरती तप न मेह आवला उण रै पैला थळी ऊपर मावैला। तली ऊपर आवला तो माटी फूट न बा आधी होवला। नीचै री गीली माटी आकरी पडगी—हरखूडी गाय नै टसकारी—सगळो वा खान खोद, माटी काढियां सू गो काम बण वरसात रा एक ई टपो बेकार नीं जाव। दूजो माटी सू बण ईंटां कजावो, ईंटा बणती देखी है? फूस री तह जिण र माय नीच मवा मे ढळयोडी काची ईटां कोयलां रो बूरो नैं दुहागण रा रूपडा जेडी बठण वास्त ढळियोडी कु वारी माटी, बावळिया आकडा री चिटक्या छाणा ज्यू खेजडा सू ऊचो चौंतरो हो जावै सुळगती सटियां खोता ई लाय लाग कितरो धुंओ ऊपजै पण माटी रो जातो गीलास नजर आव? कीं दिन गरमी रवै नाचतो उजियाळो ठण्डो पड जाव नै धुंओ आपरी गत ओभल हो जावै।

सो अठ रो जिसो ई है तिसो तो रवला। लू इणी धरती माय जलमी है घठ ई चालता फिरला। बारै मीहीना ओ ई पाणी पियो कदई तो नी होऊ? दोस दे नै मरम बाधणा है, काळ परो आयो तो रे—हरखूडी रो मन कीयो के बठरी पण तन नै मन रो कीयोडो दाय नीं आयो—आदमी उल्टी की ही, एक उवकाई र साथ टाबर रै मूडा सू बोबो छूटग्यो हो। रवतां देखता फेदला रा फेल्ला पडिया हा। की देर तक टाबर तडफडियो नै तवियोडा मूडा माय छाती घाल नै सोय ग्यो। पेट मे पड रह्या आटा न दबावतो दबावतो आदमी थाक नै एक कानी पडणो चाहतो हो। पण वो बठै थिर नी रै पायरह्यो हो। बाह उठाय न हरखूडा आख्या पोछी हो। पाणी रो भीणो परदो सरकतां ई नजर आयो हो'क मोर री चामडी काळी पडगी है, कठई कठई पापडिया नजर आवै है। टाबर न मरद कन सुवाण नै बा उठी। रस्ता म टेम नीं लागती, टेम मेटणो ले बदराज पुडीकी दी दी पण चूनिये न उण र बाप वाट नी देखी वा

किणरी बाट जाव ? एक कानी खोयाडी ओढ़णो तो दोना नै ढाकती-ढाकती वा ई पहगी—ए मालकजी म्हारा ए माऊडी म्हू

हरखूडी सामैं देख्यो, धरती आभा र बिचलो मारग माटी तो ओटीज गयो है। मोटर कन रा टीबा र लारैं देखीजै टीबा सू रेत नीच आय री है। उण न हसी ऊठी, टीबा सू उतरयोडो कठै जावै ? रेत री लीरघा तो रेत म इज बणैं। तो ई, इण माटी सू ईंटा सू नी जाणैं कद लीप्योडी आगणा री गार सू कितरा दिन तक मोह जोड्यो जा मक ? सगा मोह तोड्यो न ई बरस होवण आया है। खड खड तेज हुई व हिली नी। पग हेटै री जमी उण नै उठै ई चिपकाया राखती जाण पडी। धाधरा नै खावण वास्तै मू डो मारती गा न उण टसकारी पण वा नी सरकी।

सवार नै सिझा रो उजास एक जेडो ई होव। मोटर ऊभी हुई। बोहरो ऊपर सू पेटी उतारण लागो। मू गिया कमीज झटकतो कण्डक्टर बारै आयो। कवण्डर होठा सू लगाई जिण रै धु आ सू माता रो भरयोडो चरो हवीज ग्यो। सीट माथै ई ड्राइवर माको हुयो। उणै कण्डक्टर न आंख मारी, जवाब मे पारखी री बत्तीसी झलक गी।

'कठै चाले'क ?' कण्डक्टर पूछ्यो।

हरखूडी नी सुण्यो। नजीक आय न कण्डक्टर पाछो पूछ्यो।

मा-हिचकोला खाणा पडला। लटकयोडा टायरां री डोरिया देखती हरखूडी बोली।

काळी, हिचकोला तो लागला पण ठिकाणैं पूग जावला।' ड्राइवर कह्यो।

आपरै चेहरा मू जितरी भलमनसाहत प्रगट हो सक वा सब कण्डक्टर भेळी करण लागो।

वा चुप रही।

यारी रै कनैं बैठी सुआणी रो जीव दोरो होयो। वनैं बटा वा उण रै मारा माथै हाथ फेरण लागा—'थोडो औरी है। आगलो गांव आपणो है।'

सीट रै नीच मू लकडी खोसतो डोकरो अपणै आप सू कवण लागो—जमारो भोगण वास्त ई सीमो है।' बाळा नै आपरो बात सुणण वास्तै ई जोर सू कैणो पड ?

पण सब कैवै—दरजी रा बेटो जीव जितर सीवै।

कण्डक्टर न की मुसाफिरा रा भवरा साथ । मोटर चालण लागी । मगर री तकदीर में तो चालू होवण वास्त न चालतां चालतां पचरा लागणा लिख्या है। बा चालतां-चालतां ई खटाळो पण खटाळो थापरी गत चालता रैव ।

नोमटी रे भीष चालक बिना मौसम रो गेल गम राख्यो है। या बडा बाळा रो, साइकिल सुधारण वाळा रो, माली रो पान बीड़ी वाळा गो टापरो भेळो भवरियो ई है। उधार लियाड़ो रा गाळ यां हाथ म है।

'मू गुलाब र रमाव म्हू मांगन में जाऊ।'

'उहूं। साथे से जा। रमण ई नी द। धार जातां ई रोवण लागें।

हरख गुलाब नै दियो माय बठाण, बारी भवरिया री है। काई गोळियां ग्रिब में आवगी। बतायोड़ो माथे गोळी सू निसाण साध। निसाणो अचूक रवै। भवरिया रा दोनू ई हाथ गोळियां सू भरीज जाव।

आपरी मां पाई आय नै वो मांग—थो पारै परचोड़ो म्हनै द परी। कठ पाधू गोळयां! भवला नैं चड़ो बिणरै ई गूजिया कोनीं।'

मां-बेटो दोनू ई देग भवळा र माथ कितरा ई माटा छोटा छेद है पण सगळा आर-पार।

पेरचोड़ा कमीज री माथो ऊधड़चाड़ो जेब म हाथ घालतो वा हसणा चावै क बुरता रो पल्ला खीचतो भवरियो कैव 'दै नीं परो फाटोड़ो है तो काई पण जेब तो है।'

'म्हू उघाड़ो परी होऊला र, थू बाट परी इणा न।

बीजा टाबर नवी पारी वास्त त्यार है। वै भवरिया री बाट जोवै।

'वा तो करणो ई पड़ला पण भजिया बणण द। भवरिया री मल खडियोनी आंगळिया म गोळिया बाजण लाग।

गुलाब चू ई नी करै। वो धबकै पडचोड़ी गोळियां न देखण लागो। एक गोळी उठावतो हाथ सूटी तो भड़न ऊपर आवण लागो। वा री सूटी ताड़ा में चढी गिल्ली ज्यू बारे झाकतो री।

हड़बड़ी मे हरख गुलाब न काख म ले न सांम चाली। पग रफ्तार पकड लो। उठी सू एक जोग्न आय रह्यो है। दो ई चेहरा माथ हलचल है। मरद लुगाई कानी देख रह्यो है न लुगाई परकोटा र परली कांनी पाणो नी मिलण सू सूत्यली दूब न। आस रै साथ हरख उणा कानी बढ़ै।

'तुम समझती क्यो नही।' मरद लुगाई नै केवै, 'मई एक और खच बढ जायेगा जो अपनी दोनो की ग्राय के बरदाश्त से बाहर है।'

हरख नजीक आवै—'बाबूजी पांच पइसा !'

'माफ कर'—कैवण र साथै मरद रो ऊठ्योडो हाथ लुगाई री चुडिया सू लाग न रस्ता में झकार जळमावतो फेर लटक जावै।

इनके बरदाश्त का है।' आदमी लुगाई सू कव।

लुगाई एक बार मरद कानी देख जाण पूछ कीकर

हरख जमारो देख्यो है, उण नै ठा है के चाह्योडो यू ई नी मिळ। वा लारै लारै चालण लागै। उठीनै मिलकरोज री दुकान है। धकळा नै ठरता देख वा ई ठर जावै।

रसदार दूध रो टपो पट माय पडतां ई दोना री आख्या एक दूजा मे आप रा निज भाव सोभण लाग। होठ काटती लुगाई री निजर झुक जावै। आदमी रै हाथ री बातल सू टपो पड। मा रै हाथ सू तासळो खाच न गुलाब भारो कर पण तासळा सू भारी जमी टपा नै पना निगळ जावै।

बच्चा नै पाच पइसा दे दे रे बाबू।'

'जा न तुभे कह दिया।' मरद झिडकै।

रोवता गुलाब नै चुप करबा वास्तै हरख बोबो उण रै मू डा मे देवै।

मैं तो इजाजत नही देता तुम ,

आधो पावडो धक्क आय नै हरख केवै—'बाई बच्चो भूखो है।'

'चल यहा से ग दी शम नही आती।' मरद फुकारै।

लुगाई र होठा तक आयोडी बौतल खिमक जावै। मू डा तक आयोडो दूध भीत स थ नीचे उतरण लाग। मा रै झटका सू लारै भावण साथै टाबर रै मू डा सू बोबो निकळ जाव। घुण्डी माथ सू टपक्योडो गूगळो टपो रेत मे गम जावै। लुगाई घू ट लेणी चाव पण दूध गळै माय नी उतरै। वा थूकै हवळै हवळै रेतो रो गीलो गोळो बध।

मगती रा सूखा बोबा देखता ई आदमी रो ध्यान टूट। वो झपट—'हट नही तो पडेगी एक उल्टे हाथ की।'

हुरग गग्य । टावर रोवणो बन्द कर द । हुग्वड़ा म बन्दा सू गाट
गिराळसी सुगाई पाटिया माथ बातस पटक दवें । दुकानदार नै गाट इनायती मंच—
'बोल पचे सोटाओ ।' रेजगारी साणळा में गाम ै का पवर फार्ग ।

पाटिया माथै पढ़ियोड़ी बोतलां री गिरा मारी-मारी है । हवळ थाम गर
नवाई हया सू पतळी पारां माडी टेढ़ी जावा लागै । हुरग सोध क गेलां ग एरगाग
बिर्यां भेळी करै । एक र नीभ तासळो रार्ग में घुम्मु भरै भरै नं वा दूध गुलाब र
पू डा म पास ।

घोट पड़तां द लुगाई रा मौर म्नीजणा बन्द हो जाव ग मादमी न घेतना
पार्य—हैऽ उठी रो तो उण नै गुमान ई कानीं ।

□

# चिलत

कुनकी नै काल ताई आख्या र आगा पड़ी जिन्स भी को सूझती नी। उणरी मा उण न इण खोटी आदत रै कारण नित-हमेस दिरकारती। कुनकी न मा रा बोल ताता खीरा सा लागता अर वा आपरै मन मे भळै कदै ही इणतरै री भूल नहीं हुवण देवणै रा मनसोबा बाधती पण थोडी सी ताळ बाद उणरा मनसोबा, फक्त मनसोबा ही वणर रै जावता अर कुनकी सामी पडी जिन्स रै खातर ढढोळा मारती फिरती। कुनकी न आपरी इण आदत ऊपर घणी ही झु झळ आवती पण बात निजोरी हुती इण खातर मन मसोसर रै जावती।

आखा-वीज रै दिन कुनकी रै मनम अणभै जागी। जिकी कुनकी नै पगा मे पडी जिन्स भी नी सूझ्या करती, उणन आज ऊडी सू ऊडी मेल्योडी जि स भी सचड्ड दीमण लागगी। कस्तूरिय मृग नै सुगन्धी रो ज्यू अचू भो हुवै, त्यू ही ज कुनकी न आपरी अतदृष्टि ऊपर अचू भो हुवण लागो। वा इण बात रो भेद समझई नी सकी कै रातो रात आ अणभै जागी तो जागी क्यू कर।

कुनकी सदा तो सूरज ऊग्या पछ ताइ गूदडा मे पडी रैया करती, पण आज वा आपरी मा रै साथै री साथ उठ खडी हुई। उण नै इतरी वेगी उठी देखर मा नै थोडो इचरज हुयो जरूर पण उण भी बोलर कई कैयो कोनी। कुनकी उठती पाण घोळी माळी कु डाळकी उठा लाई। कु डाळी मे नी तो घोळी अर नी मसोतो। उण तुरता फुरत कोठलियै मे वडर घोळो री डळया काढी अर कु डाळी मे घालर भिजोयदी। घोळी भीजी जित सू पला एक ओढणियै रो चिल्लो फाडर मसोतो वणाय लियो। कुनकी घोळी घिरोळर आगण रै पसवाडली लीका देवणी पळायदी। घर रो आंगणो खासो वडो हो। आगण री पट्टी पूरी हुई जितर दिन खासो चढग्यो। कुनकी री मा जितरै रोटी

सात तयार कर लिया । उण चूल्है र कन ही बठी हली करियो—कुनकी ! रोटी लिरली, आवरी जीम ल ।'

कुनकी मा र हेलै रो काई उथलो नीं दियो । वा कुडाळी लयर पटव म जाय बड़ी । उण पडव रै आंगणै र भी क्यारू मेर पट्टी दवणी पैलायी । ता बाद, बार वाळी साल नी साळ, वाहरली छानणा ओटा, पागोथिया आदि सगळी जागा पटवा द नांगी । करड़ो मात बळा हुयगी । कुनकी री मा र या बात समझ म ही नीं आईर-भतावटै भताबटै सिरावण र सातर कूपण वाळी कुनकी री भूख आज कयू कर बद हुयगी ! वाळी वाळी कुडाळी न हाथ म लिया कुनकी न उणरी मा सावळ लवाळमीट हुयर देखी । उणन कुनकी म और तो कई फर निजर नीं आयो पण होंठों ऊपर जिको लहगो उणर पगा र हेठै दवीजता उवो गिटटां सू भी क्यार च्यार आगळ ऊंचो पढ़ग्यो दीस्यो । उण र मुहड़ सू अणचाया ही एक टको निस्कारो निकळग्यो ।

कुनकी र पटवा रा काम तो पूरो हुग्यो पण हिरमच आळो सगळो रो सगळो काम बाकी पड्यो । वा कुडाळी मेलर हिरमच आळी कूडी उठाय नाई । उणरी मा चूल्है कन बैठी वठी आवती हुयगी । वा उठ सू उठर कुनकी र कन आई अर हिरमच आळी कूडी, उणर कन सू लवतां बोली—'ना, आ थारी हिरमच हूं घसू जितर तू जीमल ।

कुनकी मा रो कवणो मानर चूल्है कन जाय र जीमणनै बठगी । रोटी रो पलडो टुकडो तोडर मूंड में लेवता ही उणरी मीट पसरी । उणन साफ दीस्यो कै—दोय थाळा ऊठ चोखी सजाई सजायोडा, उणरै गांव कानी एकापहल बूहा आव है अर उणा दोनुवा ऊपर बेलाम करियोडी है । धकलै ऊठ र आगल आसण म बैठ मोटियार रो चेहरो उणन सैंधो सधो लाग्यो । वा रोटी रो टुकडो मुहड़ मे लेवणो भूलर उण रो चहरो मोहरो देखण लागगी । गोरोगट्ट रग, गाला र ऊपर थोडी थोडी गुलाबी झळक, मोटी मोटी आख्यां तीखो नाक गुलाब रै फूलसा पतळा होठ मोती सा चमकता दात अर ऊपर लै होठ ऊपर फूटती सी रुवाळी माथ ऊपर वदेज रो फेंटो अर धोळो—धप्प जीणरो कोट, झीणी धोती अर मखमल र पटट री पगरखी देखर कुनकी छक्डाकम हुयगी । उणरी मा हिरमच घसर उणर कन आय बठी । उणन ध्यान मगन हुयोडी देखर बोली—कुनकी ! ले तू तो मज ताईं जीमी ही कोनी अर दख म्हैं थारी हिरमच घसर तयार करदी ।'

मा री बोली सुणर कुनकी रो ध्यान टूटयो । वा वेगा वेगा रोटी रा टुकडा तोड तोडर पेट मे न्हाखण लागी । सब्जी मे आज लूण कइ कमती अर मिरचा कई तीखी ही पण सुसकारा करती वा जीमली । बीजा सगळा जणा जीम भूठर पला ही निरवाळा

हुयोड़ा हा । कुनकी भी मां रसोई रा सामा गारो करण लागगी अर कुनकी उठनी ही हिरमच री लीको आळो काम साभ लियो । घोळी आळी पटी रै मोयल पासी एक हिरमच री लीक अर बारनै पासी कटवो जाळी वेवणी पळाई । रसोई रै आगली लीका दवतां उण आपरी मा नैं कंयो—'मा ! आगणै मायलो चौक तो तू घोळी सू चाक दै, तो ठीक रवै । बीजोड़ा गाडी, दडी गडियो, सतरजी, गमना इत्यादि हूँ सगळा पूर देसू अर हा, लापसी आळो बाट भी तो थनै तैयार करणो है, हूमें दिन कटै-पछलारा दिन अर अऊतिय रो थन, जावतो कांई जेज लगाब ।'

कुनकी रै घर म मा-बाप, बनां भाई अर हेतू मुनागाती कोई बीस आदमी एवं पगतणा ऊभा पण कुनकी खुद रै मन मे कोई न कोई खामी रवणी आसका बरावर बणियोड़ा ही । इण खातर पावणा रै हरेक काम री निगराणी वा खुद राखती । ऊठा रै नीरै चारै अर गुड़-फिटकड़ी सू लणायर पावणा रे पुरसारै तांई उण पूरी पूरी निगराणी राखी । गीतरण्यान बुलायर लावणो अर फूटर गीता न गवावण री सगळी जिम्मेदारी तो फक्त उणरै हा ऊपर ही । पावणा र आवणै री बधाई रै सायै ही कुनकी, बास मुहल्ल री सगळी गीतारया न भेळी कर'र ले आई । जीमणवार री वखत उणन भळै दोडणो पड्यो पण जवाई जीम्या बाद जद लुगाया पाछो आपरै घर जावण न सभी तो कुनकी उणा रै आडी जाय फिरी अर कैवण लागी क—'हूमे थे घरै जासो ? तो जावो ! म्हारी तो फिरता फिरता री टांग्या ही पिणिहागी गावण लागगी । थ जितरी वार फिरासो, थारै काम पड्यां हू इण सू सातगुणी ज्यादा फिरासू । भळ हूमें जज ही कितरीक है ?

लुगायां र भी कुनकी री बात हाडोहाड ढुकगी । व मगेरणै कन सू फिरोळो दमर पाछी आगणै मे जाय बठी अर 'आबा पाक्या आबली जी नीबूडा भाला खाय'-'गीत उगर दियो । कुनकी गीत र आवा, आबली अर नीबूडा री उपमाना रा उपमेय खोजण लागी । उणर सरीर म कपकपीसी छूटण लागी अर डील पाणी पाणी हुयग्यो ।

कुनका दोय-चार छोरया न साथै लेयर बैनोई नैं तेडण नै गई । कोटडी आळै झूपड री मारी माय मू वण झूपडे मे वठा मिनख्या रो जायजो लियो । सगळा जणा हसा ठट्ठा करण म लाग्योड़ा । उणारा बैनोई एक किताब हाथ में लियां बठा । खवासजी बठा-बैठा सुपारया भाग । उण झूपड र कवळै जायर होळ सी कयो-बनोई जो ! हालो थांनै घर मे बुलावै है ।

बनोई जी किताब नैं भेळी कर'र आपरै बाट आळी जेब में घालली । खवास जी सुपारी बिरखा अर खाटी-मीठी गोळया एक गमछिय मे बादर उणार हाथ म भलायदी । व ऊठै सू आळस मरोड़'र उठ्या अर पगरखी पर'र कुनकी र लारै लारै टुरग्या ।

रमोई म्राळे पनल पडवै म जवाई नै तेहए री तजवीज करीजी । बूढी ठाडी लुगायां म्रागण में बैठी गीत गावै । मोटयार-जवान बींदण्या अर छोर्‌यां छापरयां भेळी हुयर पडव मे म्राय बैठी । कई छोर्‌यां कुनकी री वहोडी बन नै पैराय माठायर पडव में लेय म्राई म्रर जवाई रै बरोबर बैठायदी । लुगायां म्रागण में बठो—दोयां बिच म्हांसू उट्यो न बठो जाय—पहेली गावै । छोरया-छपरयां जवाई कनै सू गीदी-तकिया मांग। जवाई नै म्रावै जिको बात रो तो उथळो देय देवै म्रर नहीं म्राव उण बात ऊपर मून झाल जावै । इयां करत्यां छोर्‌यां-छापर्‌या मसकर्‌यां ऊपर ऊतरी । बोली—'बनोईजी, इलायची देवो, डोडा देवो अर थांरी मा रा गोडा देवो ।'

जवाई तो छोर्‌या री बात सुरग्‌र चुप्पी साधग्यो, पण कुनकी नै छोरया म्राळी गोडां री बात ऊपर हसो म्रायां विनां नीं रयो । उण मन मे विचार्‌यो-छोर्‌या गोडा रो काई माथै मे फोडसी कोई छा‌रो तो म्रा बात कैवतो तो कई म्रोपती मी लागती । जितरै एक छोरी बोली— बनोईजी थे बठो जणै थारो पलां पोत काई टिक ?'

जवाई उथळो देव उण सू पला ही कुनकी इणरो जवाब जोय लियो म्रर उणर मूड सू निवळग्यो— टिकै भींट ।

जवाई म्रापरी मींट कुनकी कानी फेरी । वा पडवै मायली पट्टी र ऊपर बठो ही । उणन म्रापरै बैनोई री भींट मे भूल दीसी । व म्रापरी म्राख्यां हेठी करली । जितर एक छोरी बोली—बनोईजी ! थे थोडा ऊभा हुवो देखां, म्हारली बहिन सू कितराक डीघा हो ?

' कुनकी री म्राख्यां बनोई कानी गई । वो कठमनो कठमनो ऊभो हुयो । छोरया कुनकी री बहिन न भी ऊभी करी, पण उवरा पग सावळ सम्याकोनी, जितरै कोइ छोरी'र हाथ रो टिल्लो लागग्यो म्रर वा ढील म्र ग ऊभ बनोई रै ऊपर जाय पडी। बैनोई, उणनै म्रापरै बाथा मे झालर पाछी सागी जागा बैठाय दी । छोरया न म्रो एक तमासो लाग्यो म्रर व सगळया हडहड करती हसण लागगी । कुनकी तो इतरी हसी क हसतां-हसता उणरी म्रांख्या मांय सू म्रासू तक म्रावण लागग्या ।

सगळ गाँव म सोपो पडियोडो । कुनकी रा भाई भुजायाँ म्रापू म्रापरी जागां जा सूता । कुनकी न पडव कनली छानडी म जागा लाधी । रात जदमे म्राधी र म्रहसंळ म्रायगी ही, पण कुनकी र म्राख्यां मे वट तक नीं पड । उणन पडवै म्राळो भीत र म्रार पार रो देखाव साफ दीस । वा मूतिया रै मिस ऊठर बाड मैं गई । पडव री एक छोटी सी मोरी वाड म हुती । उण मोरी मांय सू भाक र म्रापरी मींट री जांच करणी चाही,

पण पडव मांयलो दीयो निदायाडो । कुनकी नैं आपरी वहिन री इण अणहुती हुसियारी ऊपर घणी ही भूभळ आई ।

पडव रे माय सू आवती सिसकारी री आवाज सुणर कुनकी चोकन्नी हुयगी उण आपरो जीवणोडो कान पडव आळी मारी ऊपर मांड दियो । हम उणन सिसकारा आळा सांस सपड़ूड सुणीजण लागग्या । वा कंई ताळ सांस रोक्यां उठहीज बठी रई । कुनकी रा काळजो फडक चढग्यो । वा उठ गु ऊठ'र आपर बिछावणां में आय बडी अर पगांथियें पडिय कावळिय नैं उठायर आपर ऊपर नाख लियो अर आख्यां नैं काठी भींचर नींद रें खातर ताफड़ा तोडण लागी, पण नींद री जायगा उणरी आंख्यां में—वसाख र महीणें मे चू चू करता चिडा सावण करें महीण भू कता गधिया, अर भादव र महीण ऊऊ करता गोधा अर काती रें महीण कूकू करता कुतीया एक रें बाद एक उभरण लाग्या । कुनकी रो सांस ऊफणण लागग्यो । उण आपरो पसवाडो फोरर सगळो डील माचे आळी ईस ऊपर नाख दियो अर तकिय नैं छाती हेठैं देयर ऊंधा फुरगी पण कुनकी र इतरो करणें रें उपरांत भी पडव र मायलो चिलत, सिनेमा आळी रीलदाई उणरी आख्यां मे नाचतो ही रयो।

8

# पीड री सिवात

हेटमी पेटी नै फेरू जचा अर इण छाबड़ी न नीका रख। देख, काई गुम नं हो ज्यावै। अर सुण रेडी नैं भास्त भास्तैं खींचज, कठ भाखड जावला तो जुलम हो जावैला। सो कयां रो ढेर वरा जावैला। इरा माय सगळी चीजा घणैं मोल री है। कांच रैं सामान नै सावळ लेजावण री दरकार है। दो चक्कर भोर लागैला। तू पग नी रगड। पगथळयां मे कांई मैंदी लागरी है जिमू हळवा हळवा चालैं? भोजू वेगो सो भाय'र बचोडो मामान लेजा। अर सुरा, खाट नै गेल मे भींत्यां सू नीं भिड़ाज कद पागां रो रग रगडक सू फीको पड ज्यावै—रेडी भाळ नैं बाबू पारस री घर भाळी ममता समभावणी देती जायरी ही भर वा हेटी खडी खडी धर र सामान न रेडी माय रखवारी ही।

सिझा रो वगत। डूवत सूरज री किरण्या कद कद छु ज्याव ही। इन बिन सामान नै रेडी में जचावण खातर चक्कर वरावर चालरयो हो। मोटी मोटी हिरणी सी भाख्या, टेढी भुवांळी भरैं पूर डील पर उमरेडी छाती भर ठमक ठमक चाल सू भडी फूटरी लागै ही जाण गणगौर हुव। सूरज री किरण्यां रो पडणो भर लुक जावणो भडो लागै हो जाण भणजारण म वा किरण्यां सू लुकमीचणो खेलती होव।

दफ्तर सू छुट्टी पा र पारम बाबू वेगा वेगा पावडा नपतो भायो। धर रो दरवाजो खुलो देख र सीधो चल्यो गयो पण भाज बुठेग सो नजरिया ही क्यू दूजा हा। समझ में नीं पडी क काई बात है दफ्तर गयो जद ताणी तो कोई वात ई नी ही। भो सामान क्यू कर लाद्यो जारयो है? अेक दीठ सू सामान न देख्यो भर दूजी सू घर भाळी न। दूज दिनां सू घणी सजडी खुसी सू अग भग फडक हा। भडी लाग ही जडी सावरा बिच बादळी। पण वी देख्यो ही कोनी क पारस वाबू कद भायो?

कांई बात है ? पारस वी रै लारलै पासै जाय ठन्डो हो'र पूछ्यो। कोई पडूतर नी मिल्यो। ती बी पारस कानी देख्यो अर नीं पारस री बात ईज सुणी।

'मैं पूछू हू कै कांई बात है ? ओ सामान क्यू लाद्यो जारयो है ?

'मार्पा न ई मकान मे नी रैवणो है। दूजो मकान तळास्यो है। आज बठ हो ज जाणो है।'

'पण उतावळ बिना बात री ही ?'

'ई सहर म मकाना रै पळीनो लागरयो है। भलेरो मकान मिलै हो कोनी अर जे कोई खाली हुवै तो रातू रात लोग पूच जावै है। घणी धोसीसां सू अेक मकान खाली हुयो है। बेगा जाय'र कब्जो करा।'

'आखर कुणसो मकान जचायो है ?'
वो ही, हरै रग आळो।'
'सरमा सा'ब रै मकान रै आथूणी कानी।'

सरमा सा'ब री नाव सुणीजता पारस अवक्ल घैरक होयग्यो। लारल पांच छै साला सू सरमा सा'ब, पारस बाबू रो लगोटियो यार बणोज र रवतो। आपरै दिल री अेका अेक वळी पारस रै आग खोली ही। सरमा सा'ब रा न्निमान क्यू भलेरा आया जद वी री नौकरी अेक्साइज में लागगी ही। ऊपर री चोखी कमाई सू सरमा सा'ब कहीजण लाग्या।

पारस रै दिमाग मे सरमा सा'ब री पुराणी दास्तावा ताजी होवण लागी। इया ही कई कद रात बिगत पारस री नींद उचट जावती अर सरमा सा'ब री पुराणी कहाणी सामनै चक्कर काटण लागतो। खाट पर पडै पडै रो काळजो धडकण लागतो। धरती फिरती सी निजर आवती। सावण रा हिंडोला वी री आख्या र कोया माय भाग खावण लागता अर बो वासू दूर अर दूर। मान्यो—ओ घर अब पीग पर चढरयो है। एक एडी पीग जिण न सरमा सा'ब और दूर लेजाण री कसमकस कर रह्या है अर आपरी पूरी ताकत सू पसीनो पसीनो होरयो है। पारस हटतो हटतो दूर लारल पास सरकतो जारयो है जठै ऊबड खाबड दरडा अर भाड भखाडा हैं सिवाय कालिख ई फल री है।

सामान रेडी पर लद चुक्यो। ममता बी नै सावचेत कर र बोली—मैं रेडी रै साथै साथ चालू हू थे आवता खेप रै साथै बच्यो खुच्यो सामान लेय'र जाजो। आ कैह र बा रेडी रै साथ साथ चाल पडी।

अेक नुवी उमग अर हरख म रम्योडी ममता रही र लार लार भूमती सी व्हाली। पारस देख्यो व्हाल में एक अजीब सो नमो हो। माथा ठणक्यों। वहम रो पडदो हवळा हवळा दूर जावण लागो अर आख्या रै सामे नुवै पडद री पडता विछीजण लागी। दिमाग मे अेक पूरी रील घूमण लागी। हुवै न हुवै बीं रमलीला री नायिका कोई दूजी नी हो सकै। अेक फरेब र साथै जीवण रो मेळ क्यूं कर निभला? चढती उतरती लहरा हियै ने उथळ पुथळ कर नाख्यो। पण आ नी हो सकै। घणो ही मन नैं गतो म करण री सोची पण हो नी सक्यो।

रेडी जा चुकी ही।। घर रा सामान इनैं वि नै बिखरयो पड्यो हो। बी नैं ठा ई नीं हो क के लेजावणो है अर के नी लज्याणो है। बी र दिमाग म तो अेक नुवो ही भूत सवार होरयो हो। बिना मुतबळ घर बदळीजणो अर बो ई इतरो उतावळो। सिर रो दरद घणो घणो तेज होवण लाग्यो रीळ चालणी सरू होगी। माथो थाम पारस बाबू अेक कूण में बठ'र गुमसुम होग्यो। आ ठा ही नी पड्या कै सिझ्या र सात रो बगत हुंगो है।

नुव मकान री उमग ममता र मन मे हळचळ पदा करण लागी। मकान अर पडोसी न्यारला भी माडा नी हा पण सरमा सा'ब रो पडोस बठै कठ? जद जद ममता सरमा सा'ब सू मिलण आया करती दिळ मे अेक धडकण रैवती। आती जाती नै लोग नी जाण किण निजरा सू देख्या करता। आ अबखाई क्यू कर रव? इण न मिटाणो जरूरी हो। आज सू वा घुट घुट बतळ करया करला। पीवर मे ई सरमा सा'ब रो घर बार पसवाडै हो। दादा मा किसणी दर लाई परिया री कहाण्या सुणाया करती। कहाण्या रै बहान बो रोज रोज रो मिलणो। श्यामजी र मेळ मे तो घणी चीजा लाया। के के खरीद्यो थो तो जद बेरा पड्या जद घरा आगण मांय सारी चीजा नाखी।

बीबीजी सरमा सा'ब कह्या है क ओ मकान ठीक कोनी।

कठै है सरमा सा'ब?

लदकाऊ री गाडी सू गया।

कठ?

आ तो नी ठा पण सगळो सामान लेग्या अर सरी छुट्टी करग्या। जाती बगत आ कह'र गया है कै बीबीजी नैं बोल दीजै क ओ मकान चोखो कोनी।

पण क्यूं अर कठ गया?

आ तो मन नी बतायो पण ब नौकरी सू गया। काळ सिज्या सदा खातर नौकरी सू छुट्टी पा ली। उदास भी हा।

ममता र मुंडै री भ्राव जाता री। भ्रांख्यां रा कोया फजळाग्या। पगा री पगथळयां भरतो मू चेप हुयगी। सुराणती मिनख ज्यू हालत होयगी। नीं हा भ्रर नीं नां। कस्योडो डील ढीलो पडग्यो। पिथराई सी पिरछांई रै ज्यू फिर'र रेडी भ्राछै न बोली—पूठी मोड रेडी न। पाछा घालस्यां। इण घर मे कानी रवणो।

क्यू काई बात होगी ?

पाछो घाल।

रेडी र साथ भ्रांवती ममता नै पडास्यां ओळखी। दिल री पीड सारै ग्लि पर भ्रळक री ही। हुवळी हुवळी चाल उतावळपण धारयां। देहळयां चढती बोली—सामान न ठिकाण लगादे। रेडी भ्राळ सामान उतार उतार भ्रांगणै मे राखणो सरू करयो।

वी खडी खाट न भ्रोको भ्रर बठई निढाळ होय'र पडगी। पारस भ्राय'र पूछयो—पूठी क्यू कर चली भ्रायी ?

बो घर चाखो कोनी।

पलां काना देख्यो हो क ? पारस क्यू सभळ र बोल्यो।

पडोस ढग रा कोनी। इण वास्ते पूठी चली भ्राई। मेर माथ म पीड है थे सामान न ठिकाण लगावो।

पारस र माथै री पीड ठाक होयगी भ्रर बो सामान न ठिकाण लगाणै री सोचण लाग्यो। बठीनै ममता रै सिर रो दरद घणो घणो बढतो जारह्यो हो भ्रर बा उतावळा उतावळो ससकोडा म.र री ही। भ्रेक पीड री सिवात, भ्रेक सिवात री पीड।

# गुजारो

वा लेक्चरार सा'ब नै क देसीव अब वा काम करण र वास्ते नी आवला। उणन पीता र कस्बा माय ई डर है कै कदेई कोई उणरी इज्जत माथ हाथ उपाड लाई। उण मे अेक अडो खीचाव है क चालता लोगां री आखा उण माथ जम ईज जाव। वा नीं तो बरफ जडी गोरी है अर नी ई इतरी करूप है क देखता ई घ्रिणा व्है जावै। वा सावळी है। लेक्चरार सा ब र वठ काम कर है अर उणरो गुजारो की कर'नै ई हो जाव। लेक्चरार सा ब र घर सू पीता र घर तक र रस्ता माय चालती थकी उणे पोता रै लारै कई वार छोरा रै मूडा सू सीटया निकळती सुणी है। अर कई वार भूडी भूडी बाता ई। साळी गजब रो माल है। देखतां ई मूडो पाणी सू भरीज जाव। अब वा अठ नीं रवैला। पीता र मामा रै गाव जावैला। वठ सेठा र घर है। उणरो पेट तो भर ईज जावला। खाणो बणाय देसी अर पाणी रा ठाम भर दसी। वठ मगरो नी है नीतर लकडिया लाय नै बचती। यू वठै हाल ताई फेमिन रो काम भी चाल रह्यो है, पण वा फेमिन मे हर्गिज नी जावैला। वो नरक है। भुगत'न बठी है वा। उणनै हाल ताई याद है क

—कैसी! अोसियो उणरो नाव बोल्यो।

वा हाथ जोड न सा'ब र आगे ऊभी होयगी।

सा ब उण कानी देखण लागा। सावळा रग री दुबळी-पतळी केमी सोच्यो, सायद सा ब अब आख मारला पण आख नी मारी। मस्टरोल म हाजरी भरावाळा मुरारी कानी देखता थका बोल्या - काम माथ तो बराबर आव है नी ?

—'ना सा ब बीच मे दो दिन गैर हाजर रौ। मुरारी सा ब र कवण रो थ समझ लिया हो।

कसी र तन म लाय लाग गयी। वा बाली– ना सा ब, म्है तो रोज आऊ। ारी तो भूब बोळ है।

—'साळी, भूठ बोल है पू मुरारी भाग फेर की बकतो, पण ओसिया उणन चुप राखतां कह्यो—भा ता तू ठीक नीं है। म्है किणी रो भी पगस नीं लेवू ला। पछ केसी री कांनी देखतां थकां कह्यो-देख भ्रठ भाव, रजिस्टर तो भ्ठ नी बोलतो ? देख, इण मे गेर हाजरी लागी है।

वा चुप ही। भोसिया बैसी र हिसाब रा पईसा गिण रह्यो हो। मुरारी सा ब रै कन इ ऊभो हो। केसी न मुरारी माथ सक हुयो। मुरारी ई गर हाजरी लगा दी होवला। साळो हरामी! कमीणा! नीच! पराई-कु वारी छोरियां माथै हाथ फरे। साळो खुद ऐस कर भर सा ब नें भी राजी राखें। कदेई नोट पकडाय न तो कदेई कुकडी देय न ात बितावा सारू कोई रूपाळी छोरी इण तर साब रो मू डो बंद राख्यो हो। साळा, कीडा पडसी थारी माटी म। वा मुरारी री पकड मे नी भ्राई, तो गैर हाजरी लगाय दी। नकटो कठई रो ई! वा कोई रम्भा नी हैं सीता नी है भर फूली नीं है क सरीर बचती फिरै! वा केसी है पकड मे को भाव नी भोथरा गडासा सू माथो उतार फक देवैला, कदेई माख उठाय न ई उण रै कानी देख्यो तो

—'ले गिण!' भोसियो उणन हिसाब दियो।

गिणण सू मालूम हुयो कै दो दिनां रा पईसा काट दिया है।

—'भ्रब बराबर भ्रावजै।' सा'ब कह्यो।

कुण भ्रावला! भ्रब वा नीं भ्रावला इण नरक मे भ्रठै भ्रंडा चोर, गुण्डा लुच्चा-लफगा है जिका ऊपर सू तो भ्रेकदम साफ है पण घट मांय गन्दगी रा ढेर है। पण वा पौता रो सरीर नी बेचला। भ्रो वेळा री रोटी तो कठ इं मिल ई जावैला।

भ्रर पछ फेमिन र बाद, लेक्चरार सा ब रै घर खाणो बणावण जावती री।

भ्रर केसी सडक माथै चालती री। काळा रग रो कोट परघोडो भ्रेक भ्रादमी इण रै कन सू चाल्यो। भ्रधारा र कारण घरो साफ नीं दिस्यो कुण हो? लाग्यो भ्रोळखणो ई वर होवैला कोई, उणन कांई करणो है - फेर की दूर, पान र गल्ला माथै कालेज रा तीन छोरा ऊभा-ऊभा सिगरेट ताण रह्या हा। साळा पाक ग्या मा बाप रा नग। लफगा! काल री ई तो बात है क सुनारां री गळी माय बाणिया री री भ्रेक भवा छोरी र गळा माय सू सोना रा हार लय र भाग ग्या, दो छोरा भ्रधारा म बापडी छोरी उणां न पहचाण ई नीं सकी। थाणा मे रिपोट इ दरज कराई, पण पतो नी लागो।

ण आवारा छोरा रो कोई भरोसो कोनी। कद काई कर ले ? पूं उण रे कनै कौ भी नी है। सावली पतळी देह र सिवा। पण उणनै विश्वास नी आव। कद साळा रै दिमाग माय फितूर ऊठ अर उण र साथ की रो की कर ले इण कोळतार री ठाडी सडक माथ उणनै पकड न सडक सू दूर किणी सूनी जगां ले जाव न जगळी पणो कर नी ले ! ऊ हू कीकर पकडै वा भी तो देख ! वा कोई कमजोर थोडीइ हैं सोचती थकी वा आगे चालती री। छोरा उण री तरफ देखण लागा तो वैसी र सरीर माय भय सू अेक ठाडो सिरहुरा चाली। उण री छाती ऊपर रे हुवण लागी। हरदै री धडकणा तेज हुवनी मैसूस होवण लागो। गल्ला लार रग्यो। सडक रै मोड माथ वा आ गी है। अब सीधी सडक है अठा सू थोडी दूर चालीय अेक गळी आसी अर उण मे वा घुस जावैला। गळी खतम होवै वठ उणरो अेक छोटो कमरो है। वसी र आगे लारे कोई नीं है। एक भाई है जो उण सू पाच वरस बडो है पण वो नीं हुवण रै बराबर इ है। मा बाप जो पईसो टको छोडन ग्या हा वो ता सारो ई सारो अेक ई झटका माय भाई उडा दियो। फेर कमावण री बात आई तो सनीमा रै गट माथ रग्यो। अर कदेई चोर री तरिया दारू री बोतला भी वचतो रवता। रात मे वो कुत्तरा री भात घर मे आवनै मूज र टूगोडा माचा माथै सोय जावतो। सुब आभा माय सूरज भगवान मगरा सू दो गज ऊपर चढवा र पछ वो उठतो। घर मे चाय नी बणती ही। हाथ मू डो धोय रात री बासी रोटिया ई रात मिरचा री चटणी सू खाय नै पोता री रोजीना री जिंदगी बितावण सारू निकळ जावतो हो वार वो काई करतो अर काई नी करतो केसी नै की ठा नी हो। वा मेहनत मजूरी कर'न पट भरती ही।

अेक दिन सांझ री टम वा घरै आई ही तो उण देख्यो कै कमरा म फस माथ खून रा छींटा बिखरयोडा हा। अर उणरी साथण सरजू रो रह्यी ही। घर रै बारे मिनखा री खासी भीड ही। भाइ ए सरजू री इज्जत माथै हाथ उपाड्यो हो। सरजू री जिंदगी माय काटा बोय दिया हा। इण केस माय भाई न जेल होयगी। जेळ मे गया न अो दूसरो बरस चाल रह्या है।

वा पोता र घर म आगी है। काल नेवचरार सा'ब सू कवलाक अब वा काम करण वास्त नी आवला। उणनै रस्ता माय डर लाग है। अेकला जाण'न कोई उण र साथ बदमासी कर सकै। किणी रा ई री भरोसो नीं कद किणी री नीयत माय खोट आ जाव।

—'अबै म्हैं नी आवू ला, सा'ब'

—'क्यू ?

—'मामाळ जाय री हू । अब वठ ई रेवू ला ।' वाणी वीवर कैवे के इण मस्वा माय उण री इज्जत असुरक्षित है ।

—'आज सा'ब रा तो आवज परो । खाणो ई बणाय दोजो अर हिसाब ई ले जाजो ।'

सा'ब री आ वात केसी मजूर करी ।

साब रा खाणा त्यार हुवण रै पछ बारणा माथ ऊभी केसी की सोचण लागी ।

— काई सोच री है केसी ?' सा ब पूछयो ।

—'अ धारा मे डर लाग है । किणी न साथ भेजो ' चहरा माय उदा सीनता तिर री है ।

—ठर अबार लडका पढण नै आवता ई होवला ले गिण भो आज तक रो हिसाब ।

उण नोट लिया अर गिणया । हिसाब पूरा हो ।

थोडी जफ पछ छोरा आया । सा'ब अेक सू कह्यो क वो केसी न घरै पूगा न आ जाव । केसी उण छोरा सार्थं चालण सारू त्यार होयगी है ।

रस्ता मे बे दोय जणा साथ साथ चालता रह्या । दोनू जणाँ आपस मे की वोल्या नी । सिरफ दोय जणा अेक दूजा री तरफ देख न मुळक जावता ।

केसी रो घर आग्यो । दोनू जणा घर माय आया । पास-पडोस मे कोई नी रवण सू गळी मे खामोसी है । लडको उण री तरफ देखण लागौ । केसी समझयो के वो जावण री अनुमति आखा सू मागतो होवला । वा भी उण री तरफ देख न मुस्करा दी वो उण री तरफ बढग्यो । वा डरगी । उणर डरता ई छोरो कूतरा री भात केसी र माथै झपटयो अर झट सू जेब मायली रूमाल निकाळ न केसी रै मू डा मे ठू स दियो । वा घडाम सू ठण्डा फश माथ पडगी । लडका र हाथ मे चमचमावतो चक्कू हो— खबरदार ! चू भी करण री कोसिस करी तो ओ चक्कू छाती रै आर पार कर देवू ळा ।

जीवण रो मोह किण न नी है ! केसी चू तक नी कियो । सब सहन कर लियो रोवती थकी

जावती टैम वो लडको कव'न ग्यो—सा ब नै बात कव दी तो थन जीवती ई जमीन में घालू परी ।

वा रात भर रोवती री। अब अठ नीं रेवैंना। कितरो दोरा है पेट भरणा आसवर उण लडकी रै वास्तै, जिण र आग पूठ काई नीं होवै।

वा मामान मागी। पाणी भरण रो काम करसी। रोज रा पच्चीस–तीस ठाम हो जावता। अेक ठाम रा दस पईसा है। आखिर पौता र आवण खचौं मामा रै छोरां माथै पडण नीं देवती।

दो महीना पछ

अेक वार राजा करण री वेळा अेक सेठ रै घरै पाणी भरण साम आई। उणनैं घर सूनो लागो। आज सारा ई कठ ग्या?

—रैमी! आज दो-तीन ठाम ई भरजे। सेठ रै लडका री आवाज है।

—'क्यू?

—काल सांभ रा बाबूजी अर बाई टावर टींगर लेय र विवाह म ग्या है।

—तो ठीक है दो तीन ई भरूला।'

पाणी रा तीन ठाम भरण र पछै

—'अेक ठाम ऊपर मैडी माथै रख आवज

वा ठाममेलवा मडी माथ चढी क लार-लारै सेठ रो छोरो भी ग्यो परो। अर ऊपर ही ठेठ लारला कमरा माय केसी नैं पकड लो। वा सब समझगी। वो उणनैं दस रुपया रो नोट पकडावण लागो। वा लेवण सू नटगी।

—अठै काई नीं देखैला वो उणन खैंचवण लागो।

—छोड म्हनैं वा दोडण री कोसिस करण लागी पण लडका री पकड मजबूत है।

—'साळा! जगळी! ऊ ई ई उफ ऽऽऽ

अर दस रा नोट रैमी र हाथ म है।

आज फेंर ओ काई हुयो? अठ वा सुरक्षित ही फेर कोईर हुया? सरीर बेंचण रो घ धो तो वा पौना रै कस्बा म भो कर सकती ही। अठ आवण सू काई होयो? सब ठौड सरीफ बदमास है। कठेई जीवणो ठीक नी है। पर अगर जीवणो चाव तो उणनै आज री इण गन्दी परिस्थितियां सू समझोतो करणो पडला। उणा न कितरो आराम है जिको समझोतो कर बठी। रम्भा सीता अर फूलो काई ग्यो उणा रो! सिवा अेक बार बिस्तर माय सोवण र! अर बदळै म दस रो नोट काई वा भी इण परिस्थितिया मांय पौता न फिट करैला? फेर कितरा आराम होवला! मन रो आढ भी लेवैला अर खाय भी। पण वा हाल तांई कोई निणय नी ले पाय री है।

△

# इयाहो

सीयाळ री रात न जद म्हू बार निकळयो तो रात बेहद सुनसान ही, का
अधारी रात, भाड पाहै धोस्या फाट र दवा तो भी की नी दीखै काचा हू दा री भीत
भी काळो स्याह् निजर भाव । सी मी री इकलग राग धरती स्यू निकळ, भाभै
तारा चमक भाखो गाव जाणै भधेरै री गुफा मे घुस्योडा हुवै । म्हू घणी देर बार को
ठहर्यो । पूठो जाय र म्हारी रजाई मे बडग्यो, मोडै ताई नीद कोनी भाई तो मीराण स
एक बीडी काढी भर सिळगाई तो कोठै रो अधारो एकर चाणचकै उडग्यो तिल्ली बुझ
ही पूठो भा बडग्यो बीडी । पीवत म्हू भा बात सोचण लागग्यो के सहर री जिन्दगी
ई गाव री जिन्दगी मे कित्तो भातरो है ।

बीडो जद खींचू तो बी टिमको र उजास मे म्हारलै काचै कोठै री भ
चमकै । जगां जगा खाडर खोळा होर्‌या हा । उजास मदो पडतां ही गाव रा खा
खोळा रा चितराम म्हारै काळजे में मड ज्याव । ई गावड म बिजळी नी, पाणी नी बो
भधारपख गाव बस्यो जद बडधो हो, पूठो नीसर्‌यो ही कोनी । इकसार एक ठौड ठर्‌यो
जिन्दगी सडयोडी सी साडयोडी-सी ।

- म्हारी बीडी ज्यू स्यू बुझण मे भायगी ही बार सु कू टो खडक्यो, भाई
भाईजी ।

—कुण है र ?

मैं हू काळू ।

—काळू इतारा किया ?

— खोलो तो ।

म्हू कूटा खाल्यो, काळू मायनें श्रायो। बी श्रधारें म काळू री पगचाप सुर्णे ही, काळू कोनी दीखें हो, म्हू सीराण स्यू दियासळाई काढी, एक सीख सिलगाई घर पासें पडी चिमनी जगाई। बी चिमनी रें च्यानण मे काळू री मूडी सी सकल दीसी– दाढी रा बाळ बध्याडा, आवळ कावळ मूछ्या, ऊधो सूधा साफलियो घर वदन एक बोदी सी रजाई में लुकयोडो हो।

पगाथियें बठ र काळू बोल्यो—भाईजी छोटडिय रें मेलरिया ताप चढरी है, ग्रावळ कावळ करें है।

—ग्रच्छ्या, म्हू कह्यो पण मै करतो कांई ?

म्हू काळू रें साथ चाल पड्यो।

काळू रो घर मेरें नेड ही है मकान पूरा काटीलो बाड सू ढक्योडो, बारणें म लाग्योडो एक फळसा। काळू र रैवण साल एक खुड्डो, खुड्डी म दो माचा एक माचें पर चिमनी रें च्यानणें में उपराथ मे सामटेडो बीरो छोटडियो। मैं खकारो कर र मांयन बड्यो हो, जद काळू री बहू ग्रापर लीयडेड ग्रोढणिये मे चौगडदें ढक र माच र पास बैठी ही, दूजें माचें पर काळू री मा बठी ही।

छोटडियें रो मूडा ढक र देख्यो तो ताप बग्रोसाण ही। म्हन देख'र काळू री मा बोली—थे स्याणा हो, कांई करा, टाबर तो बचेत हारयो है।

म्हैं कयो—म्है तो इत्तो ही स्याणो हू, माजी, जित्तो सहर रो ग्रादमी स्याणो हुवे, म्है तो इत्तो बुखार ग्रावण सू पली टाबर न ग्रस्पताल दिखावा, ग्रठ ग्रस्पताल ई कोनी, फेर म्हारी स्याणप तो खतम, ग्रबें तो थारी स्याणप काम देसी।

—म्हूं तो कह दियो, माजी बोली, ई रें फीटोडो है, कासी रा बरतन ई रें ऊपर ऊवार'र मेल दियो ताप ग्राठ पोर मे ग्रापी उतर ज्यासी।

—ग्रापी उतर ज्यासी ? मैं ग्रचम्भो करया।

—म्हार तो ग्रापी उतर ज्याव। कोई डाक्टर नी न कोई वद, म्हारी तो भगवान ही पार पाड, ज्यादा करो तो रामदेवजी री सवा मणी बोलदघा, रामदेवजी म्हाराज री ग्राडी ग्राव।

काळू गुमसुम खड्यो हो, काळू री बहू छोटोड पर ग्रापरा हाथ मेल राख्यो हो ग्रोढणियें र सार बीरो हाथ कदे कद दीख ज्याव हो, बीरें गोर हाथ म दा काच री चूडिया ही।

चालतें चालत म्हूं भी भगवान रो नाम लियो बीरें ग्रामरें री बात कयी, जठे कोई ग्रासरो नीं दीख बठे भगवान रो नाम ही ग्राडा ग्रावे। म्हू पूठा ग्राय र मोट

तांई नींद नी ले सक्यो, गांव आळा री जिन्दगी सारू सोचतो रह्यो के अठ जिन्दगी कित्ती मेंगी है अर मौत कित्ती सस्ती ।

दिनूगे उठ्यो तो म्हारल कमर में उजास हो, बार कागला बोलण लागर्‌या हा, बार आय रकी दर तावडिय में बैठो । आकरो आवरो तावडियो बडो जी सोरो कर हो, सामले कोठ री छात पर एक कारडोड बठयो हो, की गुरसल्या माटी मे मूंडा मारै ही, पसवाड नीम पर कागला 'कुरा कुरा' करै हा, चिडी, चिडकल्या फरर, फरर, फरडाटो मार ही दो एक कमेडिया इन्नैन्ही न उडती फिरै ही ।

म्हूं हेलो मार र काळू नै पूछ्‌या — छोटडियो किया है रे ।'

पूठो उथळो आयो — अबार तो ठीक दीख है, दूध पीवा है ।

स्यात रामदेवजी की आडो आवतो दीख्यो ।

× × ×

नहा धो र रोटी पाणी कर'र गाव मे निक्ळयो तो गुवाड म कई जणा होको पींवता बात कर हा । रामा स्यामा होवण रै बाद बांरी आपरी बात ओजू होवण लागी अर म्हनै बतायो के आज कूअ मे पड र दो छोर्‌या डूबगी ।

—कद, म्हैं पूछ्‌यो ।

—थानै बेरो ही कोनी, ब बोल्या, गाव मे तो सारै हाको फूठरयो है, थे अबार ही आया हो कांई ?

—भाई, म्हनै आयां तो दो दिन हायग्या, पण घर सू अबार ई निक्ळयो हू एकलो हो घर मे, बतावै भी कुण हो ।

—अच्छा, पण थ फळस कानी पधारो, सहर रा जाणकार आदमी हो, बात न रसते लगाओ,

— बात काई हुई ?

—अजी कांई बात ही, नौ दस बरस री छोरया है आपण अठ नायका री, कूअ पर खेल ही । खेलता खेलता एक री आढणियो कूअ कानी चाल पड्यो, बा पकडण लागी तो मायनै चाल पडी दूजी बीनै पकडण लागी तो बा भी चाल पडी, दोनू पडगी अर मरगी । पुलिस आळा आया है डाक्घर ओजू आयो कोनी ।

म्हू भी सीधो ही फळसं कानो चाल पड्यो । कूअ र सार ही माडी सी भीड हो री ही । म्हू भी भीड में खड्यो होग्यो । म्हन देखतां ही दो चार मिनख म्हारै सार आ ऊभा । सारी बात बताई । दो पुलिस रा सिपाही दा मरी लासा र सा'र खड्या

हा । छोर्‌या र ऊपर भीणा सा ओढणियां दे राख्या हा । मातम रो भूंडो कालस देखण आळा रै मूं डै पर आयेडो हो ।

—कुण गयेडो है डाक्टर नैं ल्यावण न, म्हैं पूछयो ।

—सरपच अर छोर्‌या रो बाप का हो, बा बतायो ।

—क्या सू गया है ?

—जीप सू, जीप किराये करी है, बतावता एक मिनख कोजो सो हसी, मुळक्यो ।

म्हैं बीरो अरथ समझग्यो ।

—कित्ती देर होयगी ?

—दो घटा । बा ग्रोजू मुळक्यो बी सागी ई अरथ म ।

—ग्रोजू कानी आयो ।

—आवतो सा आसी ।

पुलिस आळा आपरै डंड सू पतलून सी झाडी । म्हैं मन मे कह्यो, ई गाव में कानून कितो वेगो आवैं, सुविधा तरळो मारता ही कोनी आवै । म्हार मूंड मे खाटो खाटो कडवास वापरग्यो ।

म्हैं जाय र फळसै सारै एक चूंतरी पर बैठग्यो । बठ राज री, देस री चरचा होरी ही, ब चरचा मा मौता रै ऐडै छेडै घूमरी ही । लोग एक वाणी सू आ ही बात कवै हा—घरे तो मौत हुई है, पुलिस माळा पीसा खाळै है ।

दूजो केव भई आनै ब्याव मे कुण बुलाव है ।

तीजो बोल्यो—ओ ब्याव है काई ?

चोथो केवै—ग्रो ता ई यां ही चालसी ।

ग्रो तो इयां ही चालसी—इयां हो चालसी इयां ही चालसी म्हार माथै में ई विचार रो गिरणियो सो बणग्यो, इयां ही चालसी ।

एक घटा रै पाछै एक जीप आई । टींगर टोळ बीरै चारकर घूमग्या । जीप सू काहो अर सरपच निकळ्या पण तीजो आदमी कानो हो । पडाक सी म्हार मन समचार आयग्यो । साता बठै ही जासी डाक्टर कोनी आव ।

—कोनी आवै तो कोनी आवै, लोग एक सुर सू बोल्या ।

बान्डै पैली सरपच सू बाता कूसी करो । फेर एकलो ही गाव कानी आयो घरे बडयो, घर मे एकदम च्यां म्यां सुरु होरी ही । थोडी देर पाछ घर सू निकळ्यो,

मौत पादरी बीरै मूंड पर जमरी ही । फेर गाँव कानी गयो एक घटा पछै जीप कन ग
सरपंच सूं फेर काना फूसी करी ।

फटाफट जीप पर लासा चढी, दोनूं पुलिस आळा सागै चढग्या । मौत रं
मेळो एकर खिडळ मिडळ होग्यो । लोग बातां करता आपर घरे गया ।

म्हूं दिन छिप्यां ओजूं ई फळसै आयो । बी घर मे कूकारोळो मचरयो । लोगां
बतायो के लासा पाछी आयगी, टाबरां न दाग देवण मूसाण लेग्या है ।

लोगा मे ओजूं बाही बात ही–पीसा तो लाग ही भाई । इसी बातां मे पीसा
तो लाग्या ही कर हैं । थोडै म ही सरग्यो । सिरफ एक हजार पुलिस आळा लिया अर
एक हजार डाक्टर । गरीब आदमी पर दया करग्या । नीतो टमचरो सो फूट जावतो
का है रै बी गहणो पड्यो हो काम सरग्यो ।

म्हूं पूठो घरे आयो । काळू र घर गयो छोटडियो रोटी खावण लागरयो
हो । म्हैं हाथ लगाकर देख्यो—ताव उतरग्यो हो ।

दिन भर री उदासी एक साथै भागगी । म्हूं जोर सूं हस्यो । बूढळी बोली
म्हार तो इयां ही ठीक हो जाव है अठ अस्पताळ थोडा ही है ।

काळू म्हन रोटी घाल र ल्यादी–ल्यो अठै ही जीमल्यो, खीर बणाई है
म्हाराज रामदेरजी री किरपा होगी ।

—मन तो भाई छोटडियै रो भोत फिकर होयग्यो ।
काळू बोल्यो–फिकर मत करया करो, आ गाडी तो इयां ही चालती रैसी ।

۞

# चार मिनी कहाणियां

## (१) दवेल

एक जणो चप्पल परया फट फट करतो बगरयो हो । विरखा होयेड़ी ही । चप्पला री फटकार लाग लाग र गैल सू सारा कपड़ा खराब होयग्या । घर पूगता ई कपड़ा सभाळतो बो बोल्यो चप्पला ! म्हूं थारा काई बिगाड़यो जका थे म्हारा कपड़ा कादो उछाळर खराब कर दिया ?"

चप्पला नरमाई सू पडूत्तर दियो जिण न पगा तळै दबायो राखसी बो मोको ई गल सू कीचड़ ही उछाळसी । इण मे म्हारो काई दोस ?'

## (२) माथै रो मान

आभ म बादळ मंडरया हा । मघरो मघरो गरजणा भी हो री ही । झिर मिर झिरमिर बूंदां पड़ र धरती री रौनक न दूणी चमकावै ही । सावण रो महीनो । एक मोर मेडी पर गरदन फुलायां विरखा रो आणद लूटरयो हो । इण बखत एक बळो बळो मिनख मोर नै छेड़तो सो बोल्यो "मारया ! तरा सैंग अग तो फूटरा ह पण पग इसा क्यू ! मोर छड़खानी न समझ गयो । झट उत्तर दियो मान सनमान तो माथा सू हाया कर है, पगा सू नीं । तेरा पगल्या पणा ही फूटरा हैं तू काई कर लियो ?' छेडणियो चुप ।

## (३) काचौ फळ

पेड़ आपर काचा फळां न पाळ रह्यो हो । फळ भी टाबरां र ज्यू पालण में झूल हा । एक दिन एक घणो भाळो फळ बोल्यो लटक्यादो को रह सकूं नी । पळगो होसू ।' पेड़ घणो ही समझायो, पण फळ जिद ई करतो । जर पेड़ बोल्यो —भलाई जा, पण काच

अर रसहीण री दुनिया मे कदर नी होव । तू ठोकरा मे रुळतो फिरसी । फळ को मान्यो नी, 'टप' दे तळै आपड्यो । लोग उठायो अर चाखर फक दियो । टाबरा ठोकरा मार मार रमरा लागा ।

## (४) नेह रो घडौ

धोळू गळोजरी ही । बूढो ठेरी जवान सायण सहल्या गळगळी होर बाई न विदा कर ही । लणिहार आग पाग बगरया हा । बाई री सुबक्या फाटै ही । गळ मिळ ही पग पाछा फावै ही । ओ देख र एक सायण धीरज बधावण सारू बोली " बाई रोव क्यू ? धीरज राख ।" जद एक स्याणी अर अचपळी सायनी बोल पडी बाई अब तक मायड रै प्रम सू पूर भरयोड मायल मन रूपी घडै नै खाली कर है क्यू क आग जायर पीव रै प्रेम सू इण मन रूपी घडै न भरणो है ।'

# ओसांण

खुली जगा वडो कमरो, उणरै बडी बडी बारयां ऊपर तावडै सातर मोखा उणारै च्यारूमेर लो री भीणी चादर। कमर नै खोल'र म्है एक माचा पर बठयो बठ्यो सोचू। जाणै म्हूँ नीद मे सूतो हू।

इतरा मैं फडफडाणै री आवाज आई। म्हारी आख्या खुली'क क देखू हू'क एक कबूतर उण कमरा म चौफेर उड पण बा'र निकलण रो गलो कोनी मिळ।

कद ई भीत सू कदै उण भीत सू टक्कर खाव, मोखा मे वैठ ओसांण ल। फेर उडै। म्है सोच्यो मिनख जूण में ही ओ सागो है। बो ऊनै भागै, बुन भाग, पण साचो गैलो जोव्या बिना सारी उमर ओसाण मे ही पूरी होज्याव।

मोखी, बारी अर भीत सू भच्चीड लणै सू की कोनी मिल। साचो दरवाजो देख्या ही खुलो खाळ आभो उडणन मिळै।

△

# भीड अर सपनां

या दिन अेक लूठा नेता आवण हाळा हा । केई दिना पेल्या सू ही सारा सैर मे पोस्टर चेप दिया हा, माईक फिर हा अर सगळा री जुबान पै आहीज खास चरचा ही । सडका री टूट-फूट सुधर ही अर राती माटी सू सडका रा खूणा वध हा । पुलिस सार सैर म गस्त लगाव ही । तोरणद्वार बण हा ।

सर रा वा खूणा मे पटेल मरदान में बारो भाषण होवणो हो । दिन रा तीन बज्या रो टेम हो । इण तावडा म आ बात अजब ही लागी । वो दोय बज्या ताई सोचतो रयो । फेरू गाभा परया, बाळा मे कागसी करी अर जूना चप्पल पगा मे घाल नै सडक पर उतर आयो । कोई अेक फरलाग ही गयो होसी क वो पसीना सू तर होयग्यो । वो निस्चै करयो क उणन पाछो घर बावड जावणो चाहीज । इण तावडा मे वो नी जाय सक । काल अखबार मे सगळो ही भाषण छप जासी आज क्यू दुखी हुवै । वो पाछो घरा आडो मुडग्यो ।

घर र सामै आवता आवता वीरो रूमाल भीग गयो हो । पसीना सू कुरता री कालर गीली हुयगी ही । वो उपर चढन पख री हवा खावणो चाव हो । झट पट पगोथ्या चढण हूको ।

'चालाला नही क ?' अेक जाणी पिछाणी आवाज काना मे घुसी । पाछो मुड न देख्यो तो प्रकास ऊभो हो । "नही म्हू इण तावड मे नी चालू ला । देख, म्हू पसीना सू तर हुय रह्यो हू । फेरू भाषण काल अखबार मे छप जासी परभात ही पढ लेस्या । वो प्रकास न प्रभावित करणो चायो ।

पण, वो भी मानण हाळो कद हो । बोल्यो— आ बात तो ठीक है पण, व ईण सर मे पलौ बारी आया है । बां न देख भी आवांला । सुण्यो है वारा भाषण मे जादू जिस्यो प्रभाव है ।

'जादू' वो मुळक्यो । पण, जादू मबन सू वो प्रभावित जरूर होयग्यो । वो बोल्यो –'चालो चाल आवा । थू नी मानै ना थारो साथ दैवणा ही पड़सी ।' अहसान रो ठप्पो लगावतो वो पगोत्या सू नीचे खिसक आयो ।

बाढ री दाई जनता उमड़ ही । चारू तरफ रा गैला ठम हा । बसा, तागा, रिक्सा आद नैं रोक दिया हा । पुलिस रा इसारा पैं वातावरण नाचै हो । अेक जिसो अणहूट रलो वठीन ही जाव हा । तावड़ा री तजी सगळां रा ही चेहरा मुरझाय दिया हा ।

वो भी प्रकास रो हाथ पकड़्या भीड़ रो अेक पुरजो बणग्यो हा । दिसाबोध रो ध्यान करया बिना ही रैला रै साग घिसट हा । प्रकास कैवे हो-'भीड़ रै साग चालण मे कितरो आणद है ।'

वो काई भी बोलणो नी चावै हो । पण, भीड़ रा धक्का अर पसीना री बदबू बोलणै नै मजबूर कर दियो –'भीड़ अर आणद ! भीड़ तो सबद ही अबखो है । आपणां देस मे जनता अेक ही काम म अगाड़ी रव है । भीड़ अेकठो करणी अर ताळिया पीटणी ।

प्रकास बोल्यो— थू तो फिलासोफर री न्याई बातां कर है । ओ तो भासण दवणिया रो सम्मान है । नीतर फालतू टेम कुण कन है ।'

सम्मान री भावना होवै या आरू काई भी बात हावै । पण, आ भीड़ काई भी ग्रहण करै है ? आ भीड़ कोरा मनोरजन र वास्त नी आव ? इण भीड़ मे आ भावना है जो अेक स्रोता म होवणी चाहीज ? अे लोग भासण सू काई भी सार लयन अपणावैला ? नी आ अेक कोरी भीड़ है ओरू काई भी नी ।"

वे दोनू पटेल मैदान रै बारै गेट कनै आयग्या हा । अेक म्हाटो गेट ओरू ही जठा सू खास आमन्त्रित लोग आग मे घुस हा । अेक नता मित्र बान मिलग्यो । वो सू दोय पास झबाड्या अर वे भी वा गेट सू मायनै घुसग्या । अतिथि कक्ष भी ठसाठस भरयो हो । छोटी छोटी लाई मिनखा रो फलाव सुगामा रा रग-रगीला गाभा बीच मे विसाल मच अजब द्रिस्य हो । कड़कड़ातो तावड़ो, खुल्यो मदान, भीड़ रा धक्का मुक्की सब हा हरेक मच र कन पहुचणो चाव हो । पुलिस घणै जतन सू लोगा न बटावै ही ।

पण, ओ काई ? नेताजी री कार धड़ी उडावती ज्यांन ही मदान मे घुसी अर जनता बगी हुयगी । हरेक नताजी रा नजीक सू दरसण करणो चावै हो । वो अर प्रकास इण चक्कर मे न्यारा न्यारा हुयग्या । वे दोनू भी अेक दूजा न खाजणै र पसी नेताजी न देखणो चावै हा ।

मच पैं नताजी पधारग्या । जनता ताळियां पीट न वारो स्वागत करयो । नताजी हाथ जोड़ न अभिवादन स्वीकारयो अर भासण चालू कर दिया ।

भीड ! भीड !! भीड !!! वार साम कोरी भीड ही। जनता ही। देस रा रवासी हा। पसीना सू तर भीड सू बदबू आव ही। वो चारू मर नजर फलाई पण, कठै भी खाली ठोड नी दीस ही।

वो भामण सुण हो अर नी भी। कोई उभो हुवतो तो कोई बैठतो। कोई अगाडी सरकतो तो कोई छीकनो। भासण वाँर वास्त नी र बरोबर ही हो। वारो मन पीड़ा सू भर आयो। केई भाव कोवस्या। आ भीड काई खु" ही म्हारा देस री अेक लूठी समस्या नी है ? खेती म वतरी ही क्राति हुव कारखाना वतरा ही फल जन्व पण, आ भीड सुरसा रा मूण्ड री दाई सबनै निगळ जाव है। वाँर सामे भूखा नागा अर भीख माँगता चहरा आमग्या जो पट भरण र खातर तडप हा। डीन नै ढाकण म असमरथ हा। हरेक साल नू वी पाठसालावा खुल पण भरती नी हुव, घणा पढ लिख न भी युवक नौकरी री थाल मे वरसाँ ही गुजार देव। अक री ठोड हजार ही अरजिया पूग जाव। ओ सब काई है ?

काई आ भीड म्हारा देसरा मीठा सुपना पूरा कर पावेली ? अे वढता शका हाथ म्हारा देस रो भविष्य बणाय पावेला ? नी आ भीड अपण आप मे ही अेक समस्या है। वो थोडा दिना पेल्या ही तो आकडा देख्या हा। दुनिया म हर सकण्ड सईकडा ही नूवा चहरा झाकण लाग जाव। आपा वांर वास्त सामग्री जुटाय ही नी पावा तो फेरू तरक्की री बात कठ है।

फेरू भी आपा भीड रो आणन्द लेवां। जठ नालो बठै ही भयू। रासन, बस मेलो मदिर, सिनेमो या मसाण ही होव हरेक जायगा क्यू लागोडा है। ओ सब कितरो पीडादायक है। रेल म ठोड नी मिल — बस में जीव घुट जाव।

अे सरारती युवक मोहल्ला मे वठया रेव अर आवती-जावती छोरिया न छेड, खूंज्या काट, हो हल्लो मचाव, तास पती खेलै अर समाज म सूगला करम करै। आ सब किणरी देन है ? उण रो मन गलानी पीड अर कुण्ठा सु भरायो। अे विसगतियां वार साम तिरण लागी। वो आ ही विचारा मे डूब गयो।

भासण कस्योक रयो अचाण चूक प्रकास वीनें आय भझोड्यो। भापण करणिया चल्या गया हा। भीड बिखरबा लागी ता वे भी खिसक्या। सगला ही गेट भरया हा। चोरायो जाम हुयग्यो। पांच मिनट रो रास्तो वे अेक घटा मे त कर पाया। अेक होटल म कोल्ड ड्रिंक लेवणो चाव हा। गलो सुखो जाव हो। वे होटल मे पुस्या पण, वांन बठण न जायगा नी मिल सकी। ऊभा ऊभा ही वे 'कोल्ड ड्रिंक' पीयो। वांरी निजर सडक पँ ही जठ भीड म हजारा ही अजनवा चेहरा देस रा भविस्य न ललकारता घका तिरे हा।

# ओळखाण

रेला बन्द ! बसा बन्द ! तार बन्द ! फगत एक गाडी तिरासा सू काठै अमूजयोड मन नैं लियां म्है डाकघर सू पाछो ठेसण कानी टुर जाऊं। ठेसण कनैं पूगतां पूगतां मोटी मोटी छांटां पडणी सरू हो जावै है। म्है लाबा लाबा डग भरतो एक होटल मे घुस जाऊं हूं।

कुरसी माथै जा'र बैठ्यां पछै, पाणी रो गिलास ला'र मेलतो छोरो पूछै है — काई लाऊं सा ?'

"गरमागरम काई है ?"

"मिरची बडा तो तिकाळघाईज है कोपता अबै निकळ ला।

"कोई उतावळ कोनी ! गरम निकळनाई दोय कोपता अ'र चा लिआवे।"

आज जिसी भूण्डी तो म्हा मे कदेई नी हुई ! बस माळ रै किर्यां किया रवाना होय ग्यो। पण बस आळै सू बेसी गलती तो म्हारी खुद री है। नई तो म्हैं केई री सुणी अ'र न म्है ई मौसम रो रगत नै पिछाण सक्यो। ई मार्भे नै सूरज नै ढकयां आज केई दिन हो ग्या है। ई रै टपुकड न देख'र ई म्हा ई री मनस्या न आळख लेवणी चाईजै ही।

निगु'र बईर होवती बेळा लाई बनोईजी घणोई कह्या हा—देखा कणी मानो आज ना जाओ ! बुधवार करडो वार है, मेह पाणी मे कठई बीच मे अटकणो पडयो तो भारी मुसकल हो जावला। पण हूं बारी एक नी सुणी ! नौकरी पसा आळा र वार तिवार कठेई कानी अडै।

साण बण मा घणाई कह्यो हो—भाईसा घरां अ'र इसकूल मे तार कर दिराओ दोय च्यार दिना री छुट्टया बढाय लो। छुट्टी नी है तो पीसा कट जासी। राड सू बेसी तो गाळ कोनी अ'र सरकार जिसी जाएं कोनी काई के इस्सै मेह पाणी मे कोई किया आवै।

न मालम ग्रठ कित्ता'क दिन ग्रटकणो पड़ै । घरै भर इसकूल मे तार हो जावतो तो बढिया रैवतो । एमरज सी री टेम "यारी है । मेह पाणी र समचारां सू बींरो रोटी पाणी छूट जासी । वा की ग्रणुती हो फिकर करया करै । डाकघर आळा भी बापडा काई कर । जाग्या-जाग्या थम्बा पडग्या बताव है ।

म्हारै सामी वठ एक पुलिस ग्राळ न एक जणो पूछ है–'हवलदार जी, नागौर रो काई हाल है ?''

'नागौर री हालत वेजा खराब है । चनार पाणी म है, पोस्ट ग्राफिस ग्रर कलेक्टरी र च्यारू मेर कमर सूधो पाणी पड्यो है । विरमपुरी मे एक एक मजिल ताई पाणी पूगग्या बताव है ।

'जणा काल ताई तो मारग स्यात ही खुलै ।'

'सवाल ही कोयनो ! रेल तो हाल दस दिनां ताई चालू नीं हो सकला । ग्रठीन रैण सू ग्राग ग्रर उठीनै मू डवै सू ग्रागै चीला माथ च्यार च्यार फुट पाणी ब रह्यो है ।'

छोगो कोपता री प्लेट मेल जाव । म्है एक कोपतै नै तोड'र फूक मारतो सोचू हूँ—ग्राई ग्राछी हुई क बस ग्राळो बापडो जिया तिया मेडत ताई तो धका लायो जे बीचै कठई फस जावती तो भूखा मरता रा भोगना फूटता ग्रर मेह मे पड्या धूजता । ग्राज नागौर कानी गई जिकी रोडवेज कुचेर कन एक दरड मे फसगी बतावै है । उणारी सवार्यां मे काई बीती होसी ।

एक लीली मिरच रै टुकड सू म्हारा बाको वळ जाव है, पण म्हनै वाफतो भोत उम्दा लाग है । पाणी री एक गुटको ले र म्है बार सडक कानी जाऊ हू ? पाणी ग्ररडाट करतो पड रह्यो है । दूज कोफ्तै रो टुकडो बाक मे घालतो होटल मांय वठया लोगा माथ एक निजर न्हाखू हू । घणखरा लोग गांवा रा निजर ग्रावै है । डोट्टी रा मला कुडता परचां, माथा माथ मला पोतिया बाध्या ! पण वेटा इमरत्या ठोक रह्या है । कितरी ही मू घाई होवो भलाई ग्रा होटलां री भीड मे की कमी नी ग्राई है । सरीर री भूख पछ स्यात, मोटी भूख पेट सू बेसी ई जीभ री हुवै है । जीवण रा बस ग्रईज दो मोटा मजा है—काम ग्रर जीभ । जिका नै भोगती बेळा मानख न नी तो टेम रो लखाव पड नी ठोड कुठोड रो ग्रर नी ही पीस टक्क रो ।

चा लेवती वेळा म्हारी निजर एक जण माथ जा टिक है । हिप्पी टाइप लांबा लाबा बाल । घरो छोर्या जिसो लाग । होटल ग्राळ रो भायलो दीसै, जणाई बी र कनै बठ्यो हस हस'र वाता करै है ।

म्है सोचू हूं—अब धरमसाळा री गिणै कर लेवण में ही सार है । इसी नीं हुवै क बठै भी ढग रा कमरा नीं मिळै ।

म्हैं काउण्टर कनैं जाय पूगू ।

'अठै कनैई कोई ढग री, चोखी सी धरमसाळा है ?''

काउण्टर आळो हाथ सू इसारो कर र बताय है—आ कनैंईज है, पासती री पांचेक दुकानां छोड नै ।'

म्हैं धरमसाळा री बाबत कीं फेर पूछणो चाऊ हू, पण उण टेम वो लाबा लाबा बाळां आळो म्हार पगां र हाथ लगा'र म्हनैं हाथ जोड़ै है ।

"म्हे आपन ओळख्या कोयनी ।'

"थांर चेल राम परताप नै भूल ग्या कांई ।'

"अच्छ्या, राम परताप ! भाई, बात भी तो ओत बरसां री होयगी । उण टेम तू बरस पन्द्रेक रो होवैला ग्रौर अबै मोटयार जुवान होय ग्यो है ।" म्हे मन र माय उणनै ओळखण री कोसीस करतो, म्हारी पोची याददास्त न लुकाव ो, अन्दाजियां टोरो मारू हू ।

"हां, सडसठ री बात है ।"

"आज काल कांई कर है ?"

"इण साल एम बी बी एस फाईनल रो इम्त्यान दियो है ।

'वरी गुड ! जणा तो बस डाक्टर बण्या ही समझो ।'

'आपरी किरपा रो फळ है ।'

'म्हारी कयारी किरपा । ग्रो तो थारी मनत रो फळ है ।"

'थे की कैंवो भलाइ, म्है तो आईज जाणू हू क जे आपरी किरपा नी होवती तो आज कै तो कठई बाबू गिरी करतो क कळकत्तै जायन दलाली रो धन्धो अपणावतो ।

वो काउण्टर आळ न कव है—'ओमा, श्रे म्हारा मैंईज गुरूजी है । आ रै वास्त हेठलो कमरो कंडोर रैवला ?

हेठलो ही ठीक रैवला, ऊपरलो तो चू रह्यो है । अर धरमसाळा में भी कोई ढग रो कमरो आर लायक मिलणो मुसकल है ।'

'जणा हालो गुरुजी आपां हेठ कमरै मांय बैठ'र बात चीत करस्या ।'

म्हार ब्रीफकेस नै वो खुद ले लेवै है । म्है भी बीं रै लार-लारै होटल र लारलै बारण माय सू होवतो नीच जा पूगू हूँ । लोटियो जुपताइ, च्यार मुढढा एक मेज

अर एक मांचो निजर आव है। म्है दोनू जणा मुड्डा माथै बठ जावा हां।

'आज ई मेह पाणी म आपरा दरसण अठ कियां होया ?'

कियां काई होया भाईडा, आज जडी भूण्डी तो म्हामै कदई नी हुई। अजमेर सू बीकानेर जावै हो। अठ मेडत मे आया पछै ठा पडी कै 'ब द रै घराव मे हू। रेला ब द, बसा ब द तार ब द।'

'थे की बात री फिकर ना करो, म्है तो इठरोईज रैवण आळो हू।'

'म्है थोम नै लेय नै आऊ हू। इतरो क र बो ऊपर चल्यो जावै है।

म्है घणोई सोचू हू क ओ रामपरताप म्हार कन क्द अर कठै भणीज्यो, पण म्हनै की सन नी पड। म्हनै म्हारा साथीडा री कियोडी बातां याद आवै है–म्हारा डडा खायोडा घणाई तो डाक्टर बण ग्या, घणाई उकील अर इजीनियर बण ग्या। बाबुआ अर मास्टरा री ता गिणती ही कोयनी। गळी गळी मे मिल जावैला। ज क्दैई दौडो करणो पड अर कियैई ठेसण माथ उतर जावां तो पगा मे धोक मारणिया री लैण लाग जावै। म्हारी प द्रै बरसा री मास्टरी मे ओ पैलो मोको हो के म्हारै सू भणियोडो एक चेलो डाक्टर बण रह्यो है अर बो म्हन चण तर ही धोक दी है जिग्रास्ली धोकां री बाता म्है सुण्या करू हू।

मेह पाणी अर घर आळा री चिन्ता फिकर सू अळगो होवता म्हैं खुसी री एक नुई नगरी म जा पूगू हू। मेडतै मे अटक्णो म्हन भोत भलो लागै।

कोई पाचेक मिण्टा म होटल आळो छोरो एक ट्रे मे इमरत्या अर निमकीन री प्लेटा लिया आव है। लार लार रामपरताप अर काउण्टर आळो ओमो भी आव है।'

'म्है चा बीजी ले चुक्यो हूँ फेर ओ अडगो क्यू कर्यो ?'

ओमो कवै है—'अडगो क्यारो होटल तो आपणो इज है। फेर बो छोरै कानी मुड र कैव है—अ प्लेटा तो मेज माथै धर दे अर काफी भी बणाय ला।

गुरु जी थे की बात रो सको मन मे ना लाओ। रामू म्हारो लगोटियो यार है, थे ई रा ही नई म्हारा भी गुरुजी हो।

'लो हाथ बढाओ छोरो हुण काफी बणाय ल्यासी।'

व दोनू जणा भी एक एक इमरती उठा लेवै। इमरती कुतरतो ओमो फेरू कवै है– था जिसा गुरुजी म्हनै मिल जावता तो आज म्है भी डाक्टर बण जावतो। अठ भटया सू बायेडा नी करणो पडतो।

'म्हार भी न्सवी मे वाईलोजी ही। दोय साल फल हुया पछै परी छोडी पढाई न।''

'म्रो रामू थार गुणां रो भोत बखांण करया कर है ।'

म्हन कोई गास भूग तो ही कोयनी, म्रोमं री वातां सुणर म्हारो हाथ ढीलो पड़ जाव है । मन में एण सको ऊपज है—रामू भी म्हनं म्रोळखण मे गलती तो नी करी है । म्है विग्यान रो मास्टर ही कोयनी, जिक र कारण ई रो डिविजन बण्यो हुव ! म्है इतिहास रो मास्टर हूँ । हां विग्यान म्राळा न सामाजिक ग्यान जरूर पढाई है, पण सामाजिक ग्यान सू तो एक डाक्टर रा 'करियर' बणं कोनी ! डाक्टर बण है विग्यान म हुसियार हुया ।

म्है रामपरताप नै चोखी तरिगा देखू हूँ । जिको म्हन इतरी सरधा सू धोक दी उणनं म्है किया कैऊ के हू हाल ताई थन पिछाण नी सक्यो ।

उण टेम ओम रा सबद म्हार कानां म पड़ं—" गटजो फुरती सू हाथ चलाम्रो, काफी ठण्डी हो जासी ।'

काफी पीवती बेळा म्रोमो फेरू कैव है– थे मैडत मे नई थारै घर म ईज हो, म्रा सोचो म्रर बेफिकर रैवो । मारग म्राज नई तो काले खुलेला ही ।

'म्है म्रबार छोरै नैं भेजू हू वो ई खाट माथ बिछावणा बिछा जासी, थै कमर पाधरी कर लीजो । हुण च्यार बजी है सिझ्या न मोसम ठीक रह्यो तो म्रापां घूमण फिरण नै चालसा ।"

काफी लियां पछ ब दोनू जणा ऊपर चल्या जाय है । छोरो म्रार बिछावणा बिछा जाव है । म्है माचै माथ लेट मो जाऊ हू । म्हन भोत म्राराम मिळै है । म्हार म्राराम रो ध्यान म्रावता ई म्है पाछो ई नुई चिन्ता मे डूब जाऊ हू कै म्रा भल मानखां नै किया समझाऊ क भाई रामू न डाक्टर बणावणियो गुरु कोई दूजो है । म्हू कोनी ।

म्हू खोटो गरु हू इ बात रो ध्यान म्रावताई देसी घी री रसभरी इमरत्यां रो सवाद बिगड्यो हो । काफी भी बेसवाद होयगी ही । म्हन लाग हो क म्हैं भी म्राज कात रा मानीता मिनखा दाई एक म्रोपतो मुखोटो धार लियो है, म्रर उण र हेठ एक खोटो गुरु लकयोड़ो दूसरा री गलती रो फायदो उठाय रह्यो है ।

म्हनै उण टेम ही साफ साफ कय देवणो हो क भाईडा म्है थारो मास्टर कठई नी रह्यो हू म्रर ज रह्यो हू तो बता तू म्हा कनै किसी पोसाळ मे भणीज्यो ? पण उण टेम तो रामू री सरधा भगती न देख र फूल र कुप्पो होय रह्यो हो । रामू री गुरु भगती मिसरी री डळी दाई लाग ही । मगज म सरूर सो चढ रह्यो हो म्रोर म्रब सगळी खुसी मावठा वियोड़ी लाग है ।

म्हैं घड़ी कानी देखू हू । जो भो मेह काम नी बिगाड़तो तो इत्यार नै घरा पूग जांवतो ।

घरां पूगतां ही बीन कैवतो—आज तो घणा रसगुल्ला खाया । थारी बीणा रैं सगपण री बात सोळाना पक्की कर आयो हू । छोरो इन्जीनियरिंग कर रह्यो है । अर सब सू मोटी बात आ है क लण दण रो की टंटो कोयनी । अर बा मुळक'र कैवती—क्यों बीणा कांई म्हारी एकली री है ! बात पक्की कर आया हो तो पैलपरथम तो रसगुल्ला थं खवाओ । अर म्है फुरती सू थैल माय सू रसगुल्ला री थली काढ'र थमावतो, कवतो—लो थे भी कांई याद राख सो कैं कांई रईस सू पानो पड्यो हो ।

थोडा घणा रसगुल्ला अर भुजिया तो ले जावणा ही पडता, टाबरा न बोखा वण सारू । बैं जावताई लार पड जावता, अजमेर सू म्हा खातर काई लाया ?

मेह अर उरस रो मगरियो अजमेर मे को ओसाण ही कोनी बधण दियो ।

इयाकला विचारां मे डूबतां उतरतां म्हनैं ध्यान आव है कै आ लोगा री नीत तो खराब नीं ह ! अ कोई ठग विद्या तो नई खेल रह्या है ।

ठगण नैं म्हां कनैं है ई काई ! ओफ केस है जिक मे चड्डी, बनियान, सब रो समान अर एक जोडी पे ट सर्ट है । का आ हाथ म घडी अर जेब म पचासेक नगदी है । नइ नइ करता भी ड्यारेक सौ रो माल तो है ई ।

म्हन म्हारै विचारा पर हसी आव है । मन कैवै है—ओ मीरां रो मेडतो है बम्बई कळकतो कोयनी । बम्बई कळकत्तो होवतो तो आ बात बैठ जावती ।

जणा काई बात हो सकै है ? ई गरू भगती लारै कोई राज जरूर है । आज काल ऐडी गुरू भगती पडी कठै है ? जिकै में म्है इणरो गरू रह्यो ई कोयनी । जितरी गुरू भगती वो दरसाय रह्यो है उण नैं देखता वो म्हारै भोत नैड सम्पक मे रैवणो चाई जै ! पण म्हे तो उणनै हाल ताई पिछाण ई नीं सक्यो हूँ ।

म्हारो विचार कठई मारपीट करण रो तो नीं है । आजकाल मास्टरा नै कुण्गेजतां तांळ काई लाग है ! पण अ लोग म्हार साग ऐडी हरकत भी क्यू करै ? ऐडी बात तो टयूसना र मामला न ले'र हाया कर है कै परीक्षा र दिना मे नकल नीं करण देव जणा होव क फेर काई मास्टर क्लास मे काई छोर न ठोक ठाक देवै जणा होय ।

छोर नैं ठोकण रो ध्यान आवताई म्हारैं मगज म बरसा पैला री एक बात आ जावै है । एकर म्है एक सेठ र छोरैं रै क्लास में रपट मार दी ही । उण रै ९० साल माथ म्हारी आगळया उपडगी ही ! छोरो बी टेम ही आपरो बस्तो सभाळतो अर

मानी ढाट ग्या हो। थोड़ीक ताळ न उणरो बाप मोटरडी म फू फाट करतो आयो, आवताई हेडमा ट सा व न कह्यो हो —थै तो ई इसकूल म म्हारा छोराई पढ़मी थै भी मास्टर ही रसो।

हेडमा ट सा'ब म्हनै एकै खांनी लेजा'र कह्यो—मास्टर जी थांरो की गलती कोयनी, छोर रो गलती रै कारण थप्पड़ मारयो तो मार दियो, पण आपां नै तो आपांरो काम काढणो हे। ओ सेठ ई इसकूल मे दोय कमरिया बणावण री हांमळ भर राखी है। इण रै बेराजी होयां आ बात खटाई म पड़ जासी। थे सेठ नै ठंडो मीठा कर दो। कय दो कै सेठा गलती हुई गी आग सू ध्यान राख सू। यो तो आपणोईज टाबर हैं। पर रा टबरां न हाथा-जोड़ी कर र मनाव जिया म्है उणन भी मनाय लेसू।

सठ तो बापडो मान ग्यो हो, पण छोरा फेरू इसकूल में नीं आयो। टी सी कटा र कठई दूजी इसकूल मे भरती हायग्यो।

तो ओ रामूडा वोईज छोरो ता नी है। वा बात भी सइसठरा'ज है, पण आ अठै मेडल मे किया? म्हार मन मे सको समाय जाव है। जे ई तंतानै मे कोई इसी बिसो बात होयगी तो मागण सारू मारग ई नई मिळैला! राळा करयां कोई सुणला भी नई! अब अठै सु सटक सीता-राम भी किया होवां। बार निरळण नै वो रास्तोई एक है, अर उठ गा जमदूत काउण्टर मायं बैठो है।

म्है म्हारे मन न समझाऊ हू—आ लोगा रा चरा इसी बिसी बात माळा तो कोनी लागै अर जे इसा-बिसी बात करणी ही होवती तो अठ आवता पाण हो कर लेवता। म्हारी इतरी खातरी क्यू करता। किणनै ठा खुदो खुद न कर'र दूजा जणा सू करवावण रो मतो हुवै। फगत अटकार राखण खातर ही म्हारी इत्ती खातरी करी हुव।

विवसता मे मिनख न जद आपरो भरोसो चूकतो लाग उण वेळा वो जिको काम करै वो काम म्है भी करण ढूको। म्है म्हारा देवी देवतावा न मनावण लाग्यो–हे लखासर रा भरूजी, हे देसनोक रा माताजी, हे बजरग गढ रा बाला जी हे डिग्गी रा कल्याण जी थे म्हारी सहाय करजो। म्हारी लाज थार हाथ है। जाण अणजाण मे कोई गलती होयगी होवै तो छिमा करया म्हाराज! थारो ओ टाबर साव डफोळसख है।

ब लोग सिझ्या ताई घूमावण फिरावण री बात कर गया है। ऐडो नी हुव के बै लोग घूमण फिरण रो ओळावो ले र म्हन कठई सूयाड मे ले जावै अर उठ सागीडो ठरकाव।

म्हनैं अपणे आप पर किरोध आवै है। तू च्यार छोरा छारया रो बाप बण ग्यो तो काई होवै था मे हाल है छार बुध ही। छोर बुधी नी होवती तो बस आळै रै कह्या कह्या रवाना कोनी होवतो। खुद रो भी हियो फोड'र सोचतो कै आखिर बहनोई जी भी ना दे रह्या है तो की सोच समझ र ही ना देवता होवता!

एक आवारै छोर न पगा मे धोक मारता देख'र बस छीदो होयग्यो। जाणै असल गुरू तो बस दुनिया म एक तू ईज है। हीय फूटयोडा उण टेम तू आ कोनी बिचारी क बियाम र छोरा सू थारो काई वास्तो। बस उणर लारै टुर बईर होयो अर ई कदखानै मे आ पडयो। हाथा कीना करमडा को नै दीजै दोस ? एम ए ताई री भणाई न धूड मे ही म्हाखी, रह्यो डफोळ रो डफोळ ही।

ओम न नीचै आवता देखर म्हारै विचारा री लड टूट जावै है।

'गुरजी थां खातर एक खुस खबरी!'

हू उणरो मू डो जोवतो माचै माथै एकदम वठो हो जाऊ हू।

'काई ?'

'थे काल ई टेम ताई बीकानेर पूग जावोला।

'किया ?'

मेडता जोधपुर अर जोधपुर बोकानेर रूट चालू है।'

हण जोधपुर कोनी जा सकू काई ताकै दिनू गै ताई बीकानेर पूग जाऊ ?'

'अब तो बस दिनू गै छव बज्यां ही जासी।'

म्है मन मे सोचू हू—ई मे भी काई चाल तो नीं है।

'तन कियां ठा पडी के औ रूट चालू है ?'

'अबार रामू रा भाई सा जोधपुर सू आया है। रामू ही मै समचार हूणी-हूण दे'न ग्यो है।'

'मेह रा कांई हाल है ?'

'हूण तो ढब्योडो ईज है। थे त्यार हो जावा रामू रै आवताई घूमण ने चालसा बो घरां ताई जा न आवण आळोईज है।' कवता कवता बो पाछो पागोथिया चढ जाव है।

आ समचारां सू म्हा मे हुसियारो बापर जावै है। म्है म्हारै देबी दवतावा नै एकका फेरू धोकता म्हारै मनोवळ न ऊचो उठावतो ऊपर चल्यो जाऊ हू। काउण्टर पन पडी एक कुरसी माथ जा बठू हूं।

ओमो एक गिराहक न सलटा'र कैवे है—'बस रामू आवण ही आळो है।'

रामू रा बापूजी काई काम करै है।

कलकत्तै मे कपड़ै रा वोपार है ।' मठै इण रै भाइ सा री कपडे री दुकान है । चोखी ग्रासामी है ।'

म्हारै मन में पक्की बात बठ जाव है कै ग्रो रामू कोईज लडको है जिक रै गाल मायै म्हारी ग्रांगळया उपडगी ही । हूमैं म्हन बींरो घरो की जाण्यो पिचाण्योडो सो लागै है । तो ई म्है ग्रापनै कुरसी मायै 'मेफ' महसूस कोनी कर ।

म्हन बां लोगा साग घूमण नै जावणो पड है । घूमती वेळा ब लोग इस थाना रै इत्यासिक गौरवां रो बखाण भी करै है । म्है हां, हू करतो इसी किसी घटना रै घटण री बाट जोवतो, मन मे सभळयोडो रवू हू । म्हारी पेन्ट र बध्योड पट्टै न ढीलो कर लेऊ हू । जे अ दोनू ही दुया जणा तो हू ग्रान धारण सू रह्यो ।

जठ कठई बांरा जाण पिचाण आळा मिल जावै है म्है म्हार 'डिफेन्स री बाबत घणी सावचेती बरतू हू । कंई जमान मे देख्योडा मारधाड ग्राळी फिलमा रा व सोन ग्राख्या सामो ग्रा जावै है, जणा ऐक्लो हीरो कई जणां रो सामनो करै है ।

बेवच, दूधामागर ग्रर कुन्डळ रो चक्कर लगायां पछै म्है तीनू जणा च्यार भुजा र मिन्दर पूग जावां हां । मिन्दर रा पगोथिया चढती वेळा म्हू रामू रा मुळकतो मूडो जोवतो ग्रपणै ग्राप नै कंवू हु—तू रह्यो डफोळ रो डफाळ ही, तू हाल भी रामू न ग्रोळख नी सक्यो है ।

मि दर मे पूग्या पछै म्हारो हुरख उछाव ग्राद सो की पाछो बावड जाव है । म्है होळै होळै इतमिनान सू बेधड़क हो र सगळो मिन्दर चोखी तर्यां देखू हू ।

मीरा री मूरती रा दरसण करती वेला रामू कंव है—गुरुजी, मीरा र परती म्हारै मन मे एक बिसेस ग्रादर रो भाव है । ग्रा भगती मे सूर ग्रर तुळसी सू ग्रागै निकळगी ही । सूर तुळसी मे द्वैत भाव बण्यो रह्यो, पण ग्रा स्याम रग मे ऐडी डूबी कै इण नै कण-कण मे स्याम ही स्याम दीखण लाग्यो । जे ग्रातम विस्वास री ई ग्रोम मायै ग्रा ऊभी नी होवती तो बिस रो प्यालो पीवता ही मर जावती जियां सुकरात मरयो । उण विस नै बिस नइ, चिरणामिरत समझ'र पियो हो । ई महिला बरस मे सगळा सू बेसी ग्राज मीरा पुजीजणी चाईज । लुगाया री ग्राजादी री बात मीरां बी टेम उठाई ही जणा सामन्ती जुग री बोल-बालो हो । सती होवणो ग्रर पड़दै म रंवणो लुगाया रा बिबसता ही ।'

ग्र बाता सुण र रामू रो एक दूजो रूप म्हार साम ग्राव है । दोपारा म उण रै लांबा लाबां बाळा नै देख र म्हन हसो ग्रायो हो । म्है उण री तुलना छोरया रै चर सू करी ही । ग्रबै म्हनै उण र चरै मांय सू निराला ग्र र पत जिग्रालका, कवि उभरतो

लाग है। म्है उणरो मूंडो जोवतो कैव् हू —'तू तो म्हनै एक कवि लागै है रे, तू एक सफल डाक्टर किया बणसी।'

वो एक गरी उसास लेवतो कव है—'डाक्टर तो डिगरी मिल्या बण ही जा सू, चिंता तो आ है क म्है मिनख बण सकूं ला क नी।' वो आपरी घडी नै देखर फेरू कव है 'अबै घरा हालो मां अर भाईसा ब्याळू खातर आपा न उडीकता होवला।'

रामू न ओळखणरी कोसीस करतो म्है उणरै सागै टुर जाऊ हू। मारग मे आ लोगा र परती म्हारा घडियोडा पोचा विचारा माथ म्हन घणी अमूजणी आव है। म्हे अपण आप न भोत ओछो लखावू हू।

उणर घरा ब्याळू करता उणरी मा अर भाईसा म्हारो भोत आभार परगट करै है। उण री मा कैवै है—था जेडा मास्टर भोत इण्या गिण्या ही हुवै है। था रै कारण ही रामू की जोग बण सकैला। थे होवो न ओ मिनख बणै। इणरी मासी लाड लाड मे ई तो ई बडोड न बिगाड र तीन कोडी रो कर दियो। ओ दसवी सू आगै नी भणीज सक्यो। थारी सीख नी लागती तो ओ रामू लखणा बायरो रै जावतो।

ऐडी बाता सुण'र म्हार मन मे आव है क मैं केय दू क रामू नै की जोग बणावणियो कोई दूजा मास्टर होवला म्है कोनी हू। ओ म्हारै कन भणीज्यो ही कायनी ओ तो बिगाणै हो म्हन आप रो मास्टर मान लियो है। ओ एक मोरी गलती रो सिकार होय रह्यो है। पण हू रामू रै मुळकतै मूंड नै जोय जोय'र म्हार मन नै काठो कर लेवूं हू। म्हार जीमण रो मजो किरकिरो होय जावै है। म्हनै दाळ चावळ साग फलका, मीठो पापड, चटणी सो की घास दाई लागै है।

जीम्या पछै रामू कैव है—'ओम चाला क थोडी ताळ ताई अठ ईज गप्पा राळा।'

'चालणो ही चाईज, पूणी नउ बजगी है। नउ बज्या रो टैम दियोडो है।'

म्है पूछू हूं—'अब आपा ने कठीनै चालणा है?' पडूत्तर रामू देवै है—युवक मण्डल री ओर सू एक कवि गोस्ठी रो आयोजन है। उठ आपरी जाण पिछाण भी इठरा साहितकारा सू हुई ज्यासी अर आपरी कविता सुणण रा मोको भी मिल ज्यासी।'

उण टैम म्है फेरू हरख अ'र अचम्भै र लरका म डूब जाऊ हू। रामू म्हनै ओळखण मे तो कठई गलती कोनी करी। गलतफमी रो सिकार तो म्है हो रह्यो हू, पण हाल ताई म्हारै आ बात भाळ म नी आई क म्है इणरा जलम सुधारणियो अर इण न डाक्टर बणावणियो किया बण्यो?'

थोडीक ताळ नै म्है लोग एक मकान री दूजोडी मजिल माथे जाय पूगा हां, एक मोटै सारै कमरै मे कोई बीसेक जणा बैठ्या है। गोस्ठी रो काम सरू करण सारू रामू म्हारो नाम अध्यक्ष-पद वास्ते प्रस्तावित कर है, अ'र म्हार आसण माथ जार बठ्यां पछै म्हारो परिच इया देव है

'आप हिन्दी अ'र राजस्थानी रा कवि है। 'मधुर' नाम सू लिख्या करै है। आपरी केई कवितावा अ र काण्या आप कई छापां म पढी होवला। आपरो कवि रूप तो हणै आपरै सामी आसी हो जणा आप कवितावा सुणासी, पण आरो एक दूजा रूप भी है जिण र कारण म्है एक डाक्टर अ'र मिनख बण सकू ला।

म्है आ कनै मुसकल सू दो मीना भणिजिया हो। जनवरी मे ट्रासफर हुई'र म्हारी इसकूल में आया हा। बी टेम म्है नवी किलास म हो च्यार मास्टरा री ट्यूसन कर राखी ही। म्हारा मासोजी आ न सामाजिक ज्ञान पढावण खातर सौ रिपिया ताई धाम दिया, पण अ हामळ नी भरी। हामळ भर लेवता तो जिया म्हारो गाडो आठवीं ताईं गुडक्यो बिया नवी मे भी गुडक जावतो। अै म्हारा उकील बणणो मजूर नीं करयो। म्हनै सामाजिक ज्ञान र कारण नवी मे फेल हावणो पड्या। बो फल होवणो म्हा खातर बरदान जैडो बणग्यो। म्हारो मन बीकानेर सू फाटग्यो। खोटी सगत छूटगी। म्है जैपर जायन म्हार मामोजी कन पढण लागो। म्हारा मामोजी नै साल खराब होवण री नई पढाई री फिकर ही। नवी मे फल हावण सू म्हारो दसवी मे डिवि जन बण्यो अर आगै भी बणतो रह्यो। खर, अबै और की नी कै न म्है अध्यक्ष महोदय सू निवेदन करू हू क बै आजरी कारवाई सरू करै।

# भोर कदै ना होय

हिय माय लागी ना कद ही भरीज अर नीं कद ही भूलीज। ज्यूं ज्यूं वखत निवळतो जावै वा हरी होवती जावै। वखत री मार रो घाव नासूर वण जाव। नासूर री रस्सी मांय बिलमावतो बिरजू साईकल चढ्यां घर जाव हा। साईक्ल ईयां चाल हो जाणैं उणन लार सू कोई खेंचतो होवै। पैडल भूत सा भारी हा, फेर भी बिरजू घरे जावतो हो, जाणैं उणर साग्र घर जावण री कोई जोर जबरदस्ती कर हो। मिगसर री रात, वधती ठंड भार ढोवती जिन्दगी सगळा सू न्यारी ही। बिरजू घरैं जाव, आप चालतो फिरतो मुडदो।

साईक्ल चूं'चर मर र करती चाल ही। सडक री लाइटां भब भब करनै जगै ही। दूकाना सगळी बढाईजगी ही। सिनेमा हाल र कनली दोय च्यार चाय पान री दुकाना खुली ही। चालतो जीवण अटक भटकनैं चाल हो। उबास्या लैव हा। गिणती रा तांगा ऊभा हा। सिया मरता कुत्ता ठर-ठ'र नै भू-कता हा। गळी मांय भागता ऊदरा साइकल सवार नै जीव हत्या सू बचावण वास्त चेतावता हा। उडत मन न धरती आधार दवती ही अर या बताव ही के तू धरती माथै पगै है। घर कनैं पूगन बिरजू साईक्ल सू उतरियो। भीत र सार साईकल खड़ी करनै यो किवाड री कडी खडखडाई। बिरजू न ईया मालम पडियो के बो आपर जीवण रो एक भोत ही बडो काम सळटाय लियो है।

मायन सू आवाज आई कुण! बिरजू?'

'हा

'आई

होळ-होळैं छ चोक्यि माय सू जीवण रैं न्या'र सू भरियोड़ा पग ...कन माय नै किवाड खोल्या अर बोळी—अरे! वेटा वाटी देर सू आया रे!— हा! मा आज थोडी देर हुयगी।"

बा हस रै बोली–'थारी माया थे सभाळो । म्हारो हेत टूटयोडो ही समझो' सगळां नै लयन कन बैठतो बिरजू बोल्यो– 'ग्रा टोळी तो थार कन ही ठ र सकै, थां बिना तो म्हारै कन एक पलक ही कोनी ठ'रै ।'

"टाबरा नै पाळणो" टाबरा रै माथै हाथ फैरती बोली—

'कोई सैंज काम थोडो ही है । सूळी माथ सोवणो है ।"

—' सौ मोटयार एक टाबर कोनी पाळ सकै ग्रर एक लुगाई सौ टाबर पाळ सकै है ।'

— जणा ही तो लोग कवै है क लुगाई रै मरता ही टाबर रुळबा लाग जाव ग्रर कमाऊ रै मरिया पछ भी लुगाई टाबरा न पाळ सकै । मां री छिया मांय भूखा मरता टाबर धापोडा सा दीख ।'

ग्रा दोना री वाता चाल ही । सगळा टाबर सावण लाग ग्या हा ।

बिरजू बोल्यो—'ग्रठीन कोनी आवे क ।"

'देखो थांरो लाडेसर किया सूतो है । हालताई ई री नींद काची है"—ग्रा ववती सीरख ऊची उठाय नै दिखाई ।

बिरजू देख्यो छोटक्यो छोरो ग्रापरी मा रै गळ माय बाथ घाल न टाग पेट मार्थ राखन सूतो है । रीस सू बोल्यो—'थारा विगाडयोडा है ।'

"ग्रे काळजै री कोर है । ग्रां नै रूसाया किया सर" नाराज होय न बिरजू पसवाडो फेरण लागो, जितरै मे भरम भागग्यो ।

सार्मे लटट्ू चस्यै हो । सूनी बैठक । कठै धण कठ वीरो मान । काळजो मु ह ग्रावण लागग्यो ।

एक गै रो सास फक नै पसवाडो फेरयो साथ ही बो धण बिना लावरिस है । टाबर मा वायरा ।

जीवण री उदासी सू डर न बिरजू ग्रापरी दोयू ग्राख्यां मीच ली ।

# एक इंच हंसी

बरस रो आवतो महिनो न महीन रो पाछलो अदीतवार। रीता हाथा एक एक दिन काढणा घणो मुस्किल होव है अर उण पर जुलम ओ क एक तारीख अगीतवारी। बेबसी इसी ही हुव है। सास घुट घुट रैय गयी। प्राण पांख कटया कबूतर री भात छट पटामर रयग्या। इण उदासी र मौके पर सूनो-सूनो काळी रात ज्यू लागतो हुतो। ज्या-त्या आज रो ओ दिन तो काढणोईज है।

एक कूणे मे वा अरथ्यां पर पलका ढकिया बठी ही। लाण री हिम्मत ही गुमगी, सुध बुध सोयगी हैरयां सोच्या सू भी लाधै कोनी।

दूज कूण मे, एक भागी-टूटी खाट माय खाणो आरोगर हूँ घडी घडी करवटा बदळू हू। हाय पग मरोडू हू। खुद री निजरा सू खुदरो चेहरो लुकाऊ हू, उबास्या आव। बासी छपो घडी-घडी पलटू। निजरा री ज्योत उडगी। बुद्धि रा दीवट बुझग्यो पढणो आव नी, मन लाग नी। न जाणे काइ होयग्यो, आज।

थोडी घणी देर म एकर खास पास अर दुख न थोडो हळको कर लेऊ हू।

साग माळया माय टाबर खेल है। जानकी मोटकी सू बाता करै—हाँ ए बाई आज तो एक तारीख कहैवे है। बजार चाला। हू तो गोळी लाऊनी हा।

हू तो सुण अर सग्न रहग्यो। जीव न भाटो बणार आख्या माथ हाथ रख लिया। करतो भी काई ? ओ सहर रो रैवणो कुण न कुण री पडी है। सब आप आप री सेक है।

वाई दसवी कलास म भण है। वा घर रो सगळी बाता जाण है। वा जाणे खरचो कियां चाल रियो है। म्हार पापा री आमदनी थोडी है।

बाई जाण वाई वन कदरा पाच पईसा पड्या हा जिक भ्रापरी छोटी बहन न देयर बोली " ल लाली ! मैं पाच पईसा जा थार गोळया ले आव ।

'ऊ ऊ भ्रा तो एक ही है म्हनें तो दोय दे ।'

हे राम । उठाय क्यू नी लियो । मन मांय को माय बडक्यो । आज टाबर खातर भी पीसा कोनी । कोई म्हनें मोल खरीद लेव तो चोखो । पर म्हारै टाबर नैं गोळया दवे तो साच कऊ क म्हार दरद कोनी होव ।

हू सुण तो रियो हू पण जाणै बहरो हुयग्यो हू । मन पर भाटो रख लियो हू । जानकी टाबर री सगळी बाता सूरा क्ठा मे उण हीज तरै उतर रई है जाणे भगेडी रै गळै म गुड रो चूरमा ।

उण कूण मे वा तो लायण टप टप मोतीडा टपकावण लागी है । ?

चाय री मन मे जोर सु भ्राय रई है । घर मे क्ठै चाय, कठै खाड भ्रर कठै दूध ? हे भगवान !

हू मैं तडाक चमक्यो । काई । नीं नी गळी मे रद्दी वाळो हाको कर रया है । म्हारी डगमग बापडी भ्राल्या भ्रखबारा र कानी देखे है ।

सुणो जी ! थोडो रद्दी वाल ने हेलो पाड लो देखा ।

! ? !

दोय किलो है बाबू जी ! रद्दी वाळो बोल्यो ।

'लीजिये डेढ़ रुपया ।

'हू भ्रै डालडा रा दोय खाली टीन है । काई देसी ?

'एक रुपयो बाबूजी ।'

'ठीक है ।'

भ्रढाई रपिया । घणा । भगवान मिनख री लाज राखै है ।

ले बाई जा, भ्रब लिया लाली रै गोळघा भ्रर म्हार चाय भटपट कर देखा ।

'दोय बज रह्या है । चाय रो पाणी चढाय दू काई ?'

'हा जी, चढाय दो ।'

भ्रौर उणरी मुळक रै साथै एक इच हू भी हस लियो ।

X

# कोट

सीयाळो सरू हुयां पैलां ई लुगाई कय दियो हो — अबक तो कोई ढगसर कोट बणवाय लियो। नई तो पछ पूर सीयाळ कांपता रवोला। टाबरां र भी कोट चाईजला कोरी सूटर म सीयालो कोनी कटे। म्हारो थाको तो मैं ई थांई धिका लेवूंली।

फेर आय सातव-आठवें दिन बा आईज बात याद दिरावती रवती। अर मैं हरमेस बीनें धीजो बधावतो। आ कयर—हा। अबक कोट जरूर बणवाणो है। नई तो सीयाळो किया कटैला?

म्हार सबदां में कित्तोक तन है, आ मैं चोखी तरियां जाणतो हो। लुगाई भी जाणती ही। पण तो ई बा याद दिरावण सूं कोनी चूकती। ठीक विया ई मैं हा भरणी भी कोनी भूलतो। झूठी दिलासा रै स्मारै दिन काट रैवो हो। जे मैं साफ साफ सबदां में बीन आ कय दवतो कै अबकी बार तो मैं कोट कोनी बणवा सकूं अर टाबरां खातर भी गरम कपडा बणावणा म्हार बस री बात कोनीं। तिणसा माय सूं दूजो कीं बच ई कोनी क खुद र या लुगाई टाबरा र कोई ढगसर कपडो करवाय सकूं। गरम कपडा तो दूर रैया कोई सूती पूर पटनो ई बिना रार्यां धीयां करवायो हुव, याद कोनी। सस्त सूं सस्तो कपडो खरीदर लावतो। लुगाई आपरा अर टाबरा रा कपडा खुद सीव लिया करती। म्हारा गांधिया पजामा भी बा सीव दिया करती ही। मैं खाली पैंट बुशट ई मोल सीवाया करतो हो। दरजी भी सस्तो सो क सोध राख्यो हो। दूजा दूकान दार पट री सीवाई आठ लेवता ता मैं बीन छव साडी छव तांई न्यिा करतो हो। मैं जद भी बी री दूकान कपडा लयर जावतो बीर चेहर सूं लखावतो क बो म्हारा कपडा धीगाण बत रयो हुव। ब मन सूं। पण ओ लखाव हुवता थका ई मैं बीरी दूकान कानी छोडी। हालताइ बठ सूं ई कपडा सीवावूं।

मै कलण्डर कानी देखूं। आज पच्चीस तारीख है। तिणसा आडा हालताई छव दिन पडया है। अ छव दिन महीणै रा लारला छव दिन कित्ता दोरा कटै है। अेक

अेक दिन अेक अक हपत दाई लखावै । आ दिनां अखारी मे इक्की दुक्की लकडी खिड्याडी दीख या आठ दस थेपड्या इ नैं बिनैं पडी लाध । आई दिना आट आळ पीप री तळो भी दिखण लाग्या करै है । तल र पीम्प या तिल्लाडी मे चूल्हा चासण खातर बाटी चोपडण जोगा चोटा बच खाली । केस चुपडण रोतो आं दिना सुपनो ई कोनी आव । साबणदानी मे साबण री जागा साबण रा भारा लाध, जिका हाथ मे ई कोनी भिलें । आ भारा न भेळा कर र लुगाई कुल्हडै मे भोजोय देव अर बी पाणी सू म्हारी गिजी या बुशट भिकदोळ देव । बस, इण सू बत्ती गुंजाइस आ दिना कोनी रव । आ दिना कोई पावणो आ ढूकै तो जी र आफत होय जाव । जी र आफत किणी रै बीमार पडण सू भी होय जाव । डागदर इसा भला है के मामूली धासो या जुखाम बुखार री दवा भी पंदर बीस सू कम री कोनी लिख । जावता ई पूछ—सरकारी नोकर हो नी । अर हा कैवता ई नाव पूछर दवाजा घम ल्हाख दूकानदार न रुक्को देवताई बो प दर बीस री फोटू उतार र मेल देव । अेक दिन री खुराक देवण खातर कवा तो भलो माणस कव—तीन दिना री सागेई लेय जावोनी । घडी घडी केशमीमा कुण कार्टला ? कोस तो पूरो ई लेवणो पडला । इण रो मतलब क दूकान आळो भी जाणैं है क सरकारी नौकरा रा रोग पूरो कोस लियां ई ठीक हवे । जे बीन कंवू क भाई अबार पइसा कोनी, तो तपाक सू सुणण नैं मिल—थार किसा घर सू लागैं है ? सरकार सू पाछा मिल जावला ।

मैं सोचू क घर सू कियां कोनी लागैं । अबार री घडी जद क जहर खावण नैं ई पइसो कानी, दवा खातर पइसा कठ सू लावू ? सरकार पाछो तो जरूर देवली, पण कद, आ थनें ठा कोनी भाई । आठ आठ दस दस महीणा तांई बिल रा खर खोज ई कोनी बापर । मह ण रा महीण पइसा मिलता रवैं तो ई कोई बात कोनी ।

फेर याद आव—हाल तिणखा आडा छव दिन पडया है । सोचू के अबकी दफै भलाइ की हुवो, अेक गरम कोट जरूर बणवाणो है । टाबरा खातर भी गरम कपडा बणवाणा है । घेटा आळो ऊन लेय आवू ता किसोक रव ? सागेडी गरम रवैला, पूरी बावा आळी सूटर पेरया पछै तो सी बार बार ई फिरला । गरम कोट नैं गोळी मारण री सोचर घेटा आळी ऊन री सूटर बणावण री सोचू । म्हार माय हरख रा हबोळा ऊठ अर मैं मन ई मन गावण लगू—थान काजळियो बणा लू म्हार नणा मे रमा लू

हालताई ठण्ड इत्ती खास तो कोनी आयी, पण तो ई दिनूग सिञ्या कोरै कमीज या बुसट मे बार निकळता लखावतो क डील मार्थं की न की होवणो चाइज—हावो भलाई जाकट या बोदी पुराणी सूटर ई ।

तिणखा मिलताई सोच्यो के अबक गरम कोट खातर कपडो जरूर खरीदणो है, पण दो तीन दिना ताइ आई बात सोचतो रयो क किसो कपडो खरीदू । गरम खादी

या ? अर किणी छेत निणय ताई पूग्यां पैसा ई तिणगा रा नोट ग्रालमारी में घरयोडो हव्यो मे बन्द हुवतां थकाई उड र पता नी कठै पूगग्या—पतो हुवता थकां।

मैं मन ई मन सोचण लाग्यू — ग्रस्सी रिपियां रा गहू बीस रिपिया हळगे धाणा ग्रर मिरच्यां मे तीस रिपियां रा गोड पचास रिपिया दूध ग्राळे रा चालीस रिपिया तैल रा घी डालडा रा ई खरचण न्यारा है। ग्रा मोटी मोटी चीजा मायं होव णियो खरचो जोडता जोडता ई म्हन लखायो क ई तिणख्वा म धाको धिकणो मुसक्ल है। आ खरचो तो लूखी रोटया रो है। दाळ चावळ किंगां पासाव ? म्हारो हाथ खरचो तौ गिण्यो इ कोनी। नी नी करतां इ तीस रिपिया तो खरच हुय ई जावै। पान खावू नीं सिगरेट पीवू नीं खाली चाय ग्रर सनीमा रो साव है। जिको भी जेवा मे हुवत ताणा र कारण घणा दिन धिकणो मुसक्ल है। ग्र ही हालत मे ग्र दमी कपडा लता कराव तो कठ सू ? ग्रर घर म बिना बुलाया पावणा ग्रावता ई रव। बिन बुलाया पावणा टाई हारी बीमारी भी ग्रावती रव। लारल दिना छोटोडी छोरी बुखार म जुडगी ही। मा ग्रर लुगाई खास ध्यान कोनी दियो। छोरी है नीं बापडी ! मा कव ग्रो कुधन तो काळ मे ई कोनी मर। मै सोचू —जिको काळ म ई कोनी मर, बो ई ताव सू तो ता ई कोनी मर सक। कसर हुय जाव तो बात दूजो है। या पछ टिटेनस हुय जावै। ग्रस्पताळ पूगा जितै जितै तो रोगी वटोज वटोज र मर जावै — कारण कै रोग बध्या पैलां तो आपां ग्रस्पताल रा दरसण करा ई कोनी। ग्रस्पताळ किसो मिन्दर थोडी है जिको राजो–राजी जावा परा !

छोरी बुखार सू छूगी तो छोरो बीमार पडग्यो। बी रो बुखार बीस रिपिया री दवाया सू उतरयो।

रात र लुगाई कह्यो —ग्रबकी ता गरम कोट बणावणो मुसक्ल लागै।

—हा ऽऽ । कयर मे निस्त सो हुयग्यो।

—ऊन लाय देवो तो मैं सूटर बणाय दू 'उण कह्यो।

कमर री छत कानी देखतो मैं सोचण लाग्यो क तीन-च्यार टाबर हुया पछ लुगाई, लुगाई कोनी रवै। बा ग्रापरै धणी री सुविधावा ग्रसुविधावां री ठीक वियां ई राखण लाग जियां क मा टाबरा रा ध्यान राखै।

—सुमीत सू हुकणी सो ऊन लेय ग्रावू ला। कयर मैं ग्रारया भींच लेवू ।

छोरो रोवण लाग्यो लुगाई उठ र गयी परी।

मैं नींद लेवण री कोसीस करण लाग्यो–इण महगाई नैं गाळया काढतो काढतो।

बी दिन मेडिकल बिल रा पचास रिपिया मिल्या हा । दफ्तर सू आवती टैम सागै काम करणियो जगदीश बोल्यो—बदरी, ले आव आपा गरम कोट देखा ।

—कोट ? मैं की चिमक्यो ।

—हा, सैकिण्ड हैण्ड कोट यार, अ पणाई बिक है नी, अमरीकन कोट ।

— सुभीत सू ढूक जावला ?

हाऽ नूवै कोट री सीवाई सू ई कम में ।

मैं हरखीजतो हरखीजतो बीरै साग हुयग्यो । मैं दोनू वे ई एम रोड माथै गाडा लिया ऊभ आदमी कनै पूग्या । बठै भात भात रा कोट पड्या हा—बद गळै रा कोट खुल गळ रा कोट ओवर कोट । भात भांत रा रग । भांत भात री डिजाइन ।

भूर रग माळो कोट हाथ मे उठायर मैं गौर सू देखण लाग्यो । दूकानदार रो सुर सुणीज्यो -पैर'र दखलो बाबूजी देखण परखण रा काई पइसा कोनी लागै । दाय आव तो लिया, नीतर पाछा मेल दिया ।

मैं बो कोट न पर र देख्यो । साव अगोअग ढूकग्यो । इ न बि नै हाथ हिलायर दख्यो । साळै आछा जचग्यो । मैं पूछ्यो—इरा कित्ता पइसा है, भाई ?

—बीस रिपिया । उण कैयो ।

मैं की कैवू, इण सू पैली ई जगदीस बोल्या—बीस तो ज्यादा है

लार तो प दरै सोळै मे देखर आया हा ।

—बाबूजी, चीज देख र बात करो नी ।

— देखलै, थारै बेचवाळी हुवै तो । जगदीस की करडावण मे आयर कह्या

—थे अट्ठार देय दिया बस, ई सू बत्ती गु जाइस कोनी ।

जगदीस कीं और हील हुज्जत करता, इण सू पली ई मैं उण न अट्ठारै रिपिया देय दिया म्है सोची कै बठई सौदो हाथ सू नी निकळ जावै ! कोट री हालत देखता थका म्हनै लखायो कै आ पइसा मे तो सुटरडी ई कोनी बण । कोट तो पछ कोट ई हुव ।

जगदीस दो कोट खरीद्या । बिण दलील दीनी क भायला, आपां भी रईसी माळै दाई फोर फोर'र पराला !

मैं अेक ओवर कोट उठाय'र उथळ पुथळ'र मांय-बार सू देखणो सरू कर्यो । बी रो अस्तर भी चोखी हालत मे हो । मै सोच रयो हो कै जे ओवर कोट माळो सौदो भी ढूक जाव तो टाबरां र ई कोट करवाय दू—इण न कटवायर । इण मे कम सू कम तीन टाबरां रै कोट तो आराम सू बण जावला । नूवो कपडा लाय र बणवावण री

उम्मीद मे तो टीगर मार सीयाळे ठण्ड सू पोटीजता रवैला । भर लुगाई रा तगादा ईया ई चालता रवला । बा रोजीना याद दिरावना भर मैं काल लावण री कयर टाळतो जावू ला ।

उण भोवर कोट रा पच्चीस रिपिया मांग्या भर बाइस मार्थ भाव र फसला हुयो । जगदीस पइसा तुडावण मे मास्टर है। जिकी जि स रा दूकान भाळो सात मागै बो छव देयर ई हटै । बीं र साथै होवण रो फायदा ई हुया ।

मैं उण नै चाय पायी भर भुजिया खवाया ।

× × ×

मैं घरा पूग्यो । मा डागळै माथ ही । म्हार हाथ म कपडा देखर उण पूछ्यो भो इत्तो काइ उठाय लायो रे !

—गरम कोट है । म्हारी भावाज मे गरमास ही ।

—कद बणवायो ? उण पूछ्यो ।

—बण्यो बणायो लायो हूं ।

मैं ब दोनू कोट मा र समूण्ड मेल दिया । बानै देखर मां बोली—अ बोदा पूर कठै सू उठाय लायो ।

—मा अ भमरीकन कोट है । चोखा भला, खावता पीवता भादमी तकात भानै परै नू वा कोट तो तू जाणै ई है । म्हारी बात पूरी होया पली ई मा बोली—जे अ कोट मुडदा रा उतारयोडा हुया ता ।

—हूंह ! थानै तो हरेक बात ऊंधी ई सूझ । मैं भुमळीजर बोल्यो—मुडदा रा उतारयोडा कोट भी कदई बिकया हा ! भरे मा, ब लोग रईस हुव । नू व साल माथ भापरा कपडा उतारै । बइ कपडा भठ बिक ।

मा भाग कीं भापरो दरसण बघार इण सू पली इ मे बै दोनू कोट उठायर माळिय मे गयो परो । बठ लुगाई न दिखाया तो उण भी भैं डीज बात कयी । म्हनै भाळ चढी—हूंह ! भारै भेज मे तो बस भेक इ बात बटयाडी है कै भ कोट मुडदां रा है । भाछो हीयो फूट्यो है भा लोगां रो । भक्कल रा दुश्मी कठै ई रा । मैं खासी ताळ ताइ माथ रो माथ भुसळीजतो रयो ।

× × ×

दो दिनां पछै टाबरा खातर कोट कण'र तैयार होयग्या । वां न परधा पछ टाबरा रा हुलिया ई कीं-की बदळयोडा लखाया ।

—अ तो असल ओपग्या रे । मा कह्यो ।

— हां ऽऽ, कैयर म सोचण लाग्यो कै असल ओपो या नी ओपो,
जापतो जरूर होयग्यो है ।

मैं काच सामी ऊभ'र म्हार कोट रा बट्टण बन्द करतो मुळकण ला
माळिय सूं बार निकळघो तो लुगाई डागळ माथ ऊभी दीखी । म्हनै कोट मे देख
भी मुळकी । बी री मुळक रो मतलब हो कै सागीडा जच रह्या हो ।

म बीनै मुळकती देख'र आख मारी अर पगोथिया उतरण लाग्यो । दफ
जावण खातर साइकल उठायो अर टुर बहीर हुयो । पूर मारग आ सोचतो रैयो—
बरस पडणिय रुट्ट रो सामनो आराम सूं कर सकूला ।

❂

# "भोलाराम री फारगती"

माटी खोदत माटी बोली-यू कुम्भार ला म्हारो सग साथी
एक दिन माटी माय मिल जाणा ।

चौधरी समोवा हिमाली ठाडौल म वांधं केई ले र वयारा मे ऊमा ठडी गत रा मस्ती मे भजन उगेरता थका काम कर रह्या हा । परभात री वळा, प्राभो नारगी रै ज्यू पाक ग्यो हो, गुलाबी सूरज ऊणा र माथ पर हीगलू टीकी ज्यू सोमा देतो हो। चिडकल्यां र साग सम्मो गीत उगेरतो हो ।

समोवा पाली जिला री बालो समिति मे राणी ठेसण र पसवाडै गांव बामणिया रो वासी दो हो, जिको राणी सू दो कोस माथ बस्योडो है । बार बार काळ नै बाढ सू जूझतो जोबन गळ ग्यो हो । गरीबी सू लडता लडता उणा री कमर वेवडी होयगी ही, जि दगाणी री ग्राडया सुलभाता सुलभाता केस धोळा पडग्या हा । जीवण न जगत री का णियां सुणता सुणता कान पाक र वोळा होयग्या हा जमाना री पल पल पलटती चाला देखता देखता नैणा री जोत जाती रई ही, सिरमेट जडा बाजरी रा सोगरा न तो रा चणा चावता चावता बत्तासी बैरग होयगी ही । समोवा दो बीसी नै दस दिवाळया देखी ही । गगा जलिया बरा माथ खजडो री छाया मे चिलम री छेली फूक खाच'र खखारो कीधो श्रर लावा सकारा नाखतो भजन उगरयो—

नरसीजी र मोहेरा री ठाकुरजी न लाज जो

× × ×

श्राज सू साढा छ बरस पैला री वात है । समोजी मोकमपुरा री सडक र रस्ते रस्ते नैन की स्कूल सू मोटोडी स्कूल होय र राणी रा मझ बजार म जाय पूगा । प्रतापजी मास्टर सा मिल्या, चायडी बीजी पाई नै व तो उणार ट्यूसन करवा न जाता रया । जेब में पइसो एक नीं, उधार कोई देव नी, काळो होव ज्यू बजार रै इण खूण

सू श्ठी उठी रोवतो फिर-रद ई नवा परताप बजार मे जावँतो कदई जूना महावीर मार्केट । राणी ठेसण रै बजार मे सेठ खीमराज हिम्मतमल नवा जैन मदिर मे दिगम्बर देव री पूजा करने कपड़ा री दुकान खोली श्रर किराणा री दुकान माथै जाय बठा । श्रगर बत्ती लगाई श्रर—'श्ररि हृताणम नमो सिद्धाणम' रै पछै भजन उगेर्‌यो—

"म्हारी हु डी सिकारो महाराज रै सावरा गिरधारी

दुकान कन सेठ खीमराजजीसा भेंटीजग्या ।

—'राम राम सेठा ।'

राम-राम समा श्राज काल यू भोलो क्यू है, रे ?

काई बताऊ सेठा, भोळया रो ब्याव करणो है श्रर काळ पड़ग्यो है, बठीनै ऊनाली रो बीज चढ़ावणो है । गतागम मे पज ग्या हा ।

श्ररे तो श्रापणो दुकान थारी इज है । श्राइज श्रर चाइजे जिको लेजाइजे ।

श्राप तो मालक हो, सा । बगत पड्या श्राप मदद नी दोला तो कुण देवैला । समोबा सेठा री दुकान ग्या श्रर पाच मण जव श्रर डेढ सौ रिपिया रो गाबो-लत्ता लियो । सेठ खीमजी पूरा खातो पाडियो, श्रगूठो करायो, साख घलाइ श्रर पोटको बधा'र सम्मा नै ऊ चा'र म्हीर कीनो । माथा माथै जवा री पोटकी श्रर सेठा रै श्रहसान रो बोझ लाद्या विचारा म डूबतो तरतो समो गाव पूगो ।

घरे जा'र पोटकी उतारनै ठडो सास लीनी श्रर बोल्यो—भोळया री मा ।

—'हा काई कवो ?'

श्राज धान रो सळ तो सेठ खीमजी री मेहरबानी सू होग्यो है भोळा रै ब्याव रो भी पछ सोचा ला ।

—'उणा रो घणो न घणो भलो करे भगवान, म्है काइ देवा, म्हारी श्रात-डल्या श्रासीस देवला । लो श्रब ब्याळू कर लो, केवो तो ऊनी ऊनी घाट ठार दू ।'

—थोडी ठर, पाळो श्रायो हू । पसीनो सूखण द, पछ पेट नै ता भाडो देणो इज पडसी । थू तो म्हारो घणो ख्याल राखै है पण म्है तो थारी मोटियारपणा मे इज मारतो उतारतो हो श्राहा वे भी श्रापणा केडा रगीला गुरगा दिन हा ।

× × ×

ठीक चार बरस पछै सेठ खीमजी रा रिपिया ब्याज बीजा सगळा मिला'र छ हजार होग्या । सेठजी तकरार करण लागा । सम्मोबा साहूकार श्रादमी हो श्रळपो नी हो । नेकी माथ हो सेठ एक दिन बाल्यो— समिया, म्हारै सागडो रहजा म्हारा-पईसा

भी पट जावैला नै थारो भारई हूठगी हो जावेला नै हाथ भी सोरो सरके ला। समोवा हुँकारो दे दियो, ममाजी न बार महाना रो एक रेजो, एक पगरखियां री जोडी देव ग्रर महीनां री ग्राधा किलो तम्बाकू न्य । समोवा घर रा सोगरा राधै ग्रर सागडी रो काम सेठां रे बेरा माय कर । घर मजला घर कूधां सासा दिनहा निकल्या सेठां र बेरा माथ एक दो ग्रादमी फेर रेवता हा, उणां सू ममाजी री नी पटी। वे उठा सू ग्रायग्या न उणारी जगा छोरा भोळया नै सेठां र सागडी राख दीनो। समावा ग्रापर बेरा गगा जलिया माथ ग्रायग्या।

खीमजी सेठां रो बरो बामणियां गाव रै धराऊ में आधा कोस ग्रायो । भवरसिहजी सोलकी र भादरवां वरां रै पसवाडै। पक्की ईटां रो हुयो हुश र खीवो योडो है । बजुडिया किवाड गाडा पोळ रै लागोडा है। भोळो उठ जायनै काम धधै लाग ग्यो । सेठ दुकान पर काम कर। कामां उणारां धामा है। एक दिन री बात है दुकान पर गिरागी मोळी ही भाव मदा हा, खीमजी नव भारत ग्रखबार बाचता बांचतां कूकि रैया—ग्ररे ग्रो काई होय ग्यो-इण इमरजेंसी तो म्हानै रुलाय दीना, काई धधो करा जिको धधो करो उणमें कुचमाद करै। किकर कमायन खाणो ?

—'ग्ररे सेठां काई होग्यो बोलो तो सही।'

काई बताऊ बम्बई मे म्हारा भाई नै हाथी दात री चोरी रा माल खरीदण र कारण गिरफ्तार कर लियो है।

दिवाली र तीनेक दिन पैली री बात है, भोळो सझ्यारा ब्याळू करने घर बार निकळयो, पछेरडी ग्रोढयां बेरा माथ जावतो हो। भोळा रो घर चौवटा में है ग्रर इण वास मे इज भाई लालचा र घर कन चोगाल है,जठे घणेरा मिनख बूढा बडेरा वठाहा गिराम सेवक नरपतसिह भोळचा नै हेला कीना भोळया भी उठ थोडी जैक सारू ओरू मे तापण नै जाय जमियो। मास्टर भवरसिह सोलकी केय र्या हा—'ग्रापण परधान मत्री तो कमाल ईज कर दीनी। २१ सूत्री योजना मे करसा नै तो निहाल इज कर नाख्या है। ग्राखर ग्रा देवी देस सू गरीबी न मेट ने इज रवला। भालाराम बिच में इज बात काट ने बोल्यो— इमरजे सी न २१ सूत्री ये दो सबद सुणता सुणता चार महीना होग्या ग्रापण गाव मे तो इंदिराजी हाल कोई परचो दीनो नहीं। वे ईज जूना हळ वै इज जूना गीत, न वा ईज जूनी रीत। म्हारो कल्याण इंदिराजी कर जद जाणू । मास्टर भवर जी कह्या—काई रोग है थारै केव नी ठा पड । यू तो दिन दिन रामधनिया छोरा र ज्यू पतळो पडतो जाव उदास उदास फिर पण मन री बात लुगाई न भी केव नी। बोल तो सही कवे तो कोई ठा पड । भोलाराम बोल्यो— म्हार बाप रै हाथ रो लेणो इंदिराजी

चुकावै अर खीमजी बाणिया रै कलम नीचा सू म्हानै निकाल सकै तो म्हारो मानखो सुधरै। उण रै वेरा माथै म्हू नै म्हारो काको सागडी रो काम करने बेगार निकाळ रह्या हां उणसू छूट हो सकै, तो कोई इलाज करो।' मास्टर फट पडूत्तर दीयो—'हां हां क्यूनी इन्दिराजी रै आर्थिक योजना मे गरीब करसा नै करजा सू फारगती करण री योजना ई है? थू काल म्हारै साथे बी डी ओ सहाब कनै चाली चाल। उणा नै सगली बात थू समझाय दीजै। पछै व कारवाई करेला। भोळो बोल्यो—'अच्छी बात है। काल चाली चालणो पक्की रह्यो।"

× × ⊠

दूजे दिन मास्टर भवरसिंह रै साथ भोलाराम चाली ग्यो। आफिस मे बोडीयो बठा हा, जाय नै सगळो बात समझाय दी। बी डी ओ कलेक्टर साहब ने टेलिफोन कर सारी बात कीनी। मुंसिफ कोर्ट मे केस दर्ज कराय दीनो। मुंसिफ साहब बाणीया खीमजी रै गिरफ्तारी रो वारंट निकाल दियो। भोळाराम नै करजा नै सागडी री बेगार सू फारगती मिलगी।

सागडी पणो सू ई नही, करज सू ई आजादी। इसी मुगती जको उणरै सगळी पीढिया रो सपनो ही।

## "बुधवार"

"अम्मां जा, धोक दू ।'

आवाळो सिणगारी रै पगां कानी झुकग्यो । 'कुण होसी ? आ ब्याइजी रो राजूडो ! घोल चाणचक कियां आयो रे, राजूजी ?' सिणगारी आपर चसमैं न डोढो कर'र सामी उमैं छोर नैं देखण लागी ।

मांचल्य नैं खींच र ऊपर बठतो राजू पडूतर दियो—

'भौजी न लेवण आयो हू—अम्मा जी !"

"क कह्यो ? बचो नैं लेवण पधार्‌या हो ?

हा, भायो, टैक्टर सू पडग्यो । लारल पैंड सू म्हारो मुतलब है—उणां र घणी चोट आई है । हालत खासी खराब दीस है सो बापू कह्यो, जा थारी भौजी न हाथू हाथ लै'र आई पगा पाछो बावड ।"

अर इतरो कय'र राजू माच री दावणां मे आंगल्या फेरण फासण लाग्यो हो ।

'पण थारो भोगनो भू वाळ गयो है काई ? म्हारी बचौ नै पीर आया दिन ही कित्ता क होया है ? अबार ईज टाबर न पाछी किया खिनाऊ ?'

'आपरो कहणो बेजा कोनी ब्याण जी ! पण सोचो तो खरी– भाय रो हालत तो देखो । हारी बेमारी मे तो मेलणीईज पडै ।'

राजूडो साची बात बताय दी, पण सिणगारी र भेज मे कोय ढूकी नी । वा सोचो–*अ लागडा जाळ घडन छोरी नै लजावणो चाव है । छोरी खन सू घणो पीटावण* सारू ही ओ नाटक रच्यो है सो वा खीजती सी बडबडाई—

'राजूजी ! य जद चावो म्हारी छोरी नै ल जावा । म्हन लोटाय दो । छोरी र बाप न टोळाय दो । अं किरतब चोखा कानी है—हा । पग नेखम जाणी राजूजी इबक बचो न नी मेलू लो–हां ।'

"पण माय री हालत नेहातत हाम गी है, अर थे दूसरा ही रोजणा रोय रह्या हो।। थ जाणो'क मायं रं वचण की ई प्रासा कोनी लागं। हाथू-हाथ भोजी न मेलो तो बात करो नीतर हूँ तो चाल्यो। म्हारो तो खुद का जीव को लागं नी!'

राजूडो भ नायो तो सिणगारी सिलगगी—"इया ऊळ जलूळ किया बक रह्या है राजूजी! थूक थार मूडै सू। नोज दूर पार पावणा को बाळ बाको भी क्यू हुव।"

अर अतरो कय'र बा उठनै रसोवडी कानी जावती बोली—'सिझ्या कचो भी पा जासी अर बीरो बापू भी आजावैला। तो थै बात कर लियो। मैं चा बणाऊ हू।

राजूडो चुप माचल्यै पर हाथ रगड़तो बैठ्यो रह्यो। अलबत्ता उण री काळजो धडधडकधो हो अर मुड पर घणी उदासी प्रकटयोडी ही। पण ब्याई सगा रै घरा आवणो सो'रा, निकळणो दो'रो होया करै है।

प्राथूणी कानी हार्‌यो थाक्यो सूरज आथमग्यो, गुदळक पडगी। पण, अज ताणी कचो भोजी खेत सु घरां नी आई। राजूडो थार चूतरै पर फळस कानी पारूयां मांडयां गुमसुम बठ्यो हो।

इतरै मैं घास को भारो लिबा कोई फळसै माय बट्यो तो राजूडो ऊभो व्हैग्यो। आवण वाळी कचो ईंज ही।

"भोजी धोक द्यू।" राजूडो उदासी छोड न किलकतो सो बोल्यो।

चूतर पर हर कच्च, भेरण घास को भारो भचीड दई नीचै नाखती कचो मुळकी—'थां कद आया, लाल जी ?" बा आपरा सामा ढूंमाया बाळ ठीक करन थोडो सो घूघटो सारयो।

राजूडो चूतर माथ बैठग्यो। कचो ऊभी-ऊभी बी री बातां सुणती रई। जद आपरै धणी राजूड री हालत बावन सुणी तो वा सणणाटै मैं आयगी। कचो रो छाती धडकण लागी - 'हे राम! जद ?"

जद काई! सवार गाव चालस्यां। थू वेगी आय जाती तो सिझ्या आळी मोटरडी सू चालता। पण अब तो दिनग्या ही काम बणसी। यू थू फिकर मती कर भोजी, माय री हालत खासी ठीक है। पूरो चेतो है। बापू सैं'र सू डागटर लेवण गया है।

देवर भोजा गुवाडी मे ही बाता करता रया तो माय न चमचेट मी सिणगारी चराई—"कुचली सारी रात गुवाडी मे हीज ऊभी रवली कै—माय ई बळसी ?

ल्यो मा तो जरख चढ़गी है । ग्रामा मांय चाला—लालजी ! घर क्यां ग्रागण में ग्रावणो ।

क्यालु बखत कयो रो बाप माधोदास घरा ग्रायो बो ग्राज जोसी जी माळी डोळी में बड़सी गयोडो हो । ग्राखं दिन निनाण में बसली खीचता-खीचता माधोदास रा ग्राव लपा रैग्या । ग्राज बीरो म्ह ह दूर्ग हो ।

बुढापे में बरसण सोटो ! ग्रर जो घर मे टोटो होव ग्रर धीणो नी हुव तो बाप र बाप कांई करै फर बापड़ी मा मरद री जात !

माधोदास ऊन पाणी सू हाथ पग धाय नै रसोवड़ी मे ग्रायो तो सिणगारी खीचड ग्राळी थाळी सामी सरकाय दी । माधोदास पली गास्यो लेवता होव कयो री मा बोली— 'सुणो हो क कवली रा बापू ? पांवण र लागगी बतावं । टेगटर री लारलो पईयो ऊपर सु निकळग्यो ।

"थ नै कांई ठा !" माधोदास रो गास्यो ग्रोठी थाळी में ग्राय पड़ग्यो ।

राजूजो ग्रायो है न, कवली नै लेवण तोई ।"

"ग्रोह ! तो भेज देवती ।"

'भेज किया दवती ? भज ग्रायां नै ही कता क दिन होया है ?"

"थाई बत ! ग्ररी भागवान पावणा र तो लागगी ग्रर थू दिनां नै रोवै है । काले वधू होग्यो तो ?"

"थूको थारे मूडे सू । मैं जाणू हू ब्याईजी रा छोरा झूठ मूठ बोल न छोरी न लेजावणो चावै है ।"

"थू क मांयतां रो सिर ग्राण है ! ग्र बातां भी कोई झूठ बोलण री होव है ?"

फेर माधोदास वय् ई नई बोल्यो । डच डच खीचड़ी पेट री कोथली मे नांख न राजू न हेलो पाड्यो ।

राजूडो ग्रायो ग्रर पूरी बारता मांड न बताय दी तो माधोदास माथो पकड'र बैठग्यो ! थोडी देर कोई नीं बोल्यो । ग्रन्त म सिणगारी ई फूटी—'फिकर कांई करो हो । म्हनै कांई ठा ! म्है तो जाण्यो मजाक करै है । नींतर सिझ्या ग्राळी मोटर सु भेज देवती पण ग्रब ? "

"ग्रब कांई, सवारै छ ग्राली गाडली सु खिनाय दोज—हां ।"

"सुवार ? ना बाबा ना। सुवार तो बुधवार है।"

'यार, बुधवार की, ऐसी की तेसी। सोगा कै तो हाथतळा छूट रह्या है अर ई माराह न बुधवार सूझ है। मै कवू, सुवारै कचली नै भेज देई हो।'

"थे आ काई बात करो हो ? बडसी काई गया, सगळा न मान स लिया। कुम्हार कुम्हारी सू बस नी आवै तो गधेडी रा कान ऐंठ—क्यू ? पण, सोची तो सई आजत'ई कोई आपरी छोरी नै बुधवार रै दिन सासर खिनाई ?

"म्हत तो ठा कोनी। मेरो माथो मती खा।

"तो थे भी मेरो भेजो मतो खाओ। जावो, सोय रैवो।

आगल दिन बुधवार आयग्यो। माधोदास लाख कोसीसां करी, पण बदी-सिणगारी अटल रई। कचो नै नई मेली, सो नइज मेली। जद राजूडा क्यू रुकतो वो खाली हाथ ही वहीर होयग्यो।

फेर जिया-किया बिसपत रो दिन उग्यो, बुधवार बोल्यो जाण र सिणगारो लाडेसर सू बोली—'कचली लै मैंदो माडलै थारलो बापू पू चाय आसो थ नैं त्यार व्हैजा हो।'

माथो चोटी न्हाय नैं कचो त्यार होयगी। बहू बेटयां भैळी हुई न कचो रा गीत गाया। मोटर रो टम होयो आण'र माधोदास पेटली ऊची कर'र बस अडडै कानी तुल्यो।

डुसक्या करती कचली साथण्या र साथ पाछै पाछै जीवदोरो करती चाल री ही। खर मोटर आई। कचो सेडो सिणक्यो, आसूडा पू छ्या न मोटर म आगली जनानी सीट म धस गी। खलासी ने पेटली झलाय, माधोदास भी उळझतो आखडतो मोटरडी मे जाय बड्यो।

धारा म धू घाटो करती मोटरडी भागी जा री ही। कचो रो अग अग उछाळा खावती गाडली रै साथ-साथै हिचकोळा खावै हा। गोरी हथेल्या मैं'दी सू री हो, कळाया हरी चूडया सू खणक ही। मोटी-मोटी कटोरा सी काजळी आंख्यां म तालो काजळ। मांग भरयोडी न झीणो—चीर। कडेक्टर टिगस काटणो भूल'र उण परी माथै आपरी निजरा टेक दी—बस। मोटरडी रळका मारती न्हाटी जाव ही। कचो रो काळजो राम जाणै क्यू उथळ पुथळ हो रह्यो हो।

गाव आयग्यो। बस थमी तो बाप बेटी उतर्या। माधोदास कांधै पर पेटली ऊचाय र आगै चाल्यो। कचो घू घटो सभाळती गळ गळ चाल री ही'क गु वाई कुव कनै माधोदास रुकग्यो बोल्यो—'कचली, थोडी ठ'र आ नै निकळ जावण दे।

कचौ घू घटौ उठाय नै सामी देखण लागी । गांव रा लोगडा कोई नै—बाळ र मुसाणा सू श्रोठा श्राय रह्या हा । 'ह राम जी ।' उण रो काळजो धक धक करण लाग्यो । श्राख्यां आगै श्रन्धारो उतर श्रायो सूखतै होठा न जबरन गीला करण सारू जीभ फेरती बा बाप सु बोली— बापू कोई मुरदै न बाळ'र श्राबा दिस श्र लोग ?'

पण माधोदास की नी बोल्यो । चालतो ही रह्यो वो खा'तो खा तो पावडा भरण ढूक्यो । सामलै घरा कोकाटो मच रह्यो हो ।

'हाय, रामू रे ' रा करुण कळपती श्रावाजा कचलो रै कानां सु श्राय टकराई ।

फळस बडता तिवाळो खाय'र कचलो पछाड खावती वरळाई । माधोदास पेटली फैंक न घणोई वगो वावडघो पण वो बेटी नै समाळतो उण सू पैली ही बा बेहोस होयगी ही ।

कचौ र हाथा री हरी कचकोल्या रा, किरचा किरचा होयग्या—बस ।

# अेक अनसुळझी डोर

अेक महापुरस नसैं मे भागतो हाफतो बास री गळी मे आय पूग्यो। उण नस रो जोस रात रैं अंधारै मे वराये बळ ज्यूं ऊफणै। बिचारा री गति कदमा सू वेसी होयरी। घर री पोळ नैं खोल नैं आगळ चढादी। साळ रा ओढाळघा किंवाडा न धक्को मार उतावळ सू माच पर पड्यो अर रजाई ऊपर गेरली। फेर भी हुडहुडी चढरी। सगळो धूजू क मैं इत्तो निबळा हू? आज अेक सिपा मरतै माणस नैं सा रो दियो है। मेरी आतमा न घणो सतोस है। बिचारो जमूर्यो! पडत री चाय स्टॉल पर दस रिपिया महीन मे गिलासिया धोवै।' बो कोई नौकरी करण जोग है! आठ बरस रो टाबर तो आपरा सायना मे रमै खेल अर इस्कूल जावै। दिन में पाच बार फिर फिर खावै पीव। पण जमूर्यो तो रात रैं ग्यारा बज्या ताणी पडत जादूगर रो जमूरो बण्यो रवै।

मैं पसवाडो फेरयो। रिजाई मे की निवायो होयो। सावचेत होयो। कन मूं ज री माचीं पर लुगाई ना हुडिये नें छाती र चेप्या निधडक सूती ही। मै इत्ती उवारी घर मे बड्यो हूं ज इण नैं ई बात रो बेरो पडजाव तो निरा बडबडाटा कर नैं जोव रो घणो लोही–रस कर गेरै। मैं डरतो रिजाई में मूं डो ढक लियो आख मींच'र सोवण री जचाइ तो जमूरै रो उदास उतर्यो चै रो जमानैं री चपेट में रूळीजतो, सोसण री ठोकरा में गिडो ज्यू टप्पा खावतो मेरी आख्या सामी ऊभो होग्यो। म्हे चावू हूं क म्हन नी दीख पण उण रो सगळो डील सापरत होरह्यो। उण रैं जांघिये रैं पाछल पायचै री कारी रा टाका मोजू उधड चुक्या हा। उण रा हूं गा कोयला री रगड सू काळा होरया हा अर टाकर रा निसाण साफ दीखै हा। बिना बावा री बुस्सट न होणै रैं समान ही। धवळैं गाभा वाळा नैं बी पर उबकाई आवती अर पडत नै कोई दूजो छोरो राखणै री कैवता। म्हनैं उणा पर घणी रीस आवती पण वां नैं रोकणो म्हारै बूतै सू पर हो। इत्तो जरूर बोलतो–'पडत नैं इण सू वेसो सस्तो कुण लाधै!' पडत भी बोल मूं ड सू मुळक नै बात रै पूरण विराम लगा देवतो।

मेरी आंख री नींद हराम होयगी । मू बो उघाड्यो सो लाइट चसँ ही । सोच्यो लाइट ओफ करदू स्यात आंख लाग जावै । उतावळो सो ऊभो हो र लाइट रो खटको दबायो अर पाछो गावल्या री घुरी मे बहग्यो । इरो म ना हडियो चू चू कर न बोकबा लागीजगो । मेरो जो धडक्यो-जे लुगावडी जाग जायली तो फेरू उग र सवालाँ र वयू मे अमूझण लाग जावू ला । सो दीदा मूद र नींद री बाट जोवण लाग्गो । पण नींद तो नेड निहास'ई निजर नीं आवै । म्हन घणो सोच होरयो'क सवारँ किया उठ्यो जावैला । उवार हो जावैली तो टीगर चाय नीं पीवण दे ला । पाव दूध री वधी बाध मेली है । आसो दिन उण सू ई काम काढणो । यू म्हू तो घणखरी बार पहत री दुकान मे हाफ चाय आहिस्ता आहिस्ता गळे में उतार पेट री ळ मेट लिया करू हू । घरां लुगावडी चाय रो फीको पाणी अर बाजरं री रोटी रो चोथायो टुकडो दे'र सगळा न सलटा देवै । पण आप कुणसो उपाय लगावैं इणरो म्हनैं आज री तिथि ताणी मालूम कोनी । यँरो पाइ तो की कर ? कमाई तो आंख्यां आगैं ही । जाण बावळो होरह्यो हूँ । आत्मा रो निवळापन मिनख नै समाज रै पगतल सू नीचो पूर रो गिडो क्यू गुटका देवै । इण वास्तै घर सू पर केई चाय पान री स्टाल पर अणकटत वगत न अणसरतो विसावू ।

पहत री दुकान पर दिनूग पैली पूगण वाळा में मेरो नाव सिर गिण्यो जावै । उण वखत जमूरो बुहारी काढतो लाध पर बीडो रा लामा लामा कुटका न्यारा घर लेवै । दिन भर बीडी पीवण रो जुगाड इण टेम ई लगा लेव ।

म्हू उण न पूछतो-'जमूरा ! कूटळँ र साग आ कुटका न क्यू नी फक्या ?

'मा'तर जो ! पीवू ला ।'

'बीडी रा कुटका !

'हा ।

क्यू पीव ?

थे क्यू पीवो ?' म्हारी मू बो बीडी र कसल धूव सू खारो होयग्यो । बीडी रै नाक सू मटमेलो गीलो पीप जीभ रो सुवाद विगाड दियो । भाळ मारतो बीडा नै नाळी मे फँक न्हाखी । फेर पड्उत्तर सोच्यो—'म्हू तो साबूत पीडी पीवू हूँ, नई ? जमूरो इणरो काई जवाब देवतो । भट्टी रै धूव सू उण री आंख्यां मे बळत लागरी ही । बो दोनू हाथा सू आख्या मसळण लागो जणा हाथां री काळस सगळ च'र पर लिपीजग्यो ।

म्हारो हाथ छाती पर हो । उपर रजाई पडी ही । म्हनैं लाग्यो क म्हू अेक अणकूत विचारां रै खारिये नीचै दब्यो पडयो हू । म्हू दब्यो-दब्यो सो 'मिमिआयो जाणै गळो दू पीजतो होव । घरवाळी चिमक र जागी—'ओजो ! काई होग्यो ? यू क्यू करो

हो ?' छाती पर सू मेरो हाथ परे करयो अर म्हनै गै'रो घोथळयो जणा जार चेतो होयो।

'बुरो सपनो आयो हो काई ? म्है ऊ ऊ कर नै पसवाडो फेर लियो।

'नही छाती पर हाथ आयो हो।' वा म्हारै माथ पर ही आगी ही अर म्हारै मगरा पर हळवा हळवा हाथ फेरण लागी ही। डील मे सीवात पडण लागी ही। थकान अर टूटन री बेहद पीडा सू थोडो औसाण मिल्यो। पण काळजै सू रुक रुक कर उठण वाळै दरद रो भवूळियो अयाल पानडा न न जाण कठै उडा देवै।

'पडत जी ! पाच रिपिया ।'

'दस दिन पैली तो लेग्यो हो।'

'जरूर लिया सा ! भूठ बोलै बो दागलै रो पण '

पण रो इलाज कोयनी। तेर छोर नै काठो राख। म्हू तो इण सू आखतो होग्यो। तीन रिपिया रा तो गिलास फोड गेर्या '

मादर काह रै झापट क्यू नी चेपो ! जमूरा ! इनै देख, पडत जी के कैरया है ?' जमूरो आपर बाप र सामी चुप खडयो हो। सकूरो खट सू अेक सपीड मेल दियो स्टॉल पर बठ्या सगळा मिनखा रो ध्यान उण कानी होयो।

ओ सकूरा ! बिचार छोरै न क्यू मार है !'

'थान बरो कोनी। ओ जालम बहोत है।

'ओ कोई नौकरी करण रै मान है ? क्यू फिजूल चढ्यो आवै ! तेरो सगळो खरचो इण सु ई काढणो चाव, आ किया हो सक है !'

मास्टर जी ! सकूर नै तो जूव सू ई फुरसत नी मिलै। कदे सोळयू कदे घडियो ।'

'ओ ! मेरे भूठै नाव क्यू निकाडै है ?'

अच्छा जावण", पडत ! इबकाळ सकूर नै रिपिया नो दणा है। ई छोर नै अेक जांघियो अर अेक मेखळियो सिवा दीजै।'

'इयेरो बाप बडा पैली तेल पी जाव ।'

लोग बाग इयाली रसहीन बाता मू ऊबग्या हा। आहिस्ता-आहिस्ता अेक अेक रिगसता गया। बचा खाली पडी ही। करीब रात रा दस बजेसी म्हे आया हा। जमूरो बरतन मांजरह्यो हो। पडत दुकान बढावण री तजबीज में लागर्यो हो। मैं हडबडा'र उठ्यो अर पडत कानी देख्यो—'पडत ! अेक चाय तो और प्यादै ।'

'भट्टी बुझगी । पान खा सको हो।' पान में'ई सतोख कर स्टाल सू बारै आयो। ठड फडाके सू पड़ै ही। धूजणी छूटगी कामळ नै सूल लपेटो। अेक मजूत थाळस सू डील टूट्यो अर जडता री उबास्यां बढता पगां नैं थाम मेलया। अेक प्याली चाय खातर पग आप सू आप राकेट री टी स्टाल पर जा लाग्या। चाय रो आडर दे'र बेंचरै खूण म भेळो हो'र उक्डू बठग्यो। इयाँ'ई तो जमूरो भट्टी रै सार बठ्यो'रवै। कडाव री ठड सू बचण खातर भट्टी र भीतर भेळो भेळो हुव । उणरी छोटी छोटी आख्या मे अभावा रो दरियो हिलोळा मारतो दीखे जिणमे पाव री पुतळी डबू-तिरू होवती रवै । म्हारै काळजै मे चाण चक'ई हूल उठ्यो अर प्याली न मेज माथ मेल'र हाथ री हाथ पडत री दुकान पूग्यो ।

जमूरो आपरी सागण जगा भट्टी र बच्या खुच्या खीरा सू धूजत डील नै निवास दे रह्यो हो। अेकलो सूनी सड़क माथै-अेकलो। साधारण टाबर तो अ यांली सूनसान री साय साय मे भिरडा'र मर जाव। तो काइ जमूरो जीव है ?

'ओ जमूरा ! सकूरो कोनी पूग्यो काई ? उबार घणी होयगी रे !'

'नही मास्तर जी।'

'भट्टी रा कोयला तो कजळाग्या। सिया मरसी नी। गाबल्या कठै ?'

'मेरो बापू लासी।'

'बापू भरोस तो करडा लठ थरको हो जावला।'

'नित ई लार देव है नी।'

'इण बखत ताणी ?'

'हा, कदै कदै सुधियां मी आजावै।'

मेरो माथो झणझणायो। इत्तो लापरवाह बाप ? मिनख सू सज्ञाहीन कवणो चाहिज उण नै। बेटै न कितो अखूट विस्वास। जे आज बो नीं पूगला तो ? इय बिचार सू म्हारा हिरदो धक'सू अेक बर थम सो गयो। म्हारो मन ऊभळ आयो। कामळ उतार उण र मगरा माथ मेलतो बोल्यो— जमूरा ! ले, ओढले। दिनूगे आवू ला तद पाछी लेलू ला ।

'नी मास्टर जी ! बापू मार।'

'कोनी मारै । मैं समझा दूलाँ। तू इण बच पर सोजया।'

जमूरो तुर त कामळ मे घोटमोट हो'र बच माथै पडग्यो। उणन'सूतो देख'र

ग्रात्मा नै गरो सतोख होयो। म्हारी चाल मे फुरती ग्रायगी ही। म्हन घरवाळी जगायै ही—'पोर दिन चढायो। ग्राज उठो कोनी काई ?' म्हूं हड़बड़ा'र उठ्यो। डील मारो होग्यो हो। मायो भच भच करै हो।

'बा कामळ कठै है ? मेरै तो ग्राज भू जारी काढ़ता काढता हाथ-पगां रै टूट वधोजगा।'

'ग्रठै ई पड़ी होसी, देखल।

सगळै तळपटलो। हा सांच ल,थ रात न बाजार ग्रोढ़'र गया हा। कठै छोड र तो नी ग्रायग्या हा ?'

भई मेर तो याद कोनी।

'थारै याद क्यू ग्रावै! ग्राधी ग्राधी रात ताणी दुकानां मैं ढबडेका ग्या बोकरो हो इसी विसी तो की रो। ई मोटयार नी हुवोई है।

'रोळा मत कर! बठै भूल्यो हू तो कठ'ई कोनी जावै। लाघ जासी।'

सवार जल्दी ही पडत री स्टाल' जाय पूग्यो। मन मे ग्राई—सावळो सो कामळती लेजा र उण रै मू डै माथै मार दू नी तो ग्रावै दिन मू ड विगाड्यो राखेला। पण डील कोरटा मारचोडो सो होरह्यो 'हो, सो पली चाय पीवण रो ग्राडर देवणो चाहिज। म्हनै जमूरो कोनी दीख्यो।

'पडत! आज जमूरो कोनी दीख।

'मास्टर जी! ग्राज तो घणा परेमाण होया।'

'क्यू ?'

'ग्रायो जद दुकान सूनी लाधी।

तो जमूरो कठै ग्यो ?'

उण नै तो सकूरो ग्रस्पताल लेग्यो है।'

हैं! काई बात होयी ?'

रात नै हरामजादो सकूरियो छोर नै समाळयो'ई कोयनी। मो सीत मे लकडी होयग्या।'

'पण रात नै तो म्हैं अण न म्हारी कामळ ग्रोढा'र ग्रायो हो।'

'कामळ तो कदेस री जमूरै री पेटी मे ब द होयगी। जमूरै सन कुण छोड हो?'

मैं सिरपाट्ट होग्यो। म्हारै अतस री नसो जिण वेग सूं वैरयो हो उण गत सूं ई निरामा री बाळू मे समाइजगो । म्हारै माथै री नसा भच भच करण लागी ही। गम्ब वळै ही। गिलास मे पडी पडी चाय सीळी होयगी ही। बोडी रो कस बे मजा हाय्या हा काळजै मे धमोड सा पडण लागीजग्या हा। बैंच रा पाटिया सूळी सूं बेसी चुभीजणा लागा हा।

अेक ऊंडो धदधडो सो भायो। मैं तावळो सो उठ्यो। पग आपू आप अस्पताल खानी मुडीजग्या हा। विचार भूणिये रै धागा ज्यूं उळझ गिया हा अर नाको नी लाधर्‌यो हो।

# ईजतदार

उणरी कुरळाट सुणीजी, जद कोई खास रात को ही नी। आभो कीं रग म जरूर हो, पण दस सू ज्यादा रो बखत को हो नी। म्हू किसन रै अठै साहित री बहस में उळझ्योडो हो। साहितकारां रै बहस री महिमा न्यारी है। एक'र जो बहस मे उळझ जाव, तो घडी री बात तो दर किनार दीन अर दुनिया सैं' की भूल जावै। बहस रो रस इज इसो है। मजो आ के बहस करणिया खुद न स सू बेसी बुद्धिजीवि समझ जद के बुद्धि रो वा सू इतरो इज लेणो देणो है क ब अखबार मे या किताबा में मे पढयोडी बात न परसग आया तोता वाळ दाई कह सकै। किसनराज कवतो हो क आज रो लेखक आगै कोनी देख, पाछान देख'र चाल इण सारू आज लेखका रा पात्र भगोडा होव। लखक पोत ई आपरी रोज री जि दगी मे झट्ट माथी नमा र राजीपो कर लेवै, इण सारू लेखक रा पात्र ई झट्ट दे सी समझौता करणिया होवै अर व नवा जुग रो नवी पीढी नै की रस्तो देखावण र काबिल को होवै नीं। लेखका री दब्बू मनोवृत्ति रोगी पीढी नै जलम देव है, आ ईज कारण है क आज रो लेखख समाज मे आदर मान कों पाव नी।

आ बात म्हने भात-भात रा दाखला सुण'र ई को जची नी। म्है कह्यो—'थे तो तोता हो, रटी-पीटी बात बोलो। आज रो नाजोगो आलोचक अण समझी री बात कर अर थे बिना गाठ री अकल खरच किया है ज्यू री ज्यू मान जावो। 'लेखक तो बापडै कमर कस राखी है। उणर सामा कितरा कितरा मोरचा खुल्योडा है अर बो जीवण रै हर मोरच माथै पूरी खमता सू दर रोज लडाई लडै अर रोज ई घायल हो'र पीडा देखै। पण लेखक कोई आप बीती तो लिखै है कोनी, बो तो जिसो ससार देखै विसो इज लिख। उणन आपरै पसवाडै-पसवाडै जिको समाज दीसै है, वो सगळो कायर है, भगोडो है। बो तो उणरा चित्र इज देसी। वो आपरै मन परमाणो दूसरो दुनिया किंयां बणा सकै? म्हैं काई कालिदास तो हां कानी,'क राजा नै फूटरी लागै इण वास्ते

अध भूखी, अध नागी आसम कला नै 'इयमधिक मनोना वलम्लेनापि त वी' क देवौ ।

किसनराज न रीस आवणी बाजब ही । मिनख किणी साच नै नी पचा सकै, जद उणनै रीस आवै । अर बहस मे तो बिना रीस कियाँ बात करण रो मजो इ को आव नी । उण तम तमा र कह्यौ—'क्यू कालीदास ने बदनाम करो हो ? थे, आज रा लखक झूठ रो जाडो लबादो ओढयोडा हो। थाँ मे न तो खरो कवण री अकल है न खरो करण री औकात ! थाँरा हाथ पग काम को करै नी, फकत् जबान इ जबान चाल । समाज न जलील करण मे, फाद में माटी नाखण में थानै मजो आवै । आज रो पाठक इतरो बेवकूफ कोनी ।

इतरा मे तो हाको सुणीज्यो । एक लुगाई रो डाटणो, दो चार धोळ पडण री आवाज अर एक गाळ 'चल तेरी मां को ।'

बहस कटगी । एक पल छानो-मानो फाड म्है दोनू ई ध्यान सू सुणण लागा वावइ मे बारै कीं रासो हो। म्हू ऊठ'र बारै निकळण लागो । किसनराज म्हारो बाहूडो पकड'र बरज्यो—'कठ जाव ! भायला, ओ सहर है । अठै तो सो क्यू यू इज चाल ।'

म्हैं उणरो हाथ झटक बाहूडो छोडायो । क्रोध सू वीफर'र कहयो, 'थारै जिसा नाजर बैठा है, जितरै अठ इयू'ज चालसी, और हो ई काई सकै ? चिटकणी उतार आडो खोल'र म्हू कमरा सू बारै आयो, अर बगला री फाटक खोल र हालतो सो वठीन चाल्यो जठा सू डाटण री आवाज आय रई ही । किसनराज कमरे सू बार तो नीसर्यो, पण बगल री फाटक ढक र फाटक री किवाडया थाम्या ऊभो म्हन निरखतो रह्यो । उणरी आख्या मे भो, चिन्ता न जू भळ तीना सू मिल्यो कोई भाव हो । आख्या ई आख्या में उण एक र फेर म्हनै बरजणो च्हायो, पण म्हैं गिनारयो ई कोनी ।

बगलै सू बीस पच्चीस पावडा अळघा रो'ज बात हैं । सडक रै दोळै इज बगलो बणाण री आसा म अटक्यो एक कमरे र पसवाड दो मोटयार एक लुगाई र दोळै पडया हा । एक उणरो हाथ मरोड र बाथ मे भरण रो कोसिस में हा अर दूजो उणरो कुरती अर सलवार अळघी करण सारू जठ-तठ जोर लगा'र कपडा न फाड रह्यो हो । मेह रा पाणी सडका माथ पड्यो हो अर लम्प पोस्ट रा लटू सायद पैला इज फाड राख्या हा । आड पाड र बगला री खिडक्या रै कांच सू छणन आवतो धीमो रोसनो न उण बगला र छखा इज रोक राखी ही जको चौटे घुप्प अ धारो हो ।

अधार नै एकल पण न अर उण पिसाची काम न देख र म्हारै सूरमापणै रो नसो एक'र तो हळको पडयो अर मन होयो क पाछो बगल मे दौड जाऊ पण ओ

जरूरी कोनी य सरीर मन रो भँणो मानै इज, सो मूडा मांय सूं ललकार नीकळी—'कुण है, रे !'

उणां चार-छ पोळ जमा'र छोरी नैं छोड दी अर इसा निरभ थका चालता म्हार कनैं आया जाणी आपरै घर सूं माय रह्या होवै। आय'र खरी मीट सूं देखता थका म्हनैं कह्यो—'क्या है रे, मादर !'

लोग भणे तो ई कैवै'क चोर रा पग काचा होवै। उणा री गाळ सुण'र तौ म्हारा पग काचा होय ग्या। म्हैं हीमत कर'र निजर ऊपर उठाई। जिण गाळ काढी ही, उणरै तन मोरी री पैंट, ऊपर रंगीन कुडतो। भरपूर डील डोल। च'रा माथ माता रा दाग अर जाडी थकी मूंछा। खीजियोड़ पाडै जि़ी उण री लाल-लाल आखांम म्हांरा कोया देख'र एक'र सो'क तो म्हारी जबान चिपगी। मनै हुयो 'क जरूर उणरी जेब मे छुरो होसी अर अबार काढ'र म्हार पेट नैं चीर देसी। पछतावो होयो'क इसी कुगत में खाली हाथ म्हूं कियां बजग्यो। बढिया तो ओ रेवै 'क बगळा रै माय जाय कोई लकडी रो घोचो हाथ में लै लू। हाथ मे हथेरण बिना अठै तो मौत परतख ऊभी दीस। धरमाळा नैं तो खबर इज मिलेला। म्हार रोवण किसनराज नैं बापडा नैं पुलिस तगडला, जकी सवाय मे। इतरै मे छोरी म्हनी मीट पडी। फाटोडी कुडती सूं उणर बोबा री बाटियां बारै दीसती ही अर चोरीजियोडी सलवार मांय सूं ऊघाडी थका साथळ झाकती ही बळपतो थकी वा दोनूं ई छोरा न बुरी तर सूं गाळा काढ रई ही अर गाबा ठीक करती ही। छोरी री इसी हालत देख'र म्हारो गवाडू जोस आप मे को रह्यो नी। खरी मीट सूं उणरै सामी ताक'र कह्यो—'कुण हो रै थे, ? उणनैं क्यूं छेडी हो ?'

डर मे एक तारीफ है, आवाज तेज हो जाव। म्हारी आवाज ई इत्ती तेज निकळी'क म्हारै खुद रै काना मे वाजण लागी। पण वो इतरी तेज आवज सूं ई डरयो कोनी, म्हा सूं ई इधकी तेज आवाज म बोल्यो—थारा बाप हां। थारी मा राड न कै क्यूं नीं मादर ,'क ' उण एक कोनी इसारो करयो। अर उणर सागै ई म्हारो गळो पकड'र कनपटी मे मारण री मुद्रा मे सीधो म्हारी छाती क्ना तक आय ग्यो। जो म्हूं दो पग लार नीं सरक जावतो तो बनाट करतो म्हार कनफडा मे पड जावतो। उण म्हारा लारो कियो। म्हार पड-पडै जितर तो सा रै सडक मार्थ एक मोटर नीकळी आडै-पाडै चौफेर फाटका रै माय ऊभा तमासो देखता चेहरा म्हन अर उण दोना न इ एक सागै दीस्या। मोटर एकर सीव तो थोडी थमती निजर आई, पण हालात सूं थ'र सट्ट परती ऊनावळी निकळगी। बगळा मे फाटका कनै खामा चितखा नैं आपरी कर-तूता देखतां देख र एक छोरै मोटर साइकल स्टाट की, दूजो म्हारै कन आयो अर म्हू

की समझू–समझू, जितरै तो कालर पकड र एक झटको दियो अर सुर में चेतायो—'अपने जीवन का बीमा करवा लेना कल तक। परसों तो साले नरक में नजर आओगे।' इतरो कह छाती मे मारते थकै एक धक्को–सो देय, अपमान भरी होणीं निजर सू म्हनै देख र रवाने होयो। म्हनै थर–थरी चढ्यो। नबज तेजी सू चालण ढूकी। काळजो धडक धडक करतो इसो धडकण लागो'क उणरी आवाज म्हनै खुद नै सुणीजण लागी। मोटर साइकल चलाय फर करता बै बेफिक्री सू उडग्या।

छोरी आपरै कमरे मे बड'र किवाड बन्द कर लिया हा अर म्हे की सोचू जिण पला खासा भला आदमी आपो आप र बगलां री फाटका सू नीसर'र म्हारै कन आयग्या। च्यारों–च्यारी भात रा च्यारा न्यारा सुर म्हारै काना म ऊपरो ऊपर पड—

—'आज तो थे कमाल कर दियो। म्हे तो माय नै जीमता हा। की सुणी-ज्यो इ कोनी। चळ करण नैं बारै आया, जद आ गुण्डा न फटफटिय पर जाता देख्या। आपनै थोडी सी क फेर हीमत करणी ही। साळां नै पकड र पुलिस र हवालै करणा हा, जद मजो आवतो।'

—'बहादुर आदमी है, सा! बडो हीमत वाळा। इसा आदमी मोहल्ले री स्यान होवै। आप किसै बगळ मे विराजो?

—'म्हू तो रेडियो सुणतो हो म्हनै तो ठा ई को पड्यो नी। जो म्हन ठा पड जावतो, ता साळा नै मार मार र मुर्गा बणा देवतो। यू कोरा हाक किया सू काई होव है सा?'

— अजी आपरो तो बार आवणो ई काफी हो। साळा सक्ल देख'र हाट जावता। आपनै कुण कोनी जाणै सा?'

— आ छोरी कुण है? साळी कोई बदमास राड दीसै।

—'इसी छोरया सू मोहल्ला बदनाम होवै। छोरा यारा बीगडै। आपणा टाबर इसा हाका–बो अर फीटी-फीटी गाळया सुणै, जद वां पर काई असर होवै।

—'रुळियार राड है सा! इणनै तो मोहल्ला सू निकळवावणी चइजै।

एक जणो म्हारै बिल्कुल नजदीक आय आपरी हथाळी पर आगळी मार'र पूछ्यो—माफ करजो मोहल्ले मे तो दूसरा ई लोग रव है आपन इज इतरी उत्तेजना किया आई? आपर आपस म की टम्म तो कोनी।

सुण'र जाणो करेन्ट लागो होव। इतरी जोरदार गैस चढी क मन में आयो,

साट । रं मू ढा माथ खाच खाच'र जूता मारू । कान इ सिळगण लागा । पण म्हू चुप इज रह्यो । की बोल्यो कोनी । एक अजीब घ्रणा अर भौ रं सागं म्हनं ओ सहर ब्रह्म राक्षस जिसो दीसण लागो ।

हाल भांत भात री बोल्या म्हनं चम गैलो बणावण रो काम करती ही—

– असल में आप अठा रा दीसो कोनी, कठै रवो हो ?'

—'ओह ! अजाण आदमी नं यू मदमारका रं माळा में हाथ नी घालणो चइजे ।

— थे नवा हो, जको जाणो कोनी क ऐ कुण हैं । बाकी आन बरजण री होमत कुण कर सक ? साळा मिनख री गाबड बाढ'र गटर मे फेंकता एक मिनट ई कोनी लगावै ।'

— अरे भाई जी, बो रामनिवास बाग का कतल होयो हो नीं, बो इणां इज कियो हो । इयू इज किणी छोरी न स्कूटर माथ जोरामादी लै जाय रह्या हा । बो पत्रकार इणा ज्यू इज भलाई करण चाल्यो हो । आ नैं बैंता नैं बरज दियो । उणनै बापडा नैं काई ठा हो ,क आज जीवण रो छेलो दिन है ।'

—'धमकी तो आ नैं ई दे'र ग्या हा, देखो, मार्गं काई कर हे ? पण आप घबराओ मती, आप तो पुलिस में रिपोट करा जी ।'

—'रिपोट किया काई होसी ? मजेदारी इणमें है 'क दिन ऊगतां पलां ई बोरिया बिस्तर लं र आपर गाव पधारो । पुलिस मे रिपोट करोला, जद पुलिस पैला तो था नै इज वठै वठा देसी, रगडसी, सतरै बाता सतर भात सू पूछसी, अर जो तहकीकात मे अठै आप ई गया, तो ऐ लगळा भला मिनख आपो आप र बगळा में इयू इज बन्द हो जासी, ज्यू पाच मिनट पला ब द हा । आ स भला मिनखा री बस्ती है अठ किणन आप वाळ दाई पराई पन्चायती मे पड'र कोट कचेरिया मे भटकण री फुरसत है ?

आ बात सुण'र डर सू म्हारो चेहरो पाकै पात ज्यू पीळो पडग्यो ?

—यू डरावो मती भला आदमी, थोडी हीमत बवबावो जी ! पुलिस मे रिपोट नी करा जद इज तो देस मे इतगी गुण्डागर्दी वधै । आप मत घबराओ जी मरणो एक बार है मार देसी, तो झंझट मिटसी । इसो संसार मे सुख इज काई है, 'क मरण सू डरां ? आप तो पुलिस मे रिपोट करो ।

— आ छोरी राड रुळियार है । एक सुर पाछो दूजो राग माथ आयो— आ मार पीट पी सा-टका न ल'र होई होसी, बाकी झगड री काई बात ? आ तो अठ चलतो चलाव है ।

मुसीबत में पड्योड़ी एकली छोरी माथ यो ज्ळम लादणो म्हन पचियो कोनी । काळजा में भ्रा बात इसी चुभी जाणें बीछू री डंक । तिरमळ लागी । ऊकळतै कह्यो—'आप किणी रा ईजत नीं बचा सको, तो कोई बात कोनी, पण बापड़ी

प्रबला माथ इसो कोफो इलजाम लगावणो ठीक कोनी ।'

— थे थयू चिड़ो, थांर किसी बैन लागै ?'

—'इसा ई ऐ दीसैं है'—एक मूंडो चाव चाव न बोल्यो—'पवार तो ??? इत्ता जणा आपरै भोड़ु हा, जद गळो पकड़ र ई छोड़ दिया, नींतर कादो काढ देवता, कादो ।'

— थां रो दास कोनी, गवार है, गवार ! आप बडा आदमी हा, थां नैं थयू मूंढ लगावो ?' एक आदमी बांरै बरजतां थकां कह्यो ।

दूसरो भोंटयार सो दीसतो छोरो म्हन घड़ी घड़ी उकसावतो हो—'आप तो पुलिस ।'

पुलिस में गयां काई होवै ? बीच में ई कोई तीसरो समझदार भर सैण होवण री बोली मे बोल्यो—'चोर कुत्ता सब एक होवै । चोर न गुण्डा तो बापडा रात रा इज चोरी नैं गुण्डागर्दी करै, पण इणारी तो गु डागरदी चोबीसो घण्टा चालती रैवे ।' 'कीं ई होवो, आप बच नैं रइजो । इण में इज समझदारी है । पुलिस तो बापड़ी कांई चीज है, आ री पोंच घणी ऊंची होवै । नित्त नवो माल आगैं पुगावणो इज थां रो धन्धो होवै । इणां री सुणता भ्रपाणीं कुण सुण ? आया धक्कै रो'र आख्या गमावण मे काई सार ? हां, जो कठई इणा रै धन मे पड़ग्या, तो मार्‌या नीं, तो हाथ-पग तो तोड़ इज नाखैला । पछ थो मत कजो'क किणी समझणैं मिनख म्हनै चेतायो कोनी ।'

जितरै मै तो व गया हा, उणीज रस्तै सु एक फटफटियो आवतो दीस्यो । फटफटिया री आवाज सु डर'र सैं मिनख दबादब हाट र बल्दी सु आपो आप रा बगला में बड़ग्या । म्हारो ई काळजो मूंडै आय ग्यो । वैं आपरैं साथियां न लै'र आया दीसै ! अब तो मरणो है इज, पछ काई डर ! म्हूं खडो होर फटफटिया कानी देखण ढूको । फटफटियै पर वैं कोनी, कोई दूसरा ई हा । आपरै रस्तै नीकळ ग्या । म्हनैं थोडी तसल्लो हुई ।

बादळा पाछा बरसण लाग ग्या हा । म्हू किसनराज रै घर कांनी टुरयो। काळजै री धड़क हाल तेज ही, पण म्हू किसनराज सामी यू अकड़'र जावणो चावतो हो जाण कोई जोधो जग जीत'र आयो होव ।

किसनराज हाल तक दरवाजै इज ऊमो हो । उण न दख र म्हैं मुळकण री कोसीस करी । कह्यो— साळा म्हाट गया । छोरी री ईजत रै गी ।'

किसनराज रो मू डो गँमराई सू लम्बो होय ग्यो । बेरुखी सू बोल्यो— 'ओ तो ठीक होयो क कार आयगी अर म्हाट गया, नीतर आपरो तो कतल हो जावतो, नो भी नीं, म्हानै अठ काम ध धो छोड'र कोरट कचेरिया मे रोतो फिरणो पडतो । अठै टाबरा नै पाळा क कचेरिया मे रुळता फिरा ?

कवतां कवता उणा रो मू डो कडवास सू भरीज ग्यो ।

म्हारै हिवडा मे उणां रा आखर तीर होय ज्यू ऊतरग्या । उछाह र भो, स बयू खतम होय ग्यो । एक अजीब उत्तेजना सू भरीज र म्हैं किसनराज र च'रा सामी जम'र देख्यो । पथराई थकी किसनराज री आख्या टकटकी लगा'र सामली सडक नै देखै हो । म्हारै सामीं देख्या बिना ई उण को रुक नैं कह्यो—'आपरो काई ! आप तो अठै दो दिन सारू पधार्‌या हो, गुण्डा सागै गुण्डा बण जावो, तो पोसा जावै । पण म्हानै तो अठ ई रवणो है, ईजतदार मिनख हा, घर मे लुगाई है, मोटयार छोर्‌यां है, ऐ गुण्डा कदई कठई मामूली सी क खुराफात कर देव, तो म्हारी काई ईजत रैवै ?'

म्हैं म्हार कसूर रै भार सू गाबड़ नीची कर दी, घर म्हारी थली सभाळण लागो ।

@